द्विरागमन

(उपन्यास)

हरिमोहन झा

द्विरागमन

(उपन्यास)

लेखक : हरिमोहन झा

1. मिस बिजलीक भाषण

विश्वविद्यालयक सभा-भवन आइ बिजलीक प्रकाश सँ जगमगा रहल अछि। कारण जे भिन्न-भिन्न विद्यालयक छात्र-छात्रागण विवाद प्रतियोगिता मे भाग लेबक हेतु उपस्थित भेल छथि। एक प्रतिष्ठित विद्वान सभापतिक उच्च स्थान पर आसीन छथि। विवादक विषय थिक -

'नारीक कार्यक्षेत्र पुरुष सँ भिन्न होबक चाही अथबा एक समान ?'

सभा-भवनक एक प्रमुख अंश महिलावृन्दक हेतु सुरक्षित अछि। ओहि मे रंग-विरंगक फैशन सँ सुसज्जित युवतीगण वातावरण मे रंगीन मादकता भरि रहल छथि। तितलीक पाँखि मे जतेक रंग होइ छैक से सभ एहि ठाम सुकुमार नवयौवनाक परिधान बनि अपन-अपन सोभा कैं धन्य कय रहल अछि। अज्ञातयौवना , ज्ञातयौवना, मुग्धा, मध्या, प्रौढा प्रभृति नायिका भेदक लक्षण रटनिहार विद्यार्थी कैं एतय एक्के ठाम प्रायः समस्त उदाहरण साकार रूप मे भेटि जइतैन्ह।

निर्दिष्ट समय पर विवाद प्रारम्भ भेल। सर्वप्रथम एक क्षीणकाय चश्माधारी नवयुवक मंच पर आबि भाषण करय लगलाह। हुनका वक्तव्यक आशय नीचा देल जाइछ.......

"पुरुष ओ नारी कऽ कार्यक्षेत्र एक नहि भऽ सकैछ। दूहू मे प्रकृतिगत विभिन्नता अछि। पुरुषक रचना कठोर तत्व सँ भेल छैन्ह ; नारीक रचना कोमल उपादान सँ। पुरुष मे बल और साहसक अधिकता होइ छैन्ह , त नारी मे प्रेम तथा त्यागक अधिकता होइ छैन्ह। पुरुष मे मस्तिष्क प्रधान होइ छैन्ह ; नारी मे हृदय। एक उद्यमक अवतार होइ छथि त दोसर सहनशीलताक मूर्त्ति। एक जीवन-युद्धक सैनिक छथि, दोसर शान्तिक अधिष्ठात्री देवी।

पुरुष तथा नारीक एहि नैसर्गिक विभिन्नताक कारण अनादि काल सँ यैह व्यवस्था आबि रहल अछि जे पुरुष पराक्रम द्वारा बाहर सँ प्राप्त कय आनथि ; नारी घर मे यत्नपूर्वक ओकर संरक्षण करथि। पुरुषक सोभा छैन्ह बलिष्ठ भुजा , नारीक सोभा छैन्ह स्नेहपूर्ण हृदय। पुरुष सबल वृक्ष जकाँ स्वतंत्र रूपें अपना पैर पर ठाढ़ रहै छथि ; नारी लताक समान अबला तथा आश्रयापेक्षिणी होइ छथि।

"नारी गृहक लक्ष्मी थिकीह। हुनक कार्यक्षेत्र छैन्ह अपन घर। अपना घरक भीतर ओ स्नेहक गृहस्थी बसबै छथि। सरसता और माधुर्यक वर्षण कय ओ गृहक अभ्यंतर आनन्द-मन्दाकिनी

प्रवाहित करैत रहैत छथि। जीवन-संग्रामक विकट संघर्ष सँ श्रान्त पुरुष ओहि मे अवगाहन कय शीतल तथा सन्तापरहित भय जाइत छथि।

"नारी समग्र जीवन परिवार के स्नेहसूत्र मे आवद्ध कैने रहै छथि। एहि मे हुनक चित्त केन्द्रीभूत भेल रहै छैन्ह। यदि नारी घर सँ बाहर भय पुरुष जकाँ सार्वजनिक कार्यक्षेत्र में अवतीर्ण होइतीह त आश्रमक श्रृंखला नष्ट भऽ जाएत। पारिवारिक जीवन छिन्न-भिन्न भऽ जाएत। सम्प्रति नारी भार्या तथा माता रूप मे घरक भीतर रहि गृह-प्रबन्ध ओ शिशु-पालन मे निरत रहै छथि। यदि ओ लोकनि घर छोड़ि जीविकोपार्जन हेतु बहराथि वा अपन बच्चा कैं छोड़ि सार्वजनिक कार्य में संलग्न रहथि त परिवार नष्ट भऽ जाएत। तखन स्त्री-पुरुष कैं भोजनक हेतु होटलक शरण लेबय पड़तैन्ह और राष्टक सुकुमार सन्तान कैं बोतलक दूध पर सन्तोष करय पड़तैन्ह। ई व्यवस्था समाजक हेतु कल्याणकर नहि।

"एहि विषय मे पाश्चात्य आदर्श हमरा लोकनिक हेतु अनुकरणीय नहि। यूरोप-अमेरिका मे जहिया सँ स्त्रीगण पुरुष जकाँ प्रत्येक क्षेत्र मे भाग लेबय लगलीह अछि तहिया सँ पारिवारिक जीवन उच्छृखल होबय लागि गेल छैन्ह। साहेब लोकक कारखाना मे मैनेजर छथि ; मेम साहिबा बनारस क आफीस मे टाइपिस्टक काज करै छथि। दूहूक ड्युटी त बाहरे रहै छैन्ह। घरक कार्यभार के उठाबौ ? परिणामतः आश्रमक कार्यभार खानसामा ओ बाबर्ची पर पड़ैत छैन्ह। साहेब जखन ड्यूटी पर सँ अबै छथि त घर मे मुस्कुराइत गृहिणीक स्थान पर एक डेरायल खानसामा भेटै छैन्ह। गृहस्थाश्रमक स्वच्छ शीतल वारि क अभाव मे ओ क्लबक मदिरा सँ अपन तृषा शान्त करै छथि। ओम्हर मेम साहिबा जखन अपना आफिस सँ अबैत छथि त वच्चाक स्थान मे कुकुर कैं कोर लय ओहि भाग्यवान चतुष्पद कैं अपन सरस स्नेहप्रसाद सँ अभिषिक्त करैत नाश्तापानी करबैत छथिन्ह। 'घरक रानी' क स्थान मे ओ 'क्लबक परी' बनै छथि।

जाहि समय लंका मे साहेबक माथ दुखाइत रहतैन्ह ताहि समय बनारस मे मेम पियानो पर बॉल डान्स करैत रहतीह। एहन दाम्पत्य सम्बन्ध सँ कोन फल ? परिणामतः स्नेहसूत्र दिनानुदिन शिथिल पड़ैत-पड़ैत अन्त मे प्रायः सम्बन्ध-विच्छेदो भऽ जाइत छैन्ह। पाश्चात्यो देशक अनुभवी विद्वान लोकनिक ध्यान आब एहि दिश आकृष्ट भऽ रहल छैन्ह।

"एहि विषय मे हमरा लोकनिक भारतीय आदर्श सर्वश्रेष्ठ थिक। एतय गृहिणी पद कैं जे मर्यादा देल गेल छैक से प्रायः कोनो देश मे नहि। भारतीय नारी यथार्थतः 'गृहिणी' नाम कैं सार्थक करै छथि। हुनक आफिस , क्लब, सभटा अपना घरक अन्तर्गते अबस्थित रहै छैन्ह। गृहक सम्पूर्ण दायित्व अपना ऊपर रहै छैन्ह। गृहक सम्पूर्ण दायित्व अपना ऊपर लय ओ पुरुष कै गृहक चिन्ता सँ उन्मुक्त कय जीवन संग्रामक हेतु स्वतंत्र छोरि दैत छथिन्ह।

'ई कहब भ्रम थिक जे भारतीय नारी परतंत्रदासी जकाँ जीवन व्यतीत करैत छथि। जे अपना स्वामी आ कि 'पर' कऽ कऽ बुझत से ने अपना कैं पराधीन कहत। भारतीय नारी त अपना पतिक कैं प्राणों सॅं बढ़ि बुझैत छथि। तखन ओ अपना कैं पराधीन किऐक कहथीन ? यूरोपक नारी अधिकारक हेतु लरै छैत। किन्तु भारतीय नारी कैं केवल अपना धर्म -पालन टा सॅं प्रयोजन रहैत छैन्ह। आधुनिक शिक्षा सॅं प्रभावित महिला 'लेबाक' हेतु ललायित रहै छथि , प्राचीन आदर्शक अनुयायिनी गृहिणी केवल देबाक हाल जनि छथि। एक स्वार्थ ओ तृष्णाक मुर्त्ति थिकीह; दोसर त्याग ओ बलिदानक। सीता सावित्री सदृश पत्नी सेवा तथा प्रेमक बलैं ओ उच्चतम अधिकार प्राप्त कऽ चुकल छथि जे कोनो स्त्री कैं लरला सॅं नहि भेटि सकै छैन्ह।

"भारतीय नारी कैं दासी बुझब मूर्खता थिक। ओ दासी, मंत्री, रानी, सभ एके संग होई छथि।

'कार्येषु दासी, करणेषु मन्त्री, भोज्येषु माता, शयनेषु रम्भा।'

'ओ यथार्थतः गृह-स्वामिनी होई छथि। अपन त्याग और प्रेमक बलें स्वामीक हृदय पर हुनक एकछत्र सम्राज्य रहैत छैन्ह। व्यक्तिगत स्वार्थक भावना हुनका मोन मे एको क्षण उदित नहि होई छैन्ह। विनु मङ्गने हुनका जे महत्वपूर्ण गृहणी पद प्राप्त भऽ जाइ छैन्ह से समानाधिकारक आन्दोलन ठानयवाली महिला कैं अलभ्य छैन्ह।

"नारीक मर्यादा गृहाभ्यन्तरे छैन्ह। पुरुषक प्रतियोगिता मे बहरैन्हे हुनक अपने प्रतिष्ठा-हानि हैतैन्ह। कारण जे स्त्री स्वभावतः अबला होइ छथि। जतय शारिरीक बलक काज छैक ततय कोनो क्षेत्र में ओ पुरुषक समकक्ष ओ ठाढ़ नहि भऽ सकै छथि। वल्कि पुरुषक सहायता बिना ओ अपना आत्मरक्षा करबा में प्रायः असमर्थे रहतीह। ओ सर्वदा सॅं पुरुष पर आश्रित रहैत आइलि छथि और प्रायः सदैव रहतीह। एही मे हुनक कल्याणों छैन्ह। यदि कोमल मृणाल-नलिका लोह कऽ देखाउस कय हथौराक चोट पर जाय त की परिणाम हैतैक ? ओकर पत्तर त नहि बनतैक प्रत्युत सभटा लुगदी बाहर भऽ जैतैक। लाखो फूलक माला मिलि कय एक मजबूत सिक्कर काज नहि क सकै अछि। धेनु सॅं बड़द कऽ काज नहि लेल जा सकै छैक। दूहूक काज भिन्न-भिन्न छैक। अपना-अपना स्थान में दूहू उपयुक्त अछि। स्थानभ्रष्ट भेने दूहूक उपयोगिता नष्ट।

"यदि नारी कैं पुरुषोचित्त अधिकार प्रदानों कैल जाइन्ह त प्राकृतिक नियम नहि बदलि सकैत छैन्ह। नारी-शरीरक रचना गर्भाधान , सन्तानोत्पादन तथा स्तन्यपानक, अभिप्राय सॅं कैल गेल छैन्ह लाखो प्रयत्न कैन्हे स्त्री एहि भार सॅं निस्तार नहीं भऽ सकैत छथि। ई श्रृष्टि कर्ता क विधान बुझू अथबा प्रकृतिक पक्षपात , नारी घरेक हेतू निर्मित भेल छथि। कार्य क्षेत्रक ई सनातन विभाग जे अटल प्रकृति द्वारा निर्धारित भेल अछि से मनुख कऽ हस्तक्षेप सॅं परिवर्तित नहिं

भऽ सकैत अछि। प्रकृत्ति अनुकूलें चलबा में बुद्धि मत्ता छैक। प्रतिकूल चलनें लोक नष्ट भऽ जाइत अछि।

अतएब शिक्षित भारतीय महिला समाज कैं पश्चात्य देशक अंधानुकरण नहि कय अपन वास्तविक कार्य क्षेत्र कैं अपनाबक चाहिऐन्ह। पफ पाउडर , लिपिस्टिक और ऊँच एड़ीक शू , स्वच्छंद बिहारिणी अपसरा क हेतु अमोघ शस्त्र भऽ सकैत छैन्ह , किन्तु आश्रम संचालिका गृहणीक हेतु ओ आवश्यक उपकरण नहि।

हमरा लोकनिक स्त्रीगण रम्भा , उर्वशी बनय चाहैथ छथि वा सीता - सावित्री ? भोग्या नारीक मार्ग भिन्न छैन्ह ; 'पुज्या' नारीक मार्ग भिन्न शारीरिक सुख मे बाधा होयबाक कारणे तालाक देमयवाली मेम ओहि स्वर्गीय देवीक आत्मा कैं नहि पाबि सकै छथि जे अपना जीवन संगीक चिता पर चढ़ि सति भऽ जाइ छथि।

सा भार्याया गृहे दक्षा सा भार्याया प्रजावती। सा भार्याया पतिप्राणा सा भार्याया पतिव्रता।।

जाहि दिन भारतीय गृहणीक ई उज्जव आदर्श सम्पूर्ण संसार में प्रचलीत भऽ जायत ताहि दिन पृथ्वी स्वर्ग बनि जायत।

एहि प्रकारें पूर्व पक्ष समाप्त भेल। तदनंतर एम० ए० क्लासक एक तेजस्वीनी छात्रा मिस बिजली बोस उत्तर पक्ष करक हेतु ठाढ़ि भेलीह। हुनका उठतहिं सम्पूर्ण सभा भवन करतल ध्वनिं सॅं गूँजि उठल। मिस बिजली प्रतिपक्षौ क एक-एक तर्क कैं युक्ति द्वारा खंडण करैत अपना पक्षक मंडन करय लगलीह। हुनक ओजस्वी भाषण , धारा प्रवाह वाक्यावली तथा निर्भीक विचार शैली सॅं समस्त सभा चकित रहि गेलै।

मिस बिजलीक भाषणक सारांश नीचा देल जाइछ-

पूर्व वक्ता महोदय नारीत्वक संकुचित व्याख्या द्वारा समस्त नारी जातीक जे अपमान कैलन्हि अछि ताहि सॅं प्रत्येक शिक्षित महिलाक मर्मस्थल पर चोट पड़ब स्वाभाविक थीक। हुनक विचार-सरणी परम्परागत मानसिक संकीर्णता सॅं ओत प्रोत छैन्ह। हुनका बूझक चाहिऐन्ह जे नवीन युगक नारी "दासी" शब्द कैं घोर कलंक कऽ कऽ बुझैत छथि। हुनक एहि सॅं अधिक अपमान दोसर कोनो शब्द सॅं नहि भऽ सकैत छैन्ह। जाहि युग में स्त्री पुरुष कैं "नाथ" और अपना कैं दासी कहबा में गौरब बोध करै छलीह से अन्धकार युग मानब सभ्यताक विकास होइतहि विलीन भऽ गेल बीसम शताब्दीक मध्य महिला क सामने ओहि बरबर दुर्गक गुलामी-स्तव कैनाय अक्षम्य धृष्टता थीक।

" आधुनिक जागृत नारी अपन जन्मसिद्ध स्वतंत्रताक अधिकार प्राप्त करक हेतु कटिबद्ध छथि। पुरुष निर्मित खला कै कड़ा तोरी क दूर फेकैक ओ हुंकार कऽ रहल छैथि। एहि निमित्त ओ भीषण सॅं भीषण क्रांति करक हेतु तैयार छथि।

"अनेकानेक शताब्दी सॅं स्वार्थी पुरुष-समाज, स्त्री-समाजक शारिरीक निर्बलता तथा मानसिक अंधकार सॅं अनुचित लाभ उठबैत अपन अरामक हेतु हुनका दासी बना कऽ रखने अछि। हजारों वर्ष सॅं मूर्ख स्त्री जाति पुरुषक चेरी बनि गुलामक जीवन व्यतीत करैत रहलीह।

स्वार्थी पुरुष -समाज नाना प्रकारक छल बल सॅं स्त्री कैं नथने रहल। सब कानून , वेद, पुराण, स्मृति, धर्मशास्त्र,-पुरुषेक हाथ मे। जेहन-जेहन नियम मोन भेलै बनबैत गेल। मूर्खा स्त्री भेड़ी-बकरी जकाँ ओही कानून क अपन धर्म मानय लगली।

स्मृति कार कहलथिन्ह - "न स्त्री शुद्रो वेदम धीयताम्"। अर्थात स्त्री और शुद्र विद्या नै पढ़य। कोना कहितथिन्ह जे पढौ़ तखन शुद्र खबासी कोना कैरतैन ? स्त्री भैर जन्म चूल्ही कोना फुकितैन्ह? मुर्खा स्त्री बुझिलन्हि जे हम त शुद्रक समान छी , विद्या पढ़बाक हमरा कोन अधिकार? बस, समस्त स्त्री जातिक माथ पर सर्वदा कऽ हेतु मूर्खताक ठप्पा ठोका गेलैन्ह ओ भरि जन्म अज्ञानक अंधकार में टोइया मारैत रहि गेलीह। पुरुषक जीवैत भरि ओकर दासी और ओकरा मुइला पर ओकरे संग चिता में भस्म। जन्म सॅं मृत्यु पर्यन्त कहियो हुनका गुलामीक पट्टा सॅं छुट्कारा नहि। हैरे स्वार्थी और निष्ठूर पुरुष-समाज।

यदि स्त्री मरि जाथि तॅं पुरुष पुनर्विवाह कय पुनः ओहिना रंग-रभस करथि। किन्तु यदि पुरुष मरि जाय त स्त्री आमरण वैभव्यक दंड भोगौ। जीवनक समस्त आमोद -प्रमोदक द्वार ओकरा हेतु बन्द। ओ पान नहि खाय , रंगीन साड़ी नहि पहिरय। ओकरा माछ खैबाक अधिकार नहि। तेल-फुलेल लगैबाक आज्ञा नहि। पुरुषक जीवितो मे दुःख , पुरुषक मुइलो मे दुःख। स्त्री कैं कहियो उद्धार नहि!

"स्त्री कैं जन्महिं सॅं सिखाओल गेलैन्ह जे अहाँ लोकनि आँखि मुनि क पुरुषक सेवा करु यैह टा एक मात्र धर्म थीक। एहि में जीवनक चरम सार्थकता बुझू।

'एकै धर्म एक व्रत नेमा। काय वचन मन पति पद प्रेमा।'

कर्ता, हर्ता, विधाता सभटा पुरुषे कैं बुझू। किऐक जे "पतिरेको गुरुः स्त्रीणाम्" यदि पुरुष कैं सन्तुष्ट राखि सकलहुँ तखन त अहाँ सन उत्तम केओ नहि और यदि से नहि त अहाँ सन अधम केओ नहि।

'न सा भार्येति वक्तव्या यस्या भर्ता न तुष्यति। तुष्टं भर्त्तरि नारीणां संतुष्टा सर्व देवताः ।'

पुरुष पाप करौ वा पुण्य, घर रहौ वा बाहर, अहाँ आखि मूनि कै ओकर पुजा करु ताहि सँ सब जग जीत लेब।

'नगरस्थौ वनस्थौ वा पापोवा यदि वा शुचिः। यासां स्त्रीणां प्रियौ भर्त्ता तासां लोका महोदयाः।'

से यदि करब त लाठीक हाथ सँ स्वर्ग पहुँच जायब। बल्कि अहींक धर्मे स्वामीयों पार उतरि जेता।

'व्यालग्राही यथा व्यालं बलादुद्धरते विलात्। तद्वद्धर्त्तारमादाय स्वर्गेलोके महीयते।'

स्वर्गक फाटक टा नहिं खुजत बल्कि देह में जतेक करोड़ रोंआँ अछि ततेक करोड़ वर्ष धरि स्वर्गक सुखो लुटैत रहब।

'तिंस्त्रः कोट्योऽर्धकोटॊ च यानि लोभानि मानवे। तावत्कालं वसेत स्वर्गे भर्त्तारं यानुगच्छति।'

"अतएव पुरुषक जीवने जीवू, पुरुषक मुइने मरू। परुषक संग जरि कय सति होएब त सैकड़ो पाप कैने रहलो पर सद्यः सुर लोकक पासपोर्ट भेटि जायत।

'चितौ परिष्वज्य विचेतनं पतिं प्रिया हि मुञ्चति देहमात्मनः। कृत्वापि पापं शतसंख्यमप्यसौ पतिं गृहित्वा सुरलोकमाप्नुयात्।'

और कोनो तरहें आहाँ क गति नहिं। "सहज अपावन नारी पति सेवत सुभगति लहई।"

"तैं जागल में अपना पुरुषक सेवा करू , सुतलो में अपने पुरुषक स्वप्न देखू।" यदि से नहिं करब त -

"रौरव नरक कल्प शत पड़ई।'

तुलसीदासक कथनानुसार करोड़ो वर्ष धरि रौरव नरक में पड़ल कष्ट भोगैत रहब।

पुरुष केहनो आन्हर, बहिर, बूढ, बकलेल हो, कतबो दुख अहाँ कैं देबय तथापि अहाँ एक शब्द नहि बाजू, नहि त मूइलो पर यमदूत घीसिया कऽ मारत।

'वृद्ध रोग वस जड़ धन हीना अन्ध बधिर क्रोधी अति दीना ऐसेहु पतिकर किय अपमाना नारी पाव यमपुर दुःख नाना।'

पुरुष कतबो डाँटय, मारय, लाल-लाल आँखि करय, तथापि अहाँ कानू नहि, बल्कि पुरुषक प्रसन्नार्थ हँसिते रहू! यैह अहाँक धर्म थीक। तखन स्वर्ग भेटत।

"पुरुषाण्यपि या प्रोक्त दृष्टा च क्रोध चक्षुषा सुप्रसन्नमुखी भर्तुः सा नारी धर्म भागिनी।"

एतबे नहि। पुरुष हुनका एना क परतारै लगलैन्ह जे 'तों स्वाधीन रहऽ योग्य नहिं छह। तोहर जन्मे एहि हेतु भेल छ। जे बाल्यावस्था सॅं लऽ कऽ वृद्धावस्था पर्यन्त पराधीन भेल रहह। तों कहियो बालिग नहि भै सकैत छह।

"पिता रक्षति कौमारे, भर्ता रक्षति यौवने। रक्षति स्थविरे पुत्रः, न स्त्री स्वातन्त्र्यमर्हति।"

धर्म क नाम पर तेहन-तेहन अत्याचार स्त्री पर केल गेल छैन्ह। जकर वर्णन कैने पोथा तैयार भऽ जाएत। स्त्री कैं सोमवारी व्रत कहि कऽ गाछक चारू कात एक से आठि वेरि कोल्हुआपेरान कराओल गेलैन्ह । 'मधुश्रावणी' कहि कऽ दीपक टेमी सॅं हाथ-पैर दागल गेलैन्ह। 'निर्जला एकादशी' कहि कऽ प्रचण्ड गर्मी मे कण्ठ सुखाओल गेलैन्ह। 'हरितारिका व्रत' कहि कऽ भूख , पियास, निन्द, सभ सॅं हड़ताल कराओल गैलेन्ह। ताहि पर पोंगापन्थी पुराणक परतारनाइ त देखू।

"अन्नाहारात शूकरी स्यात् फलभक्षेण मर्कटी। जलौका जलपानेन क्षीराहारेण सर्पिणी। मांसाहाराद्भवेत व्याघ्री, मार्जारी दधिभक्षनात्। पिपीलिका तु मिष्ठान्नात् मक्षिका सर्वभक्षनात्। निद्रावशेनाजगरी कुक्कुटी पतिवञ्चनात्।"

'अर्थात जौं स्त्री तीज मे अन्न खा लेथि त सुगरनी भऽ कऽ जन्म होइन्ह और फल खा लेथि त बनरिनी भऽ कऽ। पानि पीबथि त जोंक होथि और दूध पिबथि त साँपिन मिठाइ खाथि त चुट्टी-पिपड़ी होथि और किछु मुँह में देथि त माछि होथि जौं सूति रहतीह त जन्मान्तर में अजगर होइतीह अपना स्वामी सॅं फूसि बजतीह त जन्मान्तर मे मुर्गी होइतीह।

एहि तरहें स्वर्गक लोभ तथा नरकक भय देखाकय पुरुष स्त्री कैं कोन - कोन नाच नहि नचौलक। बुद्धविहीना नारी पुरुषक प्रताड़न-वाक्य मे आबि कठपुतरी जकाँ नाचय लगलीह। ओ अपना कैं पुरुषक हाथें बेचि देलन पुरुष हुनका माँग में गुलामीक टीका लगा देलकैन्ह और कहलकैन्ह जे यैह तोहर सौभाग्यसिंदूर छह । अज्ञानी नारी ई नहि बुझलनि जे ई लाल सिंदूर नहि, प्रत्युत स्वाधीनताक हत्या जनित लाल रक्त थीक। ओ अफ्रिकाक हबशी गुलाम जकाँ गुलामीक चिन्ह कैं गर्व सॅं मस्तक पर धारण करय लगलीह।

स्त्रीक हेतु त एहन फाँस रचल गेल और पुरुषक हेतु कोन नीति गढल गेल से देखू। देखब यदि कदाचित काल-क्रमे स्त्री विद्या-बुद्धि मे बढ़ि जायत त अपना हाथ सॅं निकसि जाएत। तैं एहन उपाय करु जे स्त्री विद्या पढ़बे नहिं करय। 'न रहय बाँस न बाजय बाँसुरी। ' बस, फतबा दऽ देल गेल। "न स्त्री शूद्रौ वेदमधीयताम्। " एहि तरहक अन्यायपूर्ण नियम बना पुरुष-समाज स्त्री-जातिक मानसिक नेत्र पर सर्वदा कऽ हेतु टप्पर बान्हि देलकैन्ह।

पुरुष कैं प्रारम्भहि सँ शिक्षा देलगेलैक -'छल-वल सँ जेना हो, तेना स्त्री कैं अपना अधीन रखने रहब। विद्यापढ़ने ई होशियार भऽ जायत तैं एकरा पढ़ नहि देब। संसार देखने एकरा अनुभव भऽ जैतैक, तैं एकरा पर्दाक चहारदीवारी में बंद कैंने रहब। देखब , एकरा बाहरि हाबा नहि लागय पबैक स्वतंत्र भऽ कऽ ई कहियो घूमय नहि पाबय। और एहन करू जे अपना पैर पर ई ठाढ़ नहि भऽ सकय। उपार्जन करबाक शक्ति एकरा मे आबि जेतैक त अपना मुठ्ठी मे नहि रहत। तैं एहन करू जे घरक काज सँ एकरा कौखनि छुट्टिये नहि होइक। हम जे आनि क दियैक सैह खाय, हम जे कीनि कै आनि दियैक सैह पहिरय हम जतय लऽ जैयैक तत्तहि जाय। बस,किछु दिन मे ई स्वयं पंगु बनि जाएत। और एहि तरहें अकर्मण्य भय ई सर्वदा पुरुषक मुखापेक्षणी बनल रहत। फेर ई जा कतय सकति?

पुरुष-रचित एहि षडयंत्र में फँसि बेचारी स्त्री शारीरिक , मानसिक और आर्थिक दासताक जिंजिर में बन्हा गेलीह। हुनक स्वतंत्र व्यक्तित्व तथा आत्मगौरव नष्ट भऽ गेलैन्ह।

स्त्री-जाति पर एतेक अत्याचार कैलो पर जखन धृष्ट पुरुष-समाज कैं संतोष नहि भेलैक तखन ओ लागल नारी-निन्दा पुराण गढ़य। स्त्री-जाति कैं नीच , कलंकित और निन्दनीय सिद्ध करवाक हेतु एहन-एहन वाक्य गढ़ल गेल जे घृणित प्रचारक निकृष्टतम उदाहरण कहल जा सकै अछि। किछु बानगी लियऽ-

असत्यं साहसं माया, मात्सर्यं चातिलुब्धता। निर्गुणत्वमशौचत्वं स्त्रीणां दोषाः स्वभावजाः।

नारी स्वभाव सत्य कपि कहही अवगुण आठ सदा उर रहही ।

अर्थात स्त्री सकल अवगुणक खानि थिक . एहन-एहन नितीकार सँ कियो पुछियाइन्ह जे अहाँ अपने कोन खानि सँ बहरायल छी?

जे स्त्री जन्महिं सँ सन्तोष , सहनशीलता, संयम एवं आत्मदमनक पाठ पढथि तनिका चरित्रक संबंध मे पुरुषक धारणा देखू बच्चे सँ पुरुष कैं चाणक्यक एहन-एहन श्लोक रटाओल जाय छैक -

स्त्रीयश्चरित्रं पुरुषस्य भाग्यं देवौ न जानाति कुतो मनुष्यः।

अर्थात स्त्री-चरित्रक अन्त केओ नहि पाबि सकैत अछि। तैं नारीक विश्वास कथमपि नहि करी।

नदीनां शस्त्रपाणीनां, नखिनां श्रृङ्गिनां तथा। विश्वासों नैव कर्त्तव्यः स्त्रीषु राजकुलेषु च ।

जहिना गाय महिष सँ सशंकित रही तहिना स्त्रीयो सँ।

न दानेन न मानेन नार्जवेन न सेवया । न शस्त्रेण न शास्त्रेण सर्वथा विषमाः स्त्रीयः।

कतबो मानन, दानने, सेवने, परबोधने या कोनो तरहें डेबने स्त्री कैं सोझ नहिं कैल जा सकैत अछि।

तैं अपना मे त निश्छल व्यवहार रखै जाउ, किन्तु स्त्री गण सॅं बराबरि ठकि-फुसिया कऽ काजि लियऽ।

दाक्षिण्यं स्वजने दया परजने नारीजने धूर्त्तता।

'जे स्त्री आजीवन पुरुषक स्वार्थवेदी पर अपना कैं आहुति करैत-करैत मरि जाथि, तनिका प्रति केहन उदार व्यवहार नीतिकार लोकनि सिखबै छथिन्ह! यदि यैह नीतिशास्त्र, त अनीति ककरा कहबैक?

जे स्त्री कोमलता और स्नेहक मूर्त्ति भय पुरुषक छयानुवंतिनी बनल रहथि तनिका प्रति एहन घोर विश्वासघात! हाय रे प्रपंची पुरुष-समाज!

गोस्वामी तुलसीदास कैं अहू सॅं संन्तोष नहि भेलैन्ह त आखिरी दर्जा पर स्त्रीक ईज्जत कैं पहुंचा देलथिन्ह।

ढोल गँवार शूद्र पशु नारी ये सब ताड़न के अधिकारी।

"गोस्वामी" रहथि तैं एहन चौपाय बनेबाक साहस भेलैन्ह। जौं आधुनिक सिहिनी सॅं पाला पड़तैन्ह त तुरंन्त काटि कै ई पाठान्तर करय पैड़तैन्ह जे-

नारीनिन्दक निपट अनाड़ी । ते जन ताडन के अधिकारी।

'नारी चरित्र पर तेहन-तेहन घृणीत आक्षेप पुरुष द्वारा भेल अछि जे सुनि प्रत्येक स्वाभिमानी युवतीक शोणीत खौलि उठतैन्ह।

आहारो द्विगुणः स्त्रीणां , भयं चापि चतुर्गुणम् । साहसं षडगुणं चैव , कामश्चाष्टगुणः स्मृतः । नाग्निस्तृप्यति काष्ठानां न पुंसा वामलोचना । स्थानं नास्ति क्षणं नास्ति नास्ति प्रार्थयिता नरः । तेन नारद नारीणां सतीत्वमुपजायते । न लज्जा न विनीतत्वं न दाक्षिण्यं न भीरुता । प्रार्थना भाव एवैकं सतीत्वं कारणं स्त्रीयाः । न स्त्रीणामप्रियः कश्चित् प्रियो वापि न विद्यते। गावस्तृणमिवारण्ग़ं प्रार्थयन्ति नवं नवम्। न तादृशी प्रीतिमुपैति नारी , विचित्रशय्यां शयितापि कामम्। यथा हि दूर्वादिविकीर्णभुमौ, प्रयाति सौख्यं परकान्तसङ्गात्। एहन-एहन लज्जाजनक अपशब्दक व्याख्या वा आलोचना सॅं हम अपन वाणी अपवित्र नहि करय चाहै छी ।

अफसोस! जे हमरा हाथ में कलम नै रहल नहि त हमहुँ पुरुषक विषय में एहन-एहन श्लोकक रचना करितहुँ जे-

कामोदश गुणः पुसां , क्रोधः शतगुणस्तथा। स्वार्थः सहस्रधा प्रोक्तो नीचता लक्ष्यधा स्मृता। नाग्निस्तृप्यति काष्ठानां न स्त्रीणां पुरुषस्तथा। स्थानं नास्ति क्षणं नास्ति , सुलभा नास्ति कामिनी। तेन सन्यासिना मूद्धवरता योगः प्रजायते । न लज्जा न विनीतत्वं न दाक्षिण्यं न भीरुता। अस्वीकृतिः स्त्रियः पुंसा ब्रह्मचर्यस्य कारणम्। न पुंसामप्रया काचित् प्रिया वापि न विद्यते । अलयः कलिकामध्ये प्रार्थयन्ति नवां नवाम्। न तादृशी प्रीति मुपैति कामी , पत्न्यां निजायां पदसेविकायाम्, यथाहि पद्भ्यामवताडितोऽपि, प्रयाति सौख्यं पन्दारसङ्गात्।

यदि धर्मशास्त्रक निर्माण स्त्रीक हाथ मे देल जइतैन्ह त ओहो एहन कानून बनबितथि जे पुरुष आजन्म स्त्रीक तरबा रगड़ैत रहय और जौं स्त्री मरि जाथि त पुरुष ओहि चिता पर जरि कय भस्म भऽ जाय। से नहि कैने जतेक रोम नारीक शरीर में होइ छैक ततेक करोड़ वर्ष धरि कुंभी पाक नरक में छटपटाइत रहि जाय। जखन स्त्री विरचित पत्नीव्रत -पुराणक पालन पुरुष -समाज कैं करय पड़ितैन्ह तखन बुझि पैड़ितैन्ह जे जबर्दस्तिक ठेंगा केहन होइ छैक। किन्तु पुरुष जबरदस्त छल, स्त्री कमजोर छलीह। तैं अभाग्य बस ई ठेंगा हुनके माथ बजरलैन्ह।

परंतु आब पुरुषक अत्याचार बहुत दिन धरि नहि चैल सकैत छैन्ह। आधुनिक महिला इतिहास, भूगोल, समाजशास्त्र, मनोविज्ञान तथा राजनीति विज्ञानक अध्ययन कय अपन न्यायोचित अधिकार बुझयलागि गेल छथि। हुनका आब अपन यथार्थ आत्म-परिचय भेल जाय छैन्ह जीवन में स्वतंत्रता सब सॅं अधिक मुल्यवान वस्तु होइ छैक। प्रत्येक स्त्री-पुरुषक ई जन्म सिद्ध अधिकार छैक। ताहि स्वतंत्रता सॅं आबक शिक्षित नारी समुदाय वञ्चित नहि राखल जाय सकै छथि।

आँखि पर सॅं अज्ञानक परदा हटनें टर्कीक महिला युग-युगान्तरीन पर्दाकैं फाड़ि कय गर्दा में मिला देलनि। आब स्त्री घर में कैद नहि रहि सकैत छथि। ओ पिपरमिण्टक सत्त नहि छथि जे बाहरी हवा लगने गलि जैतीह। संसारक सब वस्तु घूमि-फिरी कय देखवाक जतबेक अधिकार पुरुष कऽ छैन्ह ततबे स्त्रीयों कैं। पुरुषे जकाँ स्त्रीओ , कै अपन बल, विद्या, बुद्धि और योग्यता बढैबाक अधिकार छैन्ह। आत्मनिर्भता और स्वावलम्बनक महत्व आब ओहो बुझय लगलीह अछि। अन्न-वस्त्रक हेतु आब ओ पुरुष पर निर्भर रहब अपन अपमान बुझैत छथि। आधुनिक स्त्री पुरुषक सङ्गिनी बनि कय रहि सकै छथि, 'दासी' बनि कय नहि ।

नवयुगक जे निर्माण हैत ताहि मे स्त्री-पुरुषक सामान हाथ रहत । यदि पुरुषक क्षेत्र सम्पूर्ण संसार छैन्ह, त नारी केवल घरक भीतर किएक सीमित रहतीह ? जे स्त्री कैं अबला और आत्मरक्षा मे असमर्थ कहै छथि तनिका लक्ष्मीबाई तथा अहिल्याबाई सन विराङ्गनाक नाम नहि बिसरक चाहिऐन्ह । आत्मरक्षा शक्ति और साहस सॅं होई छैक और से जीवन-संघर्ष मे पड़ने बढै छैक । परिस्थिति मनुष्य कैं बनबैत वा बिगाड़ैत अछि । यदि मर्दों कैं आजीवन एक

घरक अन्दर बन्द कऽ देल जाइन्हि और चुल्हि फूँकय पड़ैन्हि त ओहो निस्तेज और शक्तिहीन भय आन कार्यक हेतु अयोग्य भऽ जैताह। आइयो हिन्दुस्तान मे कतेको मर्द एहन भेटताह जे स्वतंत्र विचरण करयबाली तातारी स्त्रीक हाथ सॅं अपन गट्टा नहि छोड़ा सकताह।

रहल सन्तानोत्पादन कऽ विषय। एहू सॅं मातृजातिक श्रेष्ठते सिद्ध होइत अछि। स्त्री मे असीम धैर्य ओ सहन-शक्ति होयबाक कारण सन्तति-प्रजनन तथा संबर्धनक भार प्रकृति हुनके पर छोड़ने छैन्ह। किन्तु एकर अर्थ ई नहि जे ओ सन्तान बढि कय भस्मासुर जकाँ स्त्रीए कऽ माथ पर हाथ देबए और जाहि खानि सॅं बहराय तकरे सकल अवगुनक खानि कहय।

ई बात सत्य जे बिना स्त्री और पुरुषक संयोग सॅं श्रृष्टि नहि चलि सकैत अछि। परिवारिक जीवनक हेतु दूहूक प्रयोजन समान रूप मे पड़ै छैक। गृहस्थीक गाड़ी चलैवाक हेतु दूहू पहिया आवश्यक होइत छैक। किन्तु तकर अर्थ ई नहि जे एक पहिया दोसरा कैं दबौने रहय।

यदि पुरुष नारीक हार्दिक सहयोग चाहै छथि त हुनका अपन स्वामित्व छोड़य पड़तैन्ह और नारीक सखा बनय पड़तैन्ह। आधुनिक स्त्री "सहचारी" भय रहि सकै छथि , "अनुचरि" बनि कय नहि। सीता-सावित्रीक आदर्श आब पुरान पड़ि गेलैन्ह। आधुनिक नारी कैं केहनो प्रतापि रावण हरण नहि कऽ सकै छैन्ह। जे हुनका पर आक्रमण करतैन्ह से एक सकेण्ड में रिवाल्वर द्वारा जवाब पाबि जायत। आब द्रौपदी चीर-हरण काल कृष्णक गोहारी नहि करय लगतीह ; दन दऽ पिस्तौल फायर कऽ देतीह। एहि वैज्ञानिक युग में जेखन यंत्र-बलक आगाँ शारीरिक बलक किछु नहि चलि सकैत छैक , तखन पुरुष कैं पशु बलक घमंड करब तथा नारी कैं आत्मरक्षा में असमर्थ बुझब मुर्खता थिकैन्ह।

हमर ई कथ्य नहि जे हम पुरुष सॅं युद्ध करी वा अकारण विरोध ठानी। किन्तु हमर मन्तव्य जे पुरुष हमरा उन्नति मार्ग मे -हमरा व्यक्तित्वक विकास में बाधक नहि होथि। यदि स्वतंत्र घुमने ओ अपना चरित्र कैं शुद्ध राखि सकैत छथि त हमहूँ अपना कैं निष्कलंक राखि सकैत छी। संदूक में ताला बंद कय जकर रखवाली कैल जाय तेहन पातित्यक एको कौड़ी मोल नहि। जीवन संघर्षक बीच जे चरित्र-वल असली सान जकाँ चमकैत रहै सैह अमूल्य वस्तु थीक।

"पुरुष स्वभावतः स्वार्थी , संदेही तथा ईर्ष्यालु प्रकृतिक होइ छथि ; तैं ओ स्त्री कैं अपन व्यक्तिगत सम्पत्ति जकाँ ताला-कुंजी में जकड़ि कऽ बंद रखैत एलाह अछि। स्पष्टवक्ता चार्वाक त साफ शब्दे कहने छथिन्ह-

पातिव्रत्यादि संकेतो बुद्धिमद्दुर्बलैः कृतः। रूपवीर्यवता सार्द्ध स्त्रीकेलिमसहिष्णुभिः।

" चारित्रिक गुणक मूल्य हम बुझैत छी, किन्तु जे चरित्र भयक भित्ति पर निर्मित हो तकर किछु महत्त्व नहि। चतुर्दिश प्रलोभन रहलो उत्तर जे अविचलित रहय तकरे असली चरित्र-बल बुझक चाही। 'विकारहेतौ सति विक्रियन्ते येषां न चेतांसि त एव धीराः।

'गृहक देवी' कहि पुरुष स्त्री कैं बहुत दिन धरि परतारलथिन्ह। -

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः

'एहन-एहन वाक्य सुनि स्त्री फुच्च भऽ गेलीह। किन्तु आबक नारी 'देवी' नहि 'मानवी' बनि कय रहऽ चाहै छथि। ओ आब मानवोचित अधिकार ग्रहण करतीह। साहसपूर्वक जीवन-युद्धक प्रत्येक क्षेत्र में आगाँ बढ़तीह और सामाजिक तथा राजनीतिक कार्य में समान भाग लेतीह। ओ 'अर्द्धाङ्गिनी' क बदला मे 'पूर्णाङ्गिनी' बनतीह। तखन समाजक जे अर्द्धाङ्ग पक्षाघात-पीड़ित अछि ताहि मे नवशोणितक सञ्चार होएत और मानव समाज पूर्ण रूप सँ विकसित भऽ जाएत। जाहि दिन नारी नरक भय सँ मुक्त भऽ जैतिह ताहि दिन सँ मानव सभ्यता द्विगुण वेग सँ बढ़य लागत।

पुरुष-समाज एतेक दिन धरि जे पाप कैने छथि तकर प्रायश्चितक करबाक समय आब आबि गेल छैन्ह। यदि ओ सोझ तरहें नारी कैं स्वाधीन नहि करथिन्ह त समुन्नत महिला-समाज पुरुषक विरूद्ध विद्रोहक झंण्डा उठा लड़ि कय अपन अधिकार हासिल करतैन्ह। नारी आब गृह लक्ष्मी सँ रन चण्डीक स्वरूप धारण करतीह। ओ आब पुरुषक हाथ में कठपुतलीह भेल अपन आत्माक हनन नहि होमय दऽ सकैत छथि। आदिम समय सँ पुरुषक अत्याचार सँ पीडित, प्रवञ्चित तथा शोषित स्त्री-जाति में आब भीषण प्रतिक्रियाक भय उत्पन्न भेल छैन्ह। शक्ति स्वरूपा नारी ज्वालामुखी जकाँ भभकि रहल छथि। जे एहि ज्वालामुखीक मार्ग में परत से भस्मीभूत भऽ जायत।

अन्तिम वाक्य बजैत-बजैत भाव वेष में मिस बिजली बोसक दूनू गाल लाल उठलैन्ह। बिजली देवीक भाषण समाप्त होइतहि सम्पूर्ण सभा-भवन करतलध्वनिक तुमुल नाद सँ गूँजि उठल। तेजस्विनी बिजली बिजलीक प्रकाश म बिजली जकाँ चमकैत छलीह। प्रखर प्रतिभाशालिनी श्वेतवस्त्रावृता बिजली साक्षात सरस्वतीक मूर्तिवत प्रतिभासित होइ छलीह। हुनक दिव्य कान्ति ओ अपूर्व संस्कार देखि समस्त सभासद मन्त्रमुग्ध रहि गेलाह।

सभ सँ अधिक प्रभावित भेलाह एक नवयुवक जे एकाग्रचित सँ तन्मय भेल बिजलीक एक-एक छटा कैं नेत्र-पथ सँ अपना हृदय में उतारने जायत छलाह। ई छलाह पाठक लोकनिक सुपरिचित सी० सी० मिश्र।

बिजली देवीक बाद पक्ष-विपक्ष में कतिपय भाषण भेल। किन्तु जे रंग बिजलीक जमलैन्ह से किनको नहि। अन्त में विचारकगणक सर्व सम्मति सॅं बिजली प्रथम घोषित भेलीह। जखन सभापति महोदय मिस बिजलीक पशमदार कोट मे सोनक मेडल खोंसय लगलथिन्ह तखन सभा हर्षध्वनि सॅं गूँजय लागल।

बिजली देवी नम्रता पूर्वक सभा कैं अभिवादन कय मुस्कुराइत मंच सॅं नीचा उतरलीह। विजय-गर्वक उल्लास सॅं हुनका विकसित वदन पर जे गुलाबी आभा प्रकट भेलैन्ह से भक दऽ सी० सी० मिश्रक हृतपिण्ड मे प्रवेश कऽ गेलैन्ह। बिजलीक वक्षस्थल पर ईषत कम्पायमान स्वर्णपदक कऽ स्पन्दन सॅं हुनको हृदय में स्पन्दन होबय लगलैन्ह। ओ किछु क्षण धरि आत्मविस्मृत भेल रहलाह। हुनक मोहतन्द्रा तखन भंग भेलैन्ह जखन एक मित्र हुनका पकड़ि कय डोलाबय लगलथिन्ह। तावत सभा- भवन रिक्तप्राय भऽ चुकल छल।

सी० सी० मिश्र विषण्ण चित्त सॅं अपना होस्टल में एलाह। मेसक भनसिया आबि कय कहलकैन्ह, 'बाबू! खाना बड़ी देर सॅं राखल अछि। ' मिश्रजी कहलथिन्ह-"छोर दो , अभी तबियत ठीक नहीं है। '

तदनन्तर ओ केवाड़ बंद कय बड़ी राति धरि एक टा चिट्ठी लिखैत रहलाह।

------====------

2. अकाण्डताण्डव

लालकाकी अमौटक हेतु आमक गाड़ा बनबैत छलीह कि आवेशरानी पहुँचि गेलथिन्ह। लालकाकी उल्लसित स्वर सँ बजलीह - 'आबथु ऐ बहिना ! आइ त बिढ़नीक द्वारें जाने बाँचब कथिन अछि। फुचुकरानी कैं बिच्चे लुल्हुआ पर काटि लेलकैन्ह अछि। ओल लगौने बैसल छथि। आब हमरो पर बघुआइत अछि।' आवेशरानी आवेश जनबैत बजलीह - 'अहा हा ! कनैलक फूल किऐक ने रगड़ि देलिऐन्ह !'

तदनन्तर बिढ़नीक समालोचना सँ प्रारम्भ भय जे गप्प उठल से नहि जानि कोना कऽ घुमैत-फिरैत अन्त मे आधुनिक फैशन पर आबि खसल !

आवेशरानी बजलीह - हः हः। आइकाल्हिक छौड़ी सभ जे ने करय। हमरो लोकनि एक दिन नव रही। बूढ़ पुरनियाक एतेक धाख रहय जे आँचर कैं दोबर कऽ कऽ ओढी़। मुदा आबक छौड़ी सभ त मकुना माधव जकाँ सोझहिं ठाढ़ि। की त लोक शोभा देखौ!'

लालकाकी समर्थन करैत कहलथिन्ह- 'हँ, ऐ बहिना! आब त एहन फैशन चललैक अछि जे आँचर कैं घुमा कऽ पीठ पर फेंकि दैत छैक। देखलथिन्ह ने वैद्यनाथधाम मे?

आवेशरानी - गे दाइ गे दाइ! ओ छौड़ी सभ त और अकरहर करैत रहय। सभक सभ केश उघारने। एहन सन क्रम जे केओ आबि कऽ सिन्दूर धऽ देओ।

लालकाकी - ऐ बहिना ! आब सिउंथि में सिन्दूरो कहाँ दैत छैक ? हमरा लोकनिक अमल मे त पटमासी सिन्दूर चलैत छलैक। आबक छौड़ी त सुइक नोक सँ माङ्ग क बीच मे लकीर करत अछि। ताहू मे जकरा कनेक अङ्गरेजी पढ़ल वर भेलैक से त कनपट्टीए लग सँ टेढ़ी माँग फारय लागत।

आवेशरानी - ऐ बहिना ! टेढ़ी माङ्ग देखि कऽ त हमर सौंसे देह जरि जाइत अछि।

ला० का० - हँ ऐ बहिना ! से त सरिपों कहै छथि। हमरो बड़ तामस होइ अछि। मुदा जे कहथुन्ह, लगै छैक बेश शनगर।

आ० र० - दुर जो ! हिनको बुढा़री में सौख सुझै छैन्ह । उघार केश देखि कऽ हमरा त एहन पित्त उठै अछि जे होइ अछि पाछाँ सॅं चोटी पकड़ि खीचि ली ।

ला० का० - ऐ बहिना । आइकाल्हि पढ़लि-लिखलि लडकी सभ देहाती मौगी जकाँ माथ नहि झपै छैक । किएक त माथ मे ठंढा हवा लगला सॅं ओकर सभक दिमाग तेज रहै छैक आब त देह मे हवा लगबाक खातिर एहन-एहन गंजी चललैक अछि जे सौंसे बाँहिक संग काँखो उघार रहै छैक ।

आ० रा० - हॅं झाँपल रहने लोक गोर बाँहि कोना देखितैन्ह ? चिक्कन काँख कोना देखतैन्ह ? काँखक दोग सॅं झलकैत देह कोना देखतैन्ह ? एहन-एहन छौड़ी कै त लोह धिपा कऽ दागी ।

ला० का० - ऐ बहिना ! त हिनका डाह किएक होइ छैन्ह ? नवलोक जे करय से सब छजै छैक । हमरो लोकनि नव मे चोली पहिरिऐक त सासु कैं एहिना लगैन्ह ।

आ० रा०- कहू त भला ! हमरा लोकनिक आँखि मे लाज रहय । निहुड़ि कय चली । कनेक आँचर उघार भऽ जाय त चेहा कऽ ताकी जे केओ देखलक त नहि । आबक छौड़ी सभ त उत्ताने भऽ कऽ चलत । बरौनी जंकशन मे देखलथिन्ह नहि ? चोटी उघारने, हाथ मे घड़ी , आँखि मे चश्मा, चट्टी पहिरने, छम-छम करैत पुरुष जकाँ हाथ मे बेग नेने गाड़ी मे चढ़ि गेल । हमरा लोकनि सॅं एहि धुआ मे ई होइत ?

लालकाकी आवेशरानी कैं कुढ़ैबाक अभिप्राय सॅं बजलीह - ओ कोन बेजाय कैलक ? ओहन धीपल पलस्तर पर हमरा सभ कैं पैर नहि रोपल जाय । बुझाय जे आब औंठा मे फोका पड़त । तेहना हालति मे जौं हमरो सभक पैर मे चट्टी रहैत त कोन पाप होइत ?

आवेशरानी उत्तेजित भऽ कऽ बजलीह - मारी बाढ़नि धऽ कऽ ! जुत्ता-चट्टी त ओ पहिरय जेकरा पुरुषक माथ पर नाचक होइ । देखै छथिन्ह नहि तारा कैं ? एतबहि मे चट्टी क चटर-चटर शब्द सूनि दूनू बहिना साकांक्ष भऽ गेलीह । देखै छथि त सद्यः तारा देवी आबि रहल छथि ।

एहि ठाम तारा देवीक किछु परिचय देब आवश्यक । ताराक वयस अट्ठारह । क्रीमक सुगन्ध सॅं गम-गम करैत गोल मुँह । केश टेढ़ कऽ फारल । ताहि सॅं पोमेडक खुशबू बहराइत । बङ्गला स्टाइल सॅं पहिरल नारंगी रंगक जार्जेट सा री । झिलमिल जार्जेटक पारदर्शी जाल सॅं रेशमी ब्लाउजक गुलाबी रंग झलकैत तथा पृष्ट प्रदेश पर नागिन सन लहराइत चोटी झकझक सुझैत । अर्द्धचन्द्राकार केश विन्यास सॅं आच्छादित ईयरिंगक केवल गोल मटरदाना टा बिजलीक बल्ब जकाँ चमकैत । दूनू बाँहि निरावरण तथा निराभरण । हाथ मे केवल एक-एकटा फीरोजा

रंगक चूड़ी। चेहरा पर कखनों मुसकुराहट कखनो शान। जेना वर्षा बरसि कय तुरन्त तीक्ष्ण रौद प्रकट भऽ जाय।

फैशनेबुल युवतीक ई गेब देखितहि दूनू बहिनाक आँखि चौन्हिया गेलैन्ह। तथापि लालकाकी सम्हरि कय बजलीह - 'गे बुचिया कहाँ गेलें ? झट दऽ नवका शतरंजी नेने आ। देख तारादाइ एलथुन्ह अछि। पुनः तारा देवी क स्वागत करैत कहलथिन्ह - आबह तारा दाइ। बहुत दिन पर सासुर सँ ऐलीह। आब कि ई लोक सभ मन हैतौह ?

तारा दाइ ऐचैत-मैचैत आगाँ बढ़ि अत्यन्त कष्टपूर्वक दूहूक प्रौढाक कनगुरिया छुबैत अपन आलता-रंजित चरण सँ शतरंजी कैं सुशोभित कैलन्हि।

लालकाकी पुछलथिन्ह - तों त, सुनै छी, पटनो गेल छलोहय ? कतेक दिन ओतय छलोह ?

तारा दाइ गंभीरतापूर्वक आँखि नीचा कय बजलीह - ओतय तीन मास छलिऐक।

ला० का० - कथिक इलाज होइ छलोह ?

तारा० - कहियोकाल करेज मे कनेक दर्द भऽ जाइ छल।

एहि पर दूनू बहिना मे व्यंग्यपूर्ण कटाक्षक विनिमय भेलैन्हि।

एयबहि में अत्यन्त चिक्कणताक कारण तारा दाइक माथा सँ साड़ी ससरि गैलैन्ह ताहि सँ दूनू कनपट्टी में खोंसल फुलदार काँटा उघार भऽ गेलैन्ह। ई काँटा दूनू प्रौढाक आँखि में गड़य लगलैन्ह।

आब आवेशरानी कैं नहिं रहि भेलैन्ह। बजलीह- ईह! कोन-कोन फैशन आब परचरलैक अछि से नहि जानि।

लालकाकी कैं बूझि पड़लैन्ह जे आब ई कोनो व्यंग्य करथिन्ह , तैं झट दऽ बात लोकि बजलीह- ऐ बहिना! ताहि दिन ककरो सासुर सँ एकरंगा आबैक त सौंसे गामक लोक तमाशा देखऽ लेल जमा भऽ जाइ। आब त कोन-कोन कपड़ा बहरैलैक अछि तकर नामो नहि जानै छिऐक। ऐं हे तारा! ई कोन-साड़ी कहबैक छैक?

तारा देवी गर्वमिश्रित मुसकान सँ बजलीह ,-आइकाल्हि एकरे फैशन छैक। विलायत सँ आबै छैक। मुदा बड़ रुपया लगै छैक।

लालकाकी पुराइ करैत कहलथिन्ह- हे दाइ! एहि में खोंइछो कोना कऽ देबौह ?एहन सुन्दर साड़ी मे धान कौना कऽ बन्हबह?

तारा देवी एही प्रथा पर बिहुँँसैत बजलीह- काकी , आशीर्वाद दियऽ। धान लऽ कऽ की हैतैक?

ला०- आशीर्वाद त भगवतीए देने छथुन्ह। तोरा सन भाग्य ककरा हैतैक?

ई कहैत लालकाकी कैं अपन बुचिया मन पड़ि गेलैन्ह। आँँखि सँँ टप-टप नोर चुबय लगलैन्ह।

ई असमय रोदन देखि बड़कागामवाली झट भीतर सँँ आबि तारादेवी कैं अपना कोठरी मे लऽ गेलथिन्ह ।

लालकाकी आँँखि पोछैत बजलीह - दुर जो ! आँँखियो अपन सक नै अछि । ओकरा खोमो लागल हेतैक । अभागलि बुचियाक कपार केहन भेलैक से नहि जानि ।

आवेशरानी कहलथिन्ह - भगवान पर भरोस राखथु बहिना ! आइ नहि त काल्हि ओहो रानी बनबे करति । और तारा ओकर परतर की करतैक ? बुच्चीदाइ जे पैर धो कऽ फेकि देत से त ओकरा हैबे नै करतैक । फैशन कैने की हैतैक ?

एतबहि मे दुलारमनि पिउसिक स्वर कर्णगोचर भेल - की ऐ मधुरानी ! जमायक कत्तहु पता लागल ?

लालकाकी पित्त घोंटि कय बजलीह - आबथु बड़की दाइ ! बहुत दिन पर ऐलीह । मिसरक कहाँँ कोनो चिट्ठी-पत्री आएल छैन्ह । बुच्ची दाइक भाग्ये जरल छैन्ह त हमरा सभ की कऽ सकै छिऐन्ह ?

दुलारमनि पिउसी गरजि कय बजलीह - हम त पहिनहिं कहै छलहुँँ जे कुलमर्यादा देखि कय वर करब । छोटबभना दछिनाहा कैं उठा अनने त यैह सब हैत कि ने !

बुच्ची दाइ ढुनमुन काकीक नेना कैं कोड़ मे नेने खेलबै छलथिन्ह । अपना भाग्यक एहि तरहें आलोचना होइत देखि नेना कैं पटकि आङ्गन सँ बाहर निकसि गेलीह । नेना कैं क्रन्दनध्वनि सुनि ढुनमुन काकी ओल कटनाइ छोड़ि दौड़लि ऐलीह । नेना कैं हँँसोथि कय आँँखि पोछैत बजलीह - 'हः, आङ्गनक सभ काज हम करी । केओ नेनो कैं राखत से नहि ! ' किन्तु ओलक कबकबी आँँखि मे लगने नेना और जोर सँ चिचियाय लगलैन्ह । तखन लालकाकीक ध्यान आकृष्ट भेलैन्ह । कहलथिन्ह - ऐ फुचुकरानी ! जाउ ; कनेक पिया दिऔ गऽ ।

दुलारमनि पिउसी अपना बात कैं पाछाँ पड़ैत देखि और जोर सॅं बाजय लगलीह - हुनका गामों पर केओ लोकवेद छैन्ह कि नहि ? की देखि कऽ एहन जमाय कैलहुँ ? एहि सॅं त हे .... ।

एतबहि मे भोलानाथ झा खुशी होइत आङ्गन ऐलाह । बजलाह - भौजी रेवती क चिट्ठी आएल अछि । ओ आइ जे घड़ी गाम नहि पहुँचलाह अछि । मिसर हुनका पटनाक पता सॅं चिट्ठी लिखने छथिन्ह से नेने अबै छथि ।

ई समाचार सुनितहि लालकाकी आनन्द सॅं गदगद भय दुलारमनि पिउसिक दूहू पैर पकड़ि कहय लगलथिन्ह - बड़की दाइ ऐ बड़की दाइ ! हिनकर पैर लछमिनियाँ भेल ऐ दाइ । कहाँ गेलौं ऐ कनियाँ ? पूजाक सामग्री ओरियाउ । सत्यनारायण महाराजक कबुला मानल अछि । देओर दिस ताकि कऽ बजलीह - ऐ बाबू ! हमरा मधुर मँगा दियऽ । भरोस नहि छल जे भगवान एहन समाचार सुनौताह ।

भोला नाथ कऽ गेला पर बरकागामवाली तारा दाइक संग बहरैलीह । तारा विहुँसैत कहलथिन्ह - काकी , हमरो हिस्सा भेटक चाही । सकड़ीक लड्डू सॅं काज नहि चलत । पटनाक पिंटूक रसगुल्ला खोआबऽ पड़त ।

दुलारमनि पिउसी जाहि उद्येश्य सॅं आइली छलीह से तॅं पूर्ण नहि भेलैन्ह , प्रत्युत उनटे भऽ गेलैन्ह । मन मे सोचय लगलीह - दुरजो ! केहन कुयात्रा मे चलल छलहुँ ।

ताबत तारा दाइ टोकलथिन्ह - पिउसी ! गुम्मसुम किएक छिऐ ? मिठाइ खैबैक त पहिने गीत गबियउ ।

ई कहब की छल - बिढ़नीक छत्ता खोचारब । दुलारमनि पिउसी अपन सभटा खीस आब तारा पर उतारय लगलीह - "ऐ गै तारा ! तोरा एको रत्ती धाख नै छौक ? तोहर बाप हमरा सोझा एना बजिते नइँ छथुन्ह । तों हमरा सॅं चोल करै छैं ! बड़ चकमक्की छौ त अपना वर कैं देखो गऽ । चट्टी पहिरि कऽ चलइ छैं , कनेक बाँहि उघारि लइ छैं , त बुझइ छैं जे और केओ लोक नहि । गोर माउगि गर्वहि आन्हरि ! हमरो लोकनि एक दिन नव रही । एना अतत्तह नहि करी । आबक छौड़ी त्त विष मातल रहै अछि । जकरा बड़ खौंत फुकैक से जाठि मे ....।"

लालकाकी देखलन्हि जे आब अनर्थ भेल जा रहल अछि । झट्ट दऽ बीच मे पड़ि बजलीह - बड़की दाइ ! एहन सुभ अवसर पर ई विगड़ै छथि ! तारा दाइ कहाँ किछु अनर्गल कहलथिन्ह अछि ?

ताराक गंजन देखि आवेशरानीक रोआँ-रोआँ जुराइत छलैन्ह । तथापि ऊपर सॅं बजलीह - एतेक दिन पर भगवान सहाय भेलथिन्ह अछि । आइ कत्तहु कर्र-कर्र होय ?

'कर्र-कर्र शब्द बहरायब छल कि दुलारमनि पिउसि हुनके पर उनटि गेलथिन्ह - अयँ ऎ ! हम कार-कौआ छी जे कर्र-कर्र करब ? कोन छुच्छी एहन कहयवाली अछि ? जे कहत तकर जीभ सट्ट दऽ खीचि लेबैक। मधुरानी हमरा जे ने कराबथि। आइ दिन सॅं फेरि एहि आङ्गन मे पैर दी त ब्राह्मणक बेटी नहि।

ई कहैत दुलारमनि पिउसी जहिना तमकि कय ठाढ़ि भेलीह तहिना पैर तर एकटा ललका बिढ़नी पड़ि गेलैन्ह। ओ और जोर सॅं चिचिया कय लालक सातो पुरुखाक उद्धार करैत अपना घर दिस बिदा भेलीह।

हुनका गेला पर तारा दाइ अपन ओटो दिलबहारक खुशबू सॅं तर रुमाल सॅं आँखि पोछैत बजलीह - काकी, हमरो हुकुम दियऽ। खोइछ मे आशीर्वाद भेटिए गेल से नेने जाइ छी।

लालकाकी हपसि कय कहलथिन्ह - दाइ ! अहाँ कै हमरे सपथ अछि। एकोरत्ती क्षोभ नहि राखब। ओ त जेहन छथि से सभ गोटा कैं जनले अछि।

आवेशरानी कहलथिन्ह - देखलिऎन्ह ने ? तुरन्त हमरे पर कोना उनटि गेलीह।

एतबहि मे टमटमक रुनझुन शब्द श्रुतिगोचर भेल। बड़कागामवाली चेहा कय दुरुखा सॅं हुलकी मारलन्हि और दौड़ले अपना घर मे जा कऽ साड़ी बदलय लगलीह।

रेवतीरमण माय तथा पितिआइन कैं प्रणाम कय आङ्गन मे बैसलाह। पुनः एकान्त देखि नहुँ-नहुँ कहय लगलथिन्ह - मिसर त बड़का ढड्ढर लिखि पठौने छथि। तकर सारंश ई जे हुनका कालेज मे बिजली नामक एक लड़की छैन्ह से व्याख्यान मे सभ सॅं फर्स्ट भेल छैन्ह। ओकरा देखि हुनका ई सिहन्ता होइ छैन्ह जे ओहने स्त्री सॅं विवाह होइत।

लालकाकी बीचहि मे बजलीह - हम त पहिनहि सॅं जनै छलहुँ जे कोनो निरासी हमरा बेटीक सौतिन बनल अछि। आब बुझा ने गेल। हे भगवान , ओ छौीड़ केहन निर्लज्ज अछि जे छौड़ा सभक बीच मे जा कऽ छमकैत अछि। नाम की छैक त बिजली ! जरलाहो बिजली पर बज्र खसौ।

ई कहि लालकाकी आँचर सॅं आँखि पोछय लगलीह। रेवतीरमण बजलाह - मिसर लिखैत छथि जे 'अपना गाम मे महिला क्लब कायम करु। स्त्रीगण कैं शिक्षित तथा जागरित करू। हमरा सासुरक लोक योग्य बनि जायत तैखन हम अहाँक ओतय आबि सकै छी।'

लालकाकी माथ पर हाथ दय बजलीह - आब ई लोक एहि जन्म मे 'योग्य' कोना कऽ बनि जाएत ? जौं 'योग्ये सोति' मे करक छलैन्ह त जयवारक ओहि ठाम ऎलाह किएक ? और हुनकर अपने बाप कोन 'योग्य सोति' छथिन्ह जे सासुर मे 'योग्य' खोजै छथि ?

रेवतीरमण कहलथिन्ह- "नहि-नहि। से 'योग्य' नहि। हुनक आशय छैन्ह जे वुच्ची दाइ कैं शिक्षा देल जाइक......।"

लालकाकी बात काटि कहलथिन्ह- बड़्ड बापक बेटा बनलाह अछि जे एखने सँ हमरा बेटी कैं 'शिक्षा' देमय लगलाह अछि। कोन अनुचित हमर बेटी कैलक अछि जे ओ 'शिक्षा' देथिन्ह? एक टूक कपड़ा, एकटा गहना कहियो पठवितथिन्ह से त भेवे ने कैलेन्ह अछि और चललथिन्ह ओत्तहि सँ शिक्षा देमय!

रेवतीरमण बुझाबय लगलथिन्ह- "से नहि। हुनक मतलब छैन्ह जे बुच्ची दाइ लिखि-पढि कऽ ज्ञान प्राप्त कऽ सकय......।"

ला०का०- पहिने हुनका अपना ज्ञान भेलैन्ह अछि ? ओ एतेक दिन लिखि-पढि कऽ नेहाल कैलन्हि जे आब बुच्ची दाइ सनाथ करतीह। और बिनु पढने बुचिया कैं जतेक ज्ञान छैक ततेक हुनका भरि जन्म पढ़ला उत्तर नहि हैतैन्ह।

रे० र०- से हुनक तात्पर्य नहि छैन्ह। ओ चाहै छथि जे ई ताहि योग्य भऽ जाय जे हुनका बातक उत्तर दऽ सकैन्ह।

ला० का०- एहन सनकाहो नहि देखल। सभ लोक त एहने स्त्री चाहैत अछि जे कहियो एकोटा बातक उत्तर नहि दैक। 'गौरकट खटिया बतकट जोय '- ई भला के चाहत। और हुनका एही बातक सिहन्ता होइ छैन्ह? सैह छलैन्ह त कोनो कर्कशा सँ विवाह करितथि। हमरा बेटी सँ त ई नहि हैतैन्ह जे ओ कोनो बातक उत्तर देतैन्ह। और हँ। जखन उत्तर देमय लगतैन्ह तखन अपने पड़ा जैताह।

आब रेवतीरमण मुश्किल मे पड़ि गेलाह। समझाबय लगलथिन्ह- 'तों हुनक अभिप्राय नहि बुझलहुन। ओ ई चाहै छथि जे स्त्रीगणक मन मे जे कुसंस्कार जमल छैक से हाटाओल जाय। जेना....जेना.... तोरा लोकनि देवता-पितरक कवुला मानै जाइ छैं.....।'

लालकाकी तमकि कय बजलीह-त की लोक देवता पितर नहि मानौ ? हुनक जकाँ सभ क्रिस्तान भऽ जाओ ? हम त कवुला कैने छी जे जाहि दिन हुनकर मति फिरतैन्ह ताही दिन हनुमानजी कैं रोट चढ़ा देबैन्ह। हमर बेटी तुसारी पुजैत अछि सेहो हुनका मने छोड़ि देओ ? वैह बड़ काबिलक नाती बनलाह अछि।

आब रेवतीरमण हिम्मत हारय लगलाह। तथापि साहस कय पुनवरि चेष्टा कलन्हि- 'तोरा सभ बुझितहि ने छही त हम कोनो कऽ कहिऔक! मिसर चाहै छथुन जे तोरा सभक अन्ध-विश्वास दूर कैल जाउक.......।'

ला० का०- हौ! अन्ध-विश्वास ककरा कहै छैक ? बूढ़ भऽ गेलहुँ , आइ धरि नहि सुनने छलिऐक!

आब रेवतीरमण गोङियाय लगलाह- 'अन्ध-विश्वास ई जेना....जेना.....जेना.....तोरा लोकनि डाइन-योगिन मानइ जाइ छैं.......।

ला० का०-त कि हुनका देश मे डाइन-योगिन नहि होइ छैन्ह? डाइन-योगिन कतय नहि रहै छै?

ई कहि लालकाकी अपना बातक पुष्टिक हेतु देयादिनी दिस ताकय लगलीह। ढुनमुनकाकी कैं बूझि पड़लैन्ह जे ई हमरे पर आक्षेप करै छथि। बाजय लगलीह-हँ , हम त नैहरे मे डाइनपन सिखने छी! हमहीं जमाय कैं नोन चटा देने छिएन्ह कि ने! हमरा सन हाँकल डाइन के हैत?

ई कहैत ढुनमुनकाकी कैं घबर-घबर नोर खसय लगलैन्ह। लालकाकी छितनी लऽ कऽ फटाफट अपन कपार पीटय लगलीह।

ई अकाण्डताण्डव देखि रेवतीरमण माथ हँसोथैत आङ्गन सँ उठि दलान दिस विदा भेलाह।

-----====-----

3. 'रोमांस'क उदय

सी० सी० मिश्र कैं ओहि राति बड़ी काल धरि नीन्द नहि पड़लैन्ह। मिस बिजलीक दमक सँ निद्रोक आँखि में , चकाचौन्ह लागि गेलैन्ह। हुनक मस्तिष्क तेना विक्षोभित भऽ उठलैन्ह जे घंटो विचार- तरंग मे ऊब-डूब होइत भसियाइत रहलाह।

सी० सी० मिश्र मनहिमन बिजली और बुचियाक मिलान करय लगलाह। एक उन्मुक्त स्वच्छन्द विहारिणी परी, त दोसर छान्ह-पगहा सँ बान्हल पड़रू। एक स्वच्छन्द मानसरोवर मे विचरण करयवाली राजहंसी , त दोसर भरि जन्म घोंघा-सेमारक बीच अन्हार मे रहयवाली कूपमण्डूकी। एक नारी जागरणक संदेशवाहिनी आधुनिक युगक अग्रदूतिकाः त दोसर अज्ञान और कुसंस्कार सँ आच्छन्न परम्परागत रुढि श्रृंखलाक बन्दिनी। एक आकाश मे उड़निहार एरोप्लेन, त दोसर लीके-लीके ससरयवाली बैलगाड़ी।

ई बिजली जकरा प्राप्त भऽ जैथिन्ह , तकरा फेरि बाँकी की रहतैक ? ओहि कल्पित भाग्यवान पुरुष सँ सी० सी० मिश्र कैं ईर्ष्या होबय लगलैन्ह , और अपना भाग्य पर क्रोध। एक आधुनिक शिक्षित युवक कैं बिजली सन प्रगतिशील पत्नी भेटक चाही, से भेटल की त बुचिया! छिः!

शनैः शनैः सी० सी० मिश्र स्वप्नलोक मे विहार करय लगलाह। एक अत्यन्त रमणीय पार्वत्य प्रदेश मे गिरि निर्झरिणीक समीप श्वेत शिला-खण्ड पर आसीन भय ओ प्राकृतिक शोभा निरीक्षण कऽ रहल छथि। नीचा लाल-लाल कमल-पुंज सँ सुशोभित पुष्करिणी मे एक नौकारोहिणी युवती जल-विहार कय रहल छथि। ओ सुन्दरी अपना करकमल सँ कमल तोड़य लगलीह। कोमल आङ्गुर कठिन मृणालस खड़राय लगलैन्ह। युवती उत्तेजित भय मृणालदण्ड कैं मूलसहित उखाड़ि लेलन्हि। बल प्रयोग सँ कमलनाल त टूटि गेल , किन्तु संगहिसंग नाव उलंग भऽ गेलैन्ह और तरणि समेत तरुणी जलमग्न होमय लगलीह।

ई दृश्य देखि मिश्र जी सरोवर मे कूदि पड़लाह। पौरैत-पौरैत यावत ओहि स्थान पर पहुँचथि-पहुँचथि तावत नाव मँझदार मे डूबि गेलैक। डुब्बी लगौला पर तरेतर दहाइत कामिनीक कोनो गुलगुल अंग हुनका हाथ में ठेकि गेलैन्ह। ओ कोनो तरहें लटपटाइत-सटपटाइत शिथिलवसना सुन्दरी कैं दृढतापूर्वक अपना बाहुपाश मे आवेष्टित कैने बहरयलाह। मुर्छिता तरुणी कैं चैतन्य

लाभ करैबाक हेतु प्राथमिक उपचार करब आवश्यक छलैन्ह। अतएव मिश्रजी परोपकार भावना सँ युवतीक आर्द्र- वस्त्र हटा कय नीक जकाँ पोछय लगलथिन्ह। युवतीक हृदय-परीक्षा कैला पर ज्ञात भेलैन्ह जे अत्य न्त सूक्ष्म स्पन्दन भऽ रहल छैन्ह। चिकित्साक दृष्टि सँ हिमवत शीतल शरीर मे कृतिम उष्णताक संचार करब आवश्यक बूझि पड़लैन्ह। अग्निक अभाव मे एकमात्र उपाय छलैन्ह निरन्तर करमुख- व्यापार। अन्ततोगत्वा प्रयत्न सफल भेलैन्ह।

मूर्छिता तरुणी कनेक आँखि खोलि कय पुछलथिन्ह- अहाँ के थिकहुँ ? ई कोन स्थान छैक ? एतय कोन घटना घटल छैक ?

ई सुपरिचित कण्ठस्वर सुनितहिं सी० सी० मिश्र मिस बिजली कैं चीन्हि गेलथिन्ह। कहलथिन्ह - 'हमर परिचय यैह जे हम एक देवीक अनन्य उपासक थिकहुँ। एहि स्थान कैं अहाँ हमर आराध्य देवीक क्रीडा़ स्थल बूझि सकै छी, और एतय घटना ई घटित भेल छैक जे एक नाव मँझधार मे डूबि गेने दोसर नाव मँझधार मे डुबैत-डुबैत बाँचि गेल अछि।'

एतबहि मे दृश्य पलटि गेल। बिजली देवी खिलखिला कय हँसि उठलीह। विहुँसि कय बजलीह - अहाँ काव्य करय लागि गेलहुँ , किन्तु हमरा चिन्हलहुँ त नहिए। हम अहीक विधिकरी थिकहुँ। आबो सरिया कऽ चीन्हि लीयऽ।

सी० सी० मिश्र विस्फारित नेत्र सँ देखय लगलाह। आब हुनका मायामयी नारीक अंग-प्रत्यंग मे विधिकरी क भान होबय लगलैन्ह। ओ आश्चर्य चकित भय हुनका दिस हाथ बढ़ौलन्हि।

किन्तु पुनः दृश्य-परिवर्तन भेल। ओ नारी-शरीर अकस्मात अश्रुपूर्ण बुच्चीदाइक स्वरुप ग्रहण करैत कातर स्वर मे बाजल - 'अहाँ हमरा परित्याग कऽ देलहुँ। देखू, अहाँ कैं सन्तुष्ट करबाक हेतु हमरा कोन-कोन नाच नाचय पड़ल अछि ! ई कहि ओ मिश्रजीक पैर धऽ लेलकैन्ह।

आब मिश्रजी अपना हृदयक आवेग कैं नहि रोकि सकलाह। चट दऽ लपकि कय हाथ पकड़ि लेलथिन्ह। ततेक जोर सँ बकबका कऽ धैलथिन्ह जे ओ मायाकल्पित मूर्त्ति चीत्कार करय लागल।

ओहि चीत्कार-ध्वनि सँ सी० सी० मिश्रक सुखस्वप्न भंग भऽ गेलैन्ह। देखै छथि त होस्टलक नौकर कोठरी बाढ़क हेतु आएल अछि , तकर हाथ ओ जोर सँ कसि कय पकड़ने छथिन्ह , और ओ जोर सँ चिचिया कय कहि रहल छैन्ह - बाबू छोड़ि दियऽ। हम झाड़ू देबऽ आयल छी। अहाँक चादर नीचा खसि पड़ल छल से पैर पर ओढ़बैत छलहुँ। अहाँ बड़ी काल सँ कीदन बिसुनाइत छी।

मिश्रजी लज्जित भय ओकर हाथ छोड़ि देलथिन्ह।

थोडेक कालक उपरान्त सी० सी० मिश्र कैं होस्टल सुपेरेंटेंडक चपरासी बजाबय ऎलैन्ह। ओ सशंकित चित्त सँ हुनका आफिस रुम मे गेलाह। ओहि ठाम एक और सम्भ्रान्त सज्जन बैसल छलाह। हुनका दिस संकेत कय सुपेरेंटेंडेंट कहलथिन्ह - बैरिस्टर योगेशचन्द्र बोसक नाम त अहाँ सुननहि हेबैन्ह।

मि० मिश्र नम्रतापूर्वक अभिवादन कैलथिन्ह।

सुप० - अपना कालेजक छात्रा मिस बिजली हिनके सुयोग्य पुत्री थिकथिन्ह।

मि० मिश्रक छाती और जोर-जोर सँ धक्-धक् करय लगलैन्ह।

सुप० - हम जनै छी जे अहाँ विश्वविद्यालय मे महत्वपूर्ण गवेषणा-कार्य कय रहल छी, ताहि सँ अवकाश कम रहैत होयत। तथापि किछु दिनक हेतु थोड़ेक समय अहाँ कैं देबय पड़त। हिनक छोट कन्या एहि बेर बी० ए० क परीक्षा मे बैसथिन्ह। तनिका कनेक सहायता कऽ दिऔन्ह।

मि० बोस बजलाह - 'इंगलिश' त ओकर बहुत बढ़िया छैक। सिर्फ साइकौलोजी (मनोविज्ञान) और पोलिटिक्स (राजनीतिशास्त्र) मे मदद दरकार छैक। यदि अहाँ कैं कष्ट नहि होइत त एखने हमरा संग चलितहुँ। परीक्षा लगिचायल छैक , तैं ओ बहुत व्यग्र भऽ रहल अछि।

मिश्रजी मंत्रमुग्ध जकाँ हुनका पाछाँ-पाछाँ चललाह -- मि० बोस हुनका कार मे बैसा स्वयं ड्राइव करैत कहय लगलथिन्ह - 'हम अपने हाथ सँ गाड़ी चलायब पसन्द करै छी। हमर दूनू बेटी त ड्राइविंग मे हमरो सँ बेसी -'एक्सपर्ट' (निपुण) आछि। बिजली त बारहे वर्षक अवस्था सँ हमरा सभक संग यूरोप घूमय लागल। विलायत मे जैह देखय सैह सीखऽ लागय। जर्मनी मे मोटर चलायब सिख लक फ्रान्स मे पियानो बजौनाइ सिखलक। स्विटजरलैण्ड मे 'स्केटिङ्ग' (बर्फ पर ससरनाइ) करय लागलि। ब्रिटिश चैनले मे हेलय लागलि। हमर त इच्छा छल जे ओत्तहि लंडन यूनिवर्सिटी सँ वैरिस्टरी पास करा दियैक। किन्तु जहिया सँ ओकर माय मरि गेलथिन्ह तहिया सँ हम दूनू बहिन कैं अपना आँखिक ओझर नहि करैत छिऎक। बेटाक सिहन्ता यैह दूनू पुर्त्ति करै अछि। सात वर्ष सँ माय-बाप जे बुझी हमही बनल छिऎक।

ई कहैत-कहैत सहृदय वारिस्टरक आँखि मे नोर ढबढबा ऎलैन्ह। करीब दस मिनट में मोटर एक सुसज्जित बङ्गलाक बरामदाक सामने आबि कऽ लागल। मि० बोस सी० सी० मिश्र कैं ड्राइंग रूम में लऽ जा कऽ बैसोलथिन्ह। भीत परक हस्त निर्मित पर्वत-झरना आदिक रंगीन चित्र, खिड़की परक बारीक जाली काढ़ल झिलमिल पर्दा तथा टेबुल परक सुन्दर फूल काढ़ल

झालरदार रेशम देखि, हुनका ई बुझबा मे भाङ्ठ नहि रहलैन्ह जे ई सभ वसुकन्याक सुकुमार हस्तकौशल थिकैन्ह।

मि० मिश्र कलाकौशलक चमत्कार सँ मुग्धे होइत छलाह , कि कापी, पुस्तक तथा यौवनक भार सँ सहमलि मिस वीणा मधुर मुस्कान सँ हुनक अभिवादन कैलथिन्ह। कोसाक दल सन हल्लुक चप्पल पर उड़ैत ओ मिश्रजी कैं अपना स्टडी-रूम (अध्ययनागार) मे लऽ गेलथिन्ह। मिश्रजी देखलन्हि जे कमराक प्रत्येक वस्तु सुरुचिपूर्ण ढंग सँ सजाओल छैक। संगमर्मरक फर्श निर्मल दूध जकाँ झलकैत। श्वेत-स्फटिक-निर्मित टेबुल पर लिखा-पढ़ीक सुन्दर सामान। चारू कात मखमली गद्दीदार मुलायम सोफा। सीसाक आलमारीक प्रत्येक खल मे सनहुला जिल्द मे मढ़ल साहित्य , दर्शन, तथा इतिहासक मोट-मोट अंगरेजी ग्रन्थ यथास्थान राखल। एक कोन में पियानोक टेबुल। दोसरा कोन मे रैकेट टाङ्गल। कमरा मे एकोटा वस्तु फालतू नहि।

'भी' कट ब्लाउजक मध्यभाग मे खोंसल फाउण्टेनपेन बाहर कय, आगाँ मे कापी खोलि, मिस वीणा तैयार भऽ गेलीह। मि० मिश्र अपना कैं कठिन परिस्थिति मे बोध करय लगलाह। हुनका संकट मे पड़ल देखि वीणा देवी वीणा-विनिन्दक स्वर मे बजलीह-हम एक टा 'एसे' (लेख) लिखने छी; तावत सैह देखि दियऽ।

मि० मिश्र कापी लऽ कऽ मोती सन-सन गोल अक्षर सँ सुशोभित पृष्ट पर पृष्ट उनटाबय लगलाह । सुन्दर अंग्रेजी मे गंभीर विचारपुर्ण निबन्धक विषय - क्रिटिसिज्म ऑफ मैरेज (वैवाहिक प्रथाक समालोचना) । वीणा देवी वेद पुराण तथा स्मृति सँ लय कऽ फ्रायड , बर्नार्ड शा, बर्टरेड रशेल प्रभृति आधुनिक समाजशास्त्रीक समीक्षा करैत , प्राच्य तथा पाश्चात्य विचार-धारा क तुलनात्मक विवेचना कैने छलीह ।

रेशमी वीणाक भीतर एहन ठोस फौलादी शक्ति देखि सी० सी० मिश्र मनहि मन विधाताक पक्षपात पर कूही होबय लगलाह । 'वीणाक रचना मे त सृष्टिकर्त्ता सीटि-सीटि कय अपन कला कऽ सभटा चमत्कार भरि देलथिन्ह और बुच्चीदाइ कैं गढ़बाक काल मे जेना कुच्ची हेरा गेल रहैन्ह तेना थोपी लऽ कऽ थोपि देलथिन्ह ।'

एहि तरहें मिश्रजी वीणाक लेखक स्थान मे अपने कर्मलेखक विवेचना करय लगलाह ।

एतबहि मे प्रफुल्ल कमल समान विकसित वदनक छटा सँ हास्य-विकिरण करैत बिजली देवी कोइली जकाँ कुहुकैत ऐलीह - 'वीणा !' तावत सी० सी० मिश्र पर दृष्टि पड़ने चकित हरिणी जकाँ सहमि गेलीह । 'माफ करब, हमरा नहि जानल छल ।' ई कहैत बिजली जहिना बिजली जकाँ आइलि छलीह तहिना जाय लगलीह ।

किन्तु वीणा देवीक सोर पाडने ओ पुनः थमि गेलीह। सी० सी मिश्रक दोसरा दिस एक सोफा पर ओठङ्गि कऽ बैसि गेलीह। दूहू कात सॅं तीव्र विद्युधाराक सम्पर्क मे पड़ि मिश्रजी हठयोग साधि देलन्हि। वीरता पूर्वक त्राटक मुद्रा लगा जमि कऽ बैसि गेलाह और कुम्भक द्वारा प्राणवायु कैं रोकने ध्यान, धारणा, ओ समाधिक अभ्यास करय लगलाह।

किन्तु योग-मार्ग मे विघ्नस्वरुप नवयुवती हिनक समाधि भंग करऽ पर जेना तुलल होथिन्ह।

वीणा परिचय दैत कहलथिन्ह - 'यैह थिकाह हमर नव शिक्षक मि० सी० सी० मिश्रा ' बिजली दूहू हाथ जोड़ि हिनका दिसि ताकि देलथिन्ह।

एतबहि सॅं मिश्रजीक समस्त प्रत्याहार ओ प्राणायाम -पूर्वक जमाओल आसन उखड़ि गेलैन्ह।

ओ लड़खडा़इत स्वर मे बाजि उठलाह - ओहि दिन अहाँक भाषण बहुत सुन्दर भेल रहय।

बिजली कने अंठा कऽ पुछलथिन्ह - से कथी सॅं?

मिश्रजी अपना स्वर कैं स्वाभाविक बनैबाक असफल चेष्टा करैत बजलाह - सभ अंशे सुन्दर। जेहने भाषा, तेहने भाव, तेहने बजबाक चमत्कार।

अन्तिम शब्द मुँह सॅं बहराइत मिश्रजी लाजे कठुआ गेलाह। पुनः सम्हरि कय बजलाह- ओहि भाषण कैं त छपा कय अशिक्षित स्त्री-समाज मे वितरण करक चाही। अहाँ देश-विदेश घुमने छी, तैं एहन व्यापक दृष्टिकोण अछि। किन्तु बाबा वाक्यं प्रमाणम् मानयवाली देहातक स्त्री-वर्ग कैं त ई सभ आइडिया(विचार) नवे बुझि पड़तैन्ह।

बिजली अपना मुस्कुराहट सॅं बिजली चमकबैत बजलीह-ओहि मे कतेक त हमरा गरियैबो करतीह। स्त्रीक बात जाय दियऽ , देहाती पंडितो 'अग्निश्च वायुश्च' भऽ जैताह। जवाब नहि फुरतैन्ह त लगताह हमरा गारि पढ़य। किऐक जे प्राचीन विचारक पंडित जौ नवीन विचारक पुरुष वा स्त्री सॅं परास्त भऽ जाथु त खिसिया कऽ ओहि पुरुष कैं 'नास्तिक' और स्त्री कैं 'कुलटा' कहय लगै छथिन्ह।

तदनन्तर एहि प्रसंग में बड़ी काल धरि मनोरंजक गप्पशप्प होइत रहल। जखन सी० सी० मिश्र चलक हेतु उद्यत भेलाह त वीणा कहलथिन्ह-'पापा' चाय पीबक हेतु बजबै छथि।

मिश्रजी सिटपिटाइत बजलाह-हम त एहि बेरि कऽ चाय नहि पिबैत छी।

वीणा-तखन बैसि कऽ गप्पे करब। हुनका त केओ बतियाय लेल भेटि जैबाक चाहिऐन्ह। सभ गोटे बोस साहेबक कमरा मे अबैत गेलाह, जहाँ ओ चायक टेबुल पर कन्या सभक प्रतीक्षा मे बैसल छलाह।

वीणा कप में चाय परसय लगलीह और बिजली 'प्लेट' मे 'टोस्ट' सजाबय लगलीह। मि० बोस सी० सी० मिश्रक सामने छुरी, काँटा ओ चम्मच बढ़ा देलथिन्ह। किन्तु मिश्रजी कैं छुरी-काँटा सॅं कैबाक पूरा अभ्यास नहि रहैन्ह तैं धन्यवाद-पूर्वक हाथ बारने बैसल रहलाह। दूनू बहिन बापक संग पुरैत गिलहरी जकाँ कुतरय लगलीह। मिश्रजी कैं टुक्कुर-टुक्कुर तकैत देखि बोस साहेब कहलथिन्ह - 'कम सॅं कम फलो त खाउ। ' मिस बिजली अपना हाथ सॅं फलक प्लेट मिश्रजीक आगाँ बढा देलथिन्ह। ओ ओहि मे सॅं एकटा नारंगी उठा कऽ सोहय लगलाह। हुनका बूझि पड़लैन्ह जेना सम्पूर्ण ब्र्ह्माण्ड क रस आबि कय ओहि नारंगी मे केन्द्रीभूत भऽ गेल होइक।

नाश्ता-पानीक बाद बिजली एकाएक अपना रिस्टवाच दिस ताकि बजलीह - पापा ! दू-एक मिनट मे लण्डनक प्रोग्राम शुरू हैतैक। सुनब ?

बिजली उठि कय रेडियोक सेट ठीक करय लगलीह। बोस साहेब चुरुटक धूआँ छोड़ैत तन्मय भऽ अंगरेजी गाना सुनय लगलाह। सी० सी० मिश्र कैं अगुताइत देखि कहलथिन्ह - बेस , ई गाना खतम होमय दियौक, तखन जाएब।

आध घंटाक बाद जखन मिश्रजी अपना होस्टल में पहुँचलाह त बूझि पड़लैन्ह जेना ओ कोनो वस्तु बोस साहेबक कोठी मे छोड़ने आएल होथि।

ताहि दिन सॅं सी० सी० मिश्र नित्य-प्रति बोस महोदयक ओहि ठाम जाय लगलाह ; क्रमशः धाख छुटैत-छुटैत ओ बोस परिवार मे नीक जकाँ घुलि-मिलि गेलाह। रेडियो , सिनेमा, चाय,पिकनिक पार्टी, आदि मे आब ओहो सहयोग देबय लगलथिन्ह।

बसु परिवार सॅं घनिष्ठ सम्पर्क भेने सी० सी० मिश्र मे एक विलक्षण परिवर्त्तन भेलैन्ह जे हुनक कवित्व शक्ति जागि उठलैन्ह। ओ छायावादी कविता बनाबय लगलाह। हुनक भवुकतापूर्ण उद्गार सॅं एक कापी भरि गेलैन्ह।

एक कविताक शीर्षक रहैन्ह - 'वीणा वादिनी'। तकर भाव ई जे - "अहाँ जखन वीणा बजाबय लगै छी , तखन अहाँक अधरपान सॅं मत्त भऽ ओ मूक काष्ठ मुखर भय अपन अपूर्व स्वर-लहरी सॅं चारू दिशा कैं गुंजायमान करऽ लगै अछि। जखन जड़ पदार्थ मे अहाँ एहन प्राण फूकि दैत छी, तखन चेतनक कोन कथा ?"

एक कविता छलैन्ह 'कन्दुक-क्रीड़ा' पर। भाव ई जे - "जखन अहाँ अपन रैकेट लऽ कऽ टेनिसक मैदान मे उतरैत छी त विश्वविजयिनी शक्तिक साकार मूर्त्ति बनि जाइ छि। अहाँक रैकेट-प्रहार सँ अनेक 'बौल' उछिलि जाइत अछि और तकर उछिलिनाइ देखि हजारो हृदय उछिलय लगैत अछि , विश्व थिरकय लगैत अछि और प्रकृति नाचय लगैत अछि।"

एक कविता छलैन्ह - 'रसवर्षिणी'। भाव ई जे - "अहाँ जेम्हरे ताकि दैत छी तेम्हरे रसक वर्षा भऽ जाइत अछि। सम्पूर्ण चराचर कैं अहाँ माधुर्य-रस सँ ओत-प्रोत कऽ दैत छी। अहाँक कोमल आंगुर मे केहन चमत्कार भरल अछि जे ओ सितारक तार संग-संग हृत्तन्त्रीओक तार झंकृत कऽ दैत अछि। ओहि आङ्उरक मधुर स्पर्श सँ ऊनक लच्छा मनोहर फूल बनि जाइत अछि और दूधक फटौन अमृतमय रसमाधुरी।"

एक कविता छलैन्ह - 'जल-विहारिणी।' भाव जे "अहाँ जखन आकण्ठ जल मे मग्न रहैत छी त जलक ऊपर एक श्वेत कमल फुला जाइत अछि। जखन अहाव जल सँ बहराय लगै छि तखन झुंड क झुंड लहराइत कृष्ण सर्पिणी बहराय लगै अछि। जहाँ कनेक और ऊपर होइ छी कि एक जोड़ मनोहर चक्रवाक पानिक ऊपर प्रकट भऽ जाइत अछि।" इत्यादि इत्यादि।

कापीक आदि मे एक पृष्ट पर लिखल रहैन्ह - "जाहि देवीक मूर्त्ति कैं अपना हृदय-मन्दिर मे अहर्निश पूजन करैत रहलो उत्तर , प्रत्यक्षतः फूल-अक्षत नहि चढ़ा सकै छिऐन्ह , तनिका सुकुमार हाथ मे ई कवितावली हम अपना समेत समर्पित करैत छिऐन्ह।"

एक दिन संयोगवश ई गुप्त कापी बिजली देवी कैं कोनो तरहें परि लागि गेलैन्ह। चतुर रमणी कैं ई बुझबा मे भाङ्गठ नहि रहलैन्ह जे सी० सी० मिश्रक अज्ञातनाम्नी प्रेयसी के थिकथिन्ह।

----====----

4. गामक महिला-क्लब

सी० सी० मिश्रक आदेशानुसार महिला-क्लब स्थापित करबाक उद्देश्य सँ रेवतीरमण अपना गामक स्त्रीगण कैं सूचना देबक हेतु विदा भेलाह।

पहिने ज्योतिषिआइनक घर सँ श्रीगणेश कैलन्हि। कहलथिन्ह- बाबी ; आइ हम अपना ओहिठाम सभा करक चाहै छी।

ज्योतिषिआइन विस्मित मुद्रा सँ मुँह बाबि बजलीह-"ऐं! सभा ? एतेक दिन सँ सौराठ मे सभा लगै छलैक। आब सँ तोहरा आङन मे 'सभा' लगतौह?"

रेवतीरमण कहलथिन्ह- नहि, नहि। से सभा नहि। हम चाहै छी जे स्त्रीगण लोकनि एकत्र भय विचार करथि जे देश की थिक.........।

ज्योतिषाइन बीचहि मे लोकैत बजलीह- देश थिक राँटी , मङरौनी, पिलखवाड़, जतय हमर नैहर अछि। तोहर मातृक भदेश मे छौह। तों देशक हाल की बुझबहक?

रेवतीरमण कठिनता मे पड़ि गेलाह। बाजय लगलाह- देशक अर्थ सम्पूर्ण भारत...।

बूढी टोकलथिन्ह- " सम्पूर्ण महाभारत त हमरा अपने आङन मे अछि। अर्थो कइएक बेरि सुनने छिऐक। "भारत मे भरदूलक अंडा लै गजघंट छिपायो।"

एकरा आगाँक पद बूढी़ मन पाड़य लगलीह।

ई देखि रेवतीरमण आगाँ बढ़लाह। बुचकुन चौधरिक ओतय पहुँचलाह। हुनका घरक स्त्रीगण आङन में बैसि अदौरी खोटैत छलथिन्ह। रेवतीरमण कै देखितहिं सभक सभ लत्ते-पत्ते घटियाहे हाथे पड़ा कोनियाँ घर मे नुकैलीह।

रेवतीरमण किंकर्त्तव्यविमूढ भऽ किछु काल ठाढ़ रहलाह। कनेक कालक उपरान्त एक अस्सी वर्षक बूढ़ी जनिक गर्दनि लबि कऽ ठेहुनक समीप पहुँचि गेल रहैन्ह कोनहुना लाठी टेकैत बहरैलीह। पुछलथिन्ह-हौ बाबू, हमरा सुझै अछि नहि। तों के थिकाह?

रेवती पैर छूबि कऽ प्रणाम कैलथिन्ह और अपन परिचय देलथिन्ह। बूढ़ि आशीर्वाद दैत कहलथिन्ह-'तों? मैंयाक पोता! तोरा छठिहारे मे जे हम देखने रहियौ से फेर आइये देखै छिऔह। आब त बड़का टा भऽ गेलह अछि। ऐं! तोरा देखि कऽ पितिआइन सभ किऐक पड़ैलथुन्ह? कहाँ गेलौं ऐ बुच्चुन माय? आउ, जाउत कैं बैसक दियऽ।'

किन्तु बूढ़ीक वारंवार उकसैलो पर कोना बहुआसिन घर सँ टकसबाक नाम नहि लेलेथिन्ह। अन्त मे हारि-दारि कय बूढ़ी अपने कहलथिन्ह-कतेक काल ठाढ़ रहबह? खाट पर बैसि जाह।

किन्तु खाट पर अदौरी पाड़ल रहैक। तैं रेवती ठाढ़े-ठाढ़े कहलथिन्ह - हम एके विशेष प्रयोजन सँ आएल छी।

बूढ़ी कहलथिन्ह-हौ बाबू, त बुचकुन कैं आबय दहुन। बाध गेल छथि।

रेवती कहलथिन्ह-नहि, नहि। हमरा अहीं लोकनि सँ काज अछि।

बूढ़ी आश्चर्यित भऽ बजलीह- हमरा लोकनि सँ? एहन कोन बात छैक?

रेवती कहलथिन्ह-हम गामक स्त्रीगण के आइ सायंकाल अपना ओहिठाम एकट्ठा करक चाहै छिऐन्ह।

किछु काल धरि बूढ़ी बकर-बकर मुँह तकैत रहि गेलीह। पुनः रोषा कय बजलीह-अयँ है! वाप बङ्गौरा पूत चौतार! बड़ सौख तोहर भेलौह अछि जे गामक सभ स्त्री तोरा ओहिठाम जा कऽ एकट्ठा हैतौह! से की छैक ? कोनो नाच छै कि तमाशा छै , जे तोरा आङ्गन मे लोक जा कऽ जमा हैतौह? भोज ने भात ने हरहर गीत! देखू तऽ भला! लालक बेटाक ई सधोरि ! जाह , जाह। हमरा ओहिठाम ई सभ नहि चलतौह। नव-नौतार कैं फुसियबहौ गऽ।

रेवतीरमण मुटठाह भऽ गेलाह। किछु बजबाक साहस नहि पड़लैन्ह। चुपचाप ओहिठाम सँ घसकहि मे अपन कल्याण बुझलन्हि। अतएव बिनु सुपारिये नेने बिदा भऽ गेलाह। आब ओहन जोश नहि रहलैन्ह।

बाट मे भखराइनवालीक आङन पड़लैन्ह। ओ नूड़ लऽ कऽ चिनवार निपैत छलीह। जाउत कैं देखि बजलीह आउ ऐ बाबू! आइ कोना मन पड़ि गेल? कतहु बाट त ने बिसरी गेल?

रेवतीरमण कहलथिन्ह- घर सँ त यैह सपरि कय बिदा भेल छी जे आइ अहाँ लोकनि कैं बजा कऽ अपना ओहिठाम लऽ चली।

भखराइनवाली परिहासपूर्वक बजलीह- आहि! तखन त बलहुँ चिनवार निपै छलहुँ। गै सूर्यमुखी! आइ भानस बन्द। कंटीर बाबू नेओत देमय ऐलथुन्ह अछि।

रेवतीरमण कहलथिन्ह - बेश , ताहू हेतु कोनो छति नहि। किन्तु एखन त दोसर काजक हेतु आएल छी। हमर विचार अछि जे गामक स्त्री-वर्गक एक समिति कायम करी।

भखराइनवाली - ताहि मे की सब हेतैक ?

रे० - यैह जे स्त्रीग्ण सम्मिलित भय इतिहास-भूगोलक ज्ञान प्राप्त करथि , अखबार पढ़ि देशक हाल बूझथि, कला-कौशल सीखथि, स्वास्थ्य-सुधारक हेतु खेलकूद ओ कसरत करै जाथि।

कसरतक नाम सुनितहिं सूर्यमुखी खी-खी-खी-खी कय हँसय लागलि। भखराइनवाली बिहुँसैत बजलीह - ऐ बाबू ! त पहिने अपने घर सँ किऐक ने सुरु करै छिऐक ? हमरो लोकनि देखबैक तखन ने सिखबैक।

रे० - ई सभ एक गोटाक कैने नहि होइ छैक। जौं सभ केओ मिलि कय चाहै जायब तखने भऽ सकै अछि। तैं अहूँक ओहिठाम आएल छी।

भ० - अहूँ तमाशा करै छी। चारि नेनाक माय भऽ कऽ आब हम दण्ड करब गऽ ? अहाँ कऽ हम की जबाब दियऽ ? एखन नेना छी।

रे० - अहाँ लोकनि कैं सभ बात मे हँसिए रहै अछि। व्यायाम प्रत्येक अवस्था मे हितकर होइ छैक। और स्त्रीगण कतेक तरहक खेल खेलि सकै छथि।

भ० - कोन-कोन खेल अहाँ स्त्रीगण कैं खेलाबक चाहै छिऐन्ह ? कनेक हमहूँ तँ सुनियैक।

रे० - खेल त बहूत प्रकारक छैक - जेना टेनिस, बैडमिंटन, पिंगपौंग।

भ० - ऐ बाबू ! ई सभ त किछु ने बुझलिऐक। 'टेनिस' की कहबै छैक ?

आब रेवतीरमण मुश्किल मे पड़ि गेलाह। बजलाह - कोना कऽ बुझाउ ? रैकेट लऽ कऽ गेन कैं मारल जाइ छैक।

भ० - ओ कोन अपराध कैने रहै छैक जे ओकरा मारल जाइ छैक ?

रे० - अहाँ त सभ बात हँसिए मे उड़ा दैत छी। लकड़ीक बेंट मे ताँतिक मजबूत तार कसल रहै छैक। ताहि पर गेन रोकि कऽ मारय पड़ैत छैक।

भ० - ताँतिक तार पर गेन रोकि कऽ मारने कोन परगन्ना भेटि जाइ छैक ?

रे० - एहि सँ बाँहि और कलाइ मजबूत होइ छै।

भ० - जाँत मूसरवाली सँ कि टेनिसवालीक पहुंँचा बेशी सक्कत होइ छैक ?

रे० - गेन मारबा मे बहुत चुमकीक काज पड़ै छैक। ताहि सॅं शरीर मे फुर्ती बढ़ै छैक। सन्ध्या समय मैदानक खुलता हवा देह मे लगै छैक।

भ०- ऐ बाबू! 'मन उद्गार त गाबी गीत! निश्चिन्त रहने सब किछु नीक लगै छैक। हमरा सभ कैं त एक पहर दिने सॅं रतुका चिन्ता व्याप्त भऽ जाइ अछि। जारन-काठी सुखाएल अछि कि नहि? अन्न-तीमनक ओरिआओन अछि कि नहि ? पेटक धन्धा मे जे लगै छी से आधा राति तक जोताएल रहै छी। साँझ कऽ चाउर छाँटय सॅं, दालि दरड़य सॅं, चिनवार नीपय सॅं, चूल्हि फुँकय सॅं, जौं छुट्टी होय तखन ने हमहूँ मैदानक हवा खाइ गऽ। हमर सभक जन्म त एही आइ पाइ मे बीति जाइत अछि। जे भागवन्त अछि-ठहलुआ-भनसीया रखने अछि , तकरा हेतु ई सभ खेल छैक। हमरा सभ कैं ओहन तपस्या कहाँ?

रेवतीरमण मन मे कहय लगलाह - ई त नीक जकाँ बना कऽ धूसलक। वास्तव मे एतय टेनिसक प्रस्ताव करब भारी बुड़ित्व भेल। आब जतेक ई सब बाजब ततेक अधीक हुथाइ मे पड़ब'।

ई विचारि रेवतीरमण ओहिठाम सॅं सोझे अपना घर ऐलाह। बड़कागामवाली कैं सभ समाचार कहि सुनौलथिन्ह। ओ कहलथिन्ह - अहाँ विद्या मे त हमरा सॅं वेशी छी, किन्तु बुद्धि हमरा सॅं सीखल करु। स्त्रीगणक सभा देखबाक हो त एक दिन और थम्हि जाउ। काल्हि अपना आङ्गन मे पूजा हैत, सभ कैं हँकार पड़तैक। तखन देखबैक जे 'झोंटहा पञ्च' क मीटिङ्ग' मे की सब होइ छैक !

आइ लालकाकीक आङ्गन मे बेश छहर-महर भऽ रहल छैन्ह। झुनिया माय गोबर लऽ कऽ आङ्गन - ओसारा निपने अछि। लालकाकी पूजाक चौकी धो कऽ ओहि पर पिठार सॅं अरिपन दऽ रहल छथि। ढुनमुन काकी बाती बाँटि रहल छथि। बड़कागामवाली पान लगा रहल छथि। बुच्चीदाइ हुच्ची मे छथि।

लालकका सहल छथि। क्षुधाविस्मरणार्थ कदली मण्डप कैं कमलक फूल सॅं सजैबा मे चित्त बहटौने छथि। पुरोहित नमोनाथ झा जनउ गेठिया रहल छथि। कंटीर लाइट लेसबा मे लागल छथि। भोलानाथ शीतलप्रसादक हेतु गुड़ घोरि रहल छथि। बटुकजी केरा सोहै छथि।

ढोल-पिपहीक ध्वनि कर्णगोचर होइत झुंडक झुंड गीतगाइन हँकार पूरक हेतु लालकाकीक आङ्गन मे जुटय लगलीह। देखैत-देखैत कच्चे-बच्चे ओ जनीजातक जमात सॅं सौंसे ओसारा भरि गेल। एहि दल मे युवती , प्रौढा, वृद्धा, बालिका, सभ सम्मिलित छलिह। युवती-यूथ मे मुख्यतः गामक ससुरवास बेटी यथा सरयूदाइ , कामेश्वरीदाइ, आदि। प्रौढा वर्ग मे आवेशरानी , पुहुपरानी, परिहारपुर वाली , भखराइनवाली प्रभृति। वृद्धाक कोटि मे

ज्योतिषाइन, दुलारमनि पिउसी, रामवतीदाइ आदि। बालिकावृन्द मे सूर्यमुखी , फुलमतिया, पलटी इत्यादि। लालकाकी यथायोग्य आगत-स्वागत करबा मे लगलीह।

सम्पूर्ण समाज जुटि गेला पर लालकाकी बजलीह - ऐ दाई सभ ! हिनके लोकनिक पुण्य-प्रताप सॅं आइ एहन दिन भेल अछि। कबुला छल जे जमायक समाचार पौला पर भगवानक पूजा करबैन्ह। से मनोरथ पूर भेल। आब आशीर्वाद देथुन्ह जे बुच्चीदाइ कैं सोहाग-भाग होइन्ह।

रामवती दाइ पुछलथिन्ह - जमाय कतय छथिन्ह ?

लालकाकी - एखन काशी मे छथि।

पुहुपरानी - की सभ लिखलथिन्ह अछि ?

लाल०- सार कैं लिखलन्हि अछि जे अपना बहिन कैं खूब लिखाउ-पढ़ाउ तखन हम आयब।

पहिहारपुरवाली - धन्य भाग ! एतबा दिन पर जा कऽ भला सासुरक छोह त भेलैन्ह। आखि अपना लोकक ममता कतहु नहि होइक !

एक जमीदारनी बजलीह टिहुकि कय बजलीह - हून जैतन कहाँ ? 'रूसल जमैया करतन की ? धीया छोड़ कऽ लेतन की ?'

लालकाकी बजलीह - ऐ दाइ ! आब हुनका मन योग्य लिखनाइ-पढ़नाइ छौड़ि कैं आवि जाइक तखन ने देवता सन्तुष्ट होथि। हमरो लोकनि त लिखलि-पढ़लि नहिए छी। फेर एतेक दिन वास भेल कि नहि ?

रामवती - हाँ ए! वेशी लिखि-पढ़ि कऽ कि बुचिया कैं कतहु नौकरी करबाक छैक?

पुहुपरानी- से ई की कहै छथिन्ह? हमरा नैहर मे त आब सभ छौंड़ी स्कूल जाय लगलैक अछि। जे पढ़ैत अछि से कि नौकरीएक द्वारे ?

रामवतीदाइ - ऐ पुहुपरानी ! अपना नैहरक बेशी जमौड़ा नहि करू। 'देखल हे गौरा नैहर तोर !' अहाँक गामक छौड़ी सभ कैं देखने छी सिमरियाघाट मे। सोलह-सोलह वर्षक पकठोसल कुमारि सभ जुआएल पोठा माछ जकाँ वेश चाकर-चौरस, भरल-पूरल। गट्टा सन माउगि और कान्हे पर सॅं ऑंचर देने ! ओ छौड़ी सभ जे ने करय से आश्चर्य !

पुहुपरानी - से कि हिनका गाम मे तेहन कुमारि नहि छथिन्ह ? कतेक त तेहन छथिन्ह जनिका गुड़ कैबाक वयस बीति कऽ आद गुड़ कैबाक वयस भेल जाइ छैन्ह।

कामेश्वरी दाइक छोट बहिन राजेश्वरी चौदह वर्षक कुमारि छलथिन्ह। हृष्टपुष्ट शरीर में भादवक नदी जकाँ यौवन उमड़ल छलैन्ह। कामेश्वरी दाइ टिरुसि कय बजलीह - हँ , राजेश्वरी त एखन नेना खेलबैत रहैत ! और ओकरा सँ छौ-छौ मास जेठ जे कियाएल छौड़ी सभ छैक तकरा सभ कैं एखन घघरीए पहिरबाक वयस छैक !

परिहारपुर वाली कऽ जैधी बिलटी सनटिटही सन सुखाएल छलैक। वयस मे राजेश्वरी सँ जेठ भेलो पर देखबा मे दसे वर्षक लगै छलि। ओ व्यंगक आशय बूझि बजलीह - ऐ दाइ ! नीक घर-वर नहि भेटैत छैक त कतय कऽ फेकि दिऔक ? देखऽ मे खियौटी लागौ, किन्तु वयस त अवश्ये भेलैक अछि। नहि त एकरा सँ तीन वर्षक छोट जगदम्बा कैं द्विरागमनक दिन कोना मनाओल गेलैक ?

रामवती दाइ कैं जगदम्बा माय सँ काट छलैन्ह। एम्हर-ओम्हर ताकि कय बजलीह - ओहि छौड़ीक नाम नहि लियऽ। अरे बाप रे बाप ! एहन कलियुगहि छौड़ी ! सासुर सँ दही-माछक भार लऽ कऽ जे भरिया आएल रहैक तकरा लेल अपने हाथ सँ तरकारी तरैत देखलिऐक ! आइकाल्हुक दुरगमनियाँ छौड़ी सभ त ससुरवासो बेटीक कान कटै छैक। 'उपरक मने दाइ गे दाइ। तरक मने सासुर जाइ !'

सरयू दाइ कोनो अज्ञात कारणें अपना सासुर सँ बिरुझल छलीह। बजलीह - हम त दू वर्ष ओतय (सासुर) बसि आएल छी। तैयो कि एना करबैक ? कोनो कोढ़िया ने आबौ ! हम कि अपना हाथ सँ भानस कऽ कऽ खोएबैक गऽ ? जरलाहा कैं खोरनाठ ने लगा देबैक !

विवाहिता स्त्रीक मुँह सँ सासुरक विषय मे एहन शब्द सुनि प्रेमगर्विता तारा दाइ कनेक छवि कऽ कऽ सिहरि उठलीह। ताहि सँ हुनक ईयर-रिंग चमकि गेलैन्ह।

तारा दाइक ईयररिंग देखि भखराइनवाली बजलीह - बड़ बढ़ियाँ गढ़नि छैक ! कतेक बनल थिक ऐ दाइ !

तारा दाइ कनेक अगराइत उत्तर देलथिन्ह - ई त ओतुक्के (सासुरक) गढ़ल छैक ! मुदा बड़ भारी छैक। आब तोड़ाकऽ दोसर बनबैबैक। आब कि भारी पहिरक फैशन छैक ?

परिहारपुरवाली क गर मे बेश मोट सूति रहैन्ह, प्रायः बीस भरि सँ कम नहि। हुनका अपने पर आक्षेप बूझि पड़लैन्ह। ओहो कटाक्ष करैत बजलीह - हँ , आब त सभ वस्तु हल्लुके नीक लगै छैक। भारी कि केओ चाहैत अछि ?

भखराइनवाली मखौलिया छलीह। बजलीह - ऐ दाइ ! तखन त कोनो-कोनो कैं भारी कठिन।

पुहुपरानीक स्वामी बेश मोट-डाँट भारी-भरकम छलथिन्ह। तुनकि कय बजलीह - 'जकरा देह मे मांस नहि, सेहो कोनो लोक थिक ? (तारा दिस तकैत) खाली हड्डीए-हड्डी हाथ पैरक सीर बहार-आँखि धँसल, गाल पचकल करांकुल सन बगाय एक बेरि फूकि दैक त खसि पड़य, एहन कोन काजक ?'

भखराइनवाली बिहुँसि कय बजलीह - ऐ बहुरिया ! अहाँ कनेक्के मे देखार भऽ गेलहुँ ,, बात चललैक गहना पर, अहाँ लऽ ऐलहुँ पुरुष पर !

तारा दाइक स्वामी कालेज मे पढ़ै छलथिन्ह। अत्यन्त दुब्बर-पातर। पुहुपरानीक सभटा विशेषण हिनका पर चरितार्थ होइत छलैन्ह। अतएव तारा दाइ मनहिमन कट कऽ रहि गेलीह। हुनक मनोभाव बुझि आवेशरानी पक्ष लैत बजलथिन्ह - से जे किछु कहथु, लेकिन मोट लोक कोनो लोक होइ अछि ? लदगोबर जकाँ थुलथुल करैत- पातिल सन धोधि बाहर कैने - फों-फों करैत - मोटाइ सँ फटैत - चारि धूर मे पसरि कऽ बैसल- एहन भुसखाड़ सन देह भेनाइ भारी पापक फल !

अन्तिम वाक्य दुलारमनि पिउसिक कान मे पड़लैन्ह। स्थूलकाय भेलाक कारणे सभ सँ पसरि कऽ वैह बैसलि छलीह। उपर्युक्त शब्द सुनैत देरी ओ फुफकार छोडैत आवेशरानी पर छुटलीह - 'अयँ ऐ ! हमरा धोधि अछि तँ अहाँक आँखि मे किएक गड़ैय ? गहकी कैं घेघ सौदागर कैं बेत्था ? हमर मोटाइ सँ फाटल जाइ छी त अहाँक की फटै अछि ? की दऽ कहै छै जे तेल जरै तेली कें . . . .!'

दुलारमनि पिउसीक गर्जन-तर्जन सूनि लालकाकी दौड़ल ऐलीह - 'ऐं ! की भेलैन्ह अछि बड़की दाइ ?

दुलारमनि पिउसी ठोहरा कऽ बजलीह - 'हैत की ? अहाँ बजा कऽ हमरा गंजन करबैत छी। हम पसरि कऽ चारि गोटाक जगह छेकि कऽ बैसै छी , त हमरा हँकार किएक देल ? एक त हमरा आबक मन नहि छल , जबर्दस्ती पलटीक माय धैने ऐलीह। और एतय अबितहिं बैसलहुँ त थुक्कम-फज्जति होमय लागल। की कहै छैक जे 'नरको मे ठेलमठेला !'

एतबहि मे बड़े टहंकार सँ पूजाक गीत शुरु भऽ गेल -

नाचौंगी, मैं नाचौंगी। रघुनन्दन के आगे नाचौंगी॥

पूजा आरती समाप्त भेला पर जखन स्त्रीगण गिलास मे प्रसाद लऽ कऽ जाय पर उद्यत भेलीह , तखन रेवतीरमण आबि कऽ कहलथिन्ह - 'यदि दस मिनट समय भेटय त हम किछु निवेदन करी।' तदुपरान्त ओ स्त्री-शिक्षा पर एक छोट-मोट लेक्चर देमय लगलाह। इतिहास भूगोलक उपयोगिता बुझबय लगलथिन्ह- कतेको एहन छथि जनिका दिशाक ठेकान नहि , नदीक ज्ञान

नहि, जंगल पहाड़क बोध नहि। जिनका शौक होइन्ह , से हमरा पास अबिहथि- हम नक्शा देखा देबैन्ह। "इत्यादि इत्यादि।

यावत धरि रेवतीरमण बजैत रहलाह तावत धरि स्त्रीगण अनासक्त योगीक समान सुनैत रहलीह। हुनका चुप्प होइतहि सभ केओ अपन-अपन गिलास लय उठि बिदा भेलीह। रेवतीरमण उत्तरक प्रत्याशा मे ठाढ़े रहलाह, तावत सभा उठि गेल।

देहरि लग पहुँचैत-पहुँचैत एक बूढ़ी बजलीह- सत्यनारायणक पूजा मे त ई विधि ककरो आङन होइत नहि देखने छलिऐक। तेल-सुपारी बदला मे आब यैह सभ चललैक अछि। जीबी त की की ने देखी!

दोसर बूढ़ी बजलीह- हः हः! हमरा त अकछा कऽ छोड़ि देलक। होइ छल कखन चुप्प होएत। मारि अल्ल-बल्ल हँकने जाइ छल। हम त किच्छु नहि बुझलिऐक।

एक प्रौढ़ा बजलीह-ई नहि बुझलथिन्ह। हम त बुझलिऐक। हमरा लोकनि दिसा-नदीक ठेकान नहि अछि से ओ सिखा देताह! एहि सँ भारी बात आब केहन हैतैक ? हम त काल्हि आबि कऽ माय कैं उपराग देबैन्ह।

दोसर युवती बजलीह-ताहि पर सधोरि केहन जे जकरा सीखक शौक होइक से हुनके पास जाओ। माये-बहिन सँ मसखरी!

एहि तरहें भरि बाट रेवतीरमणक समालोचना होइत गेलैन्ह।

घर में बड़कागामवाली कहलथिन्ह- 'की? गमैया गोष्ठी केहन होइ छैक से आब बुझलिऐक ? अहाँ चलल छलहुँ हिनका सभक क्लब खोलय! दूनू सार-बहनोइक बुद्धि एके रंग भेल ? यदि बुच्ची दाइ कैं नचैबाक इच्छा हो, त बनारसे लऽ जैयौन्ह। एहिठाम ई सभ नहि चलत।

महिला सभाक प्रथम अधिवेशनक रंग देखि रेवतीरमण कैं पुनः द्वितीय अधिवेशन करबाक साहस नहि परलैन्ह।

अन्ततः सर्वसम्मति सँ ई प्रस्ताव पास भेल जे रेवतीरमण बहिनोइक मन टोबऽक हेतु काशी जाथि।

----===----

5. 'रोमांस' अन्त

बिजली देखलन्हि जे 'एक अनाड़ी फतिङ्गा मॅंडरा कऽ जान देबा पर वृत्त अछि। दया कऽ कऽ एकरा निर्दयतापूर्वक झाड़ि देवक चाही, नहि त ई झरकि कय जरि जायत।

एक दिन बिजली सी० सी० मिश्र कैं अपना गाड़ी मे हवा खोआबक हेतु बहुत दूर लऽ गेलथिन्ह। मिश्र जी हवागाड़ी मे बैसल मनोरथक हवाइ जहाज पर उड़य लगलाह।

एकाएक बिजली कहलथिन्ह - अहाँक कविताक कापी हमरा हाथ लागि गेल अछि। यदि ओकर यथार्थ अधिकारिणी केओ दोसरि हो, त हम तकरे सौंपि दिऐक।

सी० सी० मिश्र एके संग भय , लज्जा, विस्मय ओ आनन्द सॅं आवाक रहि गेलाह मन मे एलैन्ह जे - 'ओहन-ओहन असंख्य कापी अहाँक चरण रेणु पर निछाउर अछि। अहाँक समक्ष हमर प्रेम कविताक नायिका के भऽ सकै अछि ?'

किन्तु एतेक कहबाक साहस नहि भेलैन्ह। किछु लजायल सन भऽ कऽ बजलाह - 'ओ अहाँ कैं सादर समर्पित अछि।'

बिजली बजलीह - हम बुझै छी जे ओ कविता सभ अहाँ हमरे लक्ष्य कऽ कऽ लिखने छी।

सी० सी० मिश्र कैं अपना सफाइक अपेक्षा अभियोगे मे अधिक रस भेटय लगलैन्ह ओ "मौनं स्वीकार लक्षणम्" सॅं अपन दोष कबूल करय लगलाह।

बिजली हुनका मुँह दिस तकैत पुछलथिन्ह - हम ई जानक चाहै छी जे अहाँक प्रेमोद्गार केवल सोडावाटरक फैन थिक अथवा ओहि मे किछु ठोस सत्यो अछि ?

सी० सी० मिश्र मिमिआइत बाजय लगलाह - एकर साक्षी त अन्तर्यामी परमेश्वरे छथि। यदि हृदय चीरि कऽ देखाओल जा सकितैक त सत्यासत्यक प्रमाण भेटि जाइत।

बिजली पूछि बैसलथिन्ह - अहाँ कैं हमरा प्रति प्रेम अछि कि वासना ?

युवतीक एहन अद्भुत स्पष्टवादिता देखि सी० सी० मिश्र स्तम्भित रहि गेलाह। सिद्धान्त वादीक सुर मे बजलाह - हम त अहाँक प्रति ओहने शुद्ध आध्यात्मिक प्रेम रखै छी जेहन आराध्य देवताक पवित्र मूर्त्ति पर पूजक कैं श्रद्धा रहैत छैक। यदि हमर भावना मे भौतिक विषय-वासना लेशोमात्र रहैत त अहाँक समीप अपन कलुषित छाया नहि पड़य दितौंह।

युवती नारी हिनका गर्वोक्ति पर मुस्कुराइत एक तीक्ष्ण कटाक्ष फेकि कऽ पुछलथिन्ह - अहाँ सरिपों-सरिपों फरिछा कऽ कहू त जे अहाँ केवल हमरा गुणे पर मुग्ध छी कि हमरा रूपो यौवन पर लुब्ध छी ?

सी० सी० मिश्र कैं एहन कठिन रमणी सँ भेंट नहि छलैन्ह। ओ अपन आदर्शवादक रक्षा करैत बजलाह - आध्यात्मिक प्रेम मे त शारिरिक रूप-तृष्णा नहि रहैत छैक। यथार्थ सौन्दर्योपासक गुणक सौन्दर्य देखैत अछि , शरीरक नहि।

बिजली चमकि कय पुछलथिन्ह - हमरा मे एहन कोन गुण भरल अछि जे उपासना करऽ योग्य हो ?

सी० सी० मिश्र - सभटा त तेहने गुण भरल अछि - विद्या , बुद्धि, संस्कार, उच्च विचार, सभ्यता, कला कौशल, सरसता, मधुरता, कोमलता, शालीनता ....।

बिजली देवी हठात मोटर रोकि कय कहलथिन्ह - चलू , सामने गंगा तट पर बैसि कय बतियाइ जाएब।

घाट पर बैसि कय बिजली कहय लगलथिन्ह - हँ , त आब एक-एक गुणक परीक्षा होबक चाही।

"हम एम० ए० मे पढ़ैत छी; धाराप्रवाह अंगरेजी बाजि लैत छी। किन्तु ई त कोनो अलौकिक गुण नहि। हजारो पुरुष धुरझाड अँग्रेजी मे लेक्चर दैत अछि। एहि बेरि कालेजक डिवेट मे हम फर्स्ट भेलहुँ अछि। यदि एही कारणें अहाँ हमरा फोटो मे फ्रेम लगा कऽ राखै चाहै छी , त संगहि संग ओकर सभक फोटो किऐक ने संग्रह करैत छी , जे सभ आन-आन साल डिवेट मे फर्स्ट भेल छल ?"

यदि अहाँ संस्कृति तथा समुन्नत विचारक पूजा करैत होइ, त एक सँ एक महानुभाव दार्शनिक विद्वान अपने विश्वविद्यालय मे भेटि जैताह जनिका चरण पर अहाँ अपना भक्तिक अर्घ्य समर्पित कऽ सकैत छिऐन्ह।

'हमर शिल्पकला देखि कय अहाँ हमर प्रशंसक भेल छी। किन्तु यदि अहाँ कला-पारखी छी त ओहि बूढ़ कारीगरक लग किऐक नहि जाइ छी जे दीप लेसि कय आधा राति धरि सलमा-

सितारा और कसीदाक काज मे अपन आँखि फोड़ैत रहै अछि ? एही शहर मे सैकड़ो एहन दर्जी भेटत जे कटाइ-सिलाइ मे हमरा सँ कत्तहु बेशी सिद्धहस्त हैत। किन्तु अहाँ ओकरा तारीफ मे एकोटा गजल कहियो बनौलिऐक अछि ?'

'हमर बनाओल रसगुल्ला पर अहाँ कविता रचने छी। 'जनिका मृदुल करस्पर्श सँ छेना मे एतेक रस-माधुर्य आबि जाइत अछि जे स्वयं केहन मधुर ओ रसमयी होइतीह।" किन्तु एही नुक्कड पर दमड़ी साहु हलुआइ सब दिन कऽ भरि-भरि कठौत रसगुल्ला तैयार करै अछि। अहाँ ओकरो हाथक प्रशंसा मे तेहने कविता किएक नहि बनौने छिऐक ?

'हमर विनोद-प्रियता तथा क्रीड़ा-कौतुक देखितैं अहाँ कैं 'निर्झरणी, सरिता बुलबुल, स्काइ लार्क' (एक पक्षी) प्रभृति मन पड़य लगैत अछि। किन्तु सामने जे मलाहक धिया-पुता सभ ओतीकाल सँ पानि मे छप-छप करैत चुभुकि रहल अछि तकरा दिस अहाँ कनडेरियो नहि तकैत छिऐक, से किऐक ?'

'हमरा साइकिल पर अहाँ कविता बनौने छी जे 'ओहि पहिया सँ पिचाइयो गेने लोक कैं सायुज्य मुक्ति प्राप्त भऽ जैतैक। किन्तु जे साइकिल-रिक्सावाला दू-दू गोटा कैं खिंचैत दिन-राति साइकिल चलबैत अछि , तकरा सँ कनेक धक्का लगैत देरी अहाँक भौंह तनि जाइत अछि। तकर की कारण ?'

हमरा मोटर चलबैत देखि अहाँ 'विद्युतगामिनी' कविता बनौने छी। किन्तु ओम्हर देखू। एक बड़का दाढ़ीवाला ड्राइवर ओहन ऊभड़-खाभड़ सड़क पर भूत जकाँ बेतहाशा हँकने जा रहल अछि। ओकरा पर अहाँ 'झंझावातगामी' कविता किएक नहि बनबैत छिऐक ?

'हम टेनिस खेलैबा काल अहाँक दृष्टि मे 'विश्वविजयिनी' प्रतीत होइ छी। किन्तु अहाँक अपने क्लब मे एक सँ एक धुरंधर खेलाड़ी अछि , जकरा आगाँ हम नवसिखुआ जकाँ लागब। ओकरा सभक बाँहि अहाँ किऐक ने पूजैत छिऐक ?'

हमर 'हारमोनियम' अहाँक मन हरि लैत अछि , 'जलतरंग' हृदय मे तरंग उठा दैत अछि , और 'बेहाला' बेहाल कऽ दैत अछि। किन्तु एही मोहल्ला मे उस्ताद वशीर खाँ हरएक बाजा बजैबा मे प्रवीण अछि। ओ हमरा भरि जन्म सिखा सकत। किन्तु ओकर वाद्यकला अहाँक हृत्तन्त्रीक तार कैं कहियो तेना भऽ कऽ झंकृत नहि कऽ सकल जे अहाँ ओकरा पर 'वीणावादक' कविता बनबितिऐक ! से किऐक ?

हमर नृत्यकला देखि अहाँक मन-मयूर नाचय लगैत अछि। किन्तु चौक पर एक अस्सी वर्षक कत्थक अछि जे एही कलाक उपासना मे अपन जन्म व्यतीत कैने अछि। ओकर दाढ़ी मोछ पाकि कय सऽन सन उज्जर भऽ गेलैक अछि। तथापि नाचय काल ओ चुमकी देखबैत अछि

से नवयुवकक कान कटैत अछि। ओहि बूढ़क अङ्ग सञ्चालन देखि कऽ अहाँक तेहने भावोद्दीपन किऐक नहि होइत अछि ?

'क्षमा करब ! असल बात ई छैक जे अहाँ लोकनि केवल गुण पर नहि लोभाइत छी , लोभाइत छी नारीक सेक्स अपील (यौन आकर्षण) पर ! युवती अभिनेत्री कैं थिरकैत देखि अहाँ कैं होइ अछि जे तकिते रही। किन्तु एक बूढ़ नर्त्तक जौ ओहिना थिरकऽ लागय त अहाँ कैं हैत जे ई कखन सामने सँ हटत ! हमरा हाथ मे रैकेट देखि अहाँ लट्टू भऽ जाइ छी , किन्तु वैह रैकेट कोनो पुरुषक हाथ मे देखि धन सन ! असल मे टेनिसक बॉल अहाँक मन कैं नहि नचबै अछि, नचबै अछि कोनो दोसर वस्तु !'

जाहि-जाहि गुणक अहाँ ओतेक बखानि कैने छी , से सभ गुण अछैत यदि हम दाढ़ी-मोछ वाला पुरुष बनि जाइ त अहाँक सभटा रोमांस (रसिकता) तहिना विलीन भऽ जाएत जेना मोहिनी क लीला पर मोहित महादेव कैं विष्णुक असली परिचय भेटि गेने सकल श्रृंगार-भावना तिरोहित भऽ गेलैन्ह।

अहाँक ई 'रोमांस' तावते धरि अछि यावत धरि हमर रूप-यौवन देखि-देखि अहाँ सिहाइत छी। हमर जे-जे गुण अहाँ कैं रिझा रहल अछि सैह सभ गुण युवावस्था ढरि गेने अहाँ कैं खिझाबय लागत। तखन ने हमर नाच अहाँ कैं सोहाएत , ने टेनिस। यदि काल्हिए कोनो दैवी दुर्घटना वा भयङ्कर रोग सँ शरीर विकृत और अपरूप भऽ जाय , त फेरि हमर कतबो बीन बजौने अहाँ कैं हमरा मे 'वीणा-पाणि सरस्वती' क भान नहि हैत और हमर कतबो नचने-कछने अहाँ कैं 'शैली' तथा 'कीट्स' क पंक्ति नहि मन पड़त।

अहाँ लोकनिक आकर्षणक केन्द्र-बिन्दु रहै अछि नारीक यौवन। ओ चुम्बक जकाँ अहाँ लोकनिक हृदय कैं खिचि लैत अछि। युवतीक समक्ष होइतहि अहाँ लोकनिक आँखि पर रंगीन चश्मा लागि जाइत अछि, जाहि मे हरियरे हरियर सुझैत अछि। षोडशीक प्रत्येक कार्य अहाँ लोकनि कैं 'पद्यमय ' बूझि पडैत अछि। ओ जैह करै अछि से अहाँ लोकनिक दृष्टि मे कला बनि जाइत अछि !

तरुणी जौं झटकि कय चलति त अहाँ लोकनि कहबैक - अहा केहन चंचला जौं नहूँ- नहूँ चललि त अहा ! की राजहंसीक समान मन्थर गति ! जौं मुस्काइलि त 'बिजली चमकि गेल' ; जौं खिलखिला उठलि त 'अमृत झहरि गेल' जौं काननि त मोती झड़य लागल ! जौं बाजलि त 'मिश्री घोराय लागल ! ' ओ गँओ-गँओ सँ बाजति त अहाँ ओकर 'शोखी' पर फिदा भऽ जाएब। यदि ओ बनलि-ठनलि रहती त अहाँ ओकर 'फैशन' पर लट्टू होयब ; यदि मामूली तरहें रहति त अहाँ ओकर 'सरसता' पर बिका जाएब ! यदि ओ सोझ भऽ कऽ अंगैठी करति त अहाँ ओकर 'अल्हरता' पर मरब; यदि कने टेढ़ भऽ कऽ अंगैठी करति त अहाँ ओकर 'पोज'

पर जान देब ! यदि लाज कैलक त 'नाजवाली' कहाओति; लाज नहि कैलक त 'स्मार्ट' कहाओति ! सहमलि रहलि त 'सुशीला' भेलि; निडर रहलि त 'वीराङ्गना' भेलि।

नवयौवना कड़ा नजरि सँ तकै अछि त शान कहबैत छैक ; तिनुकि कय बजैत अछि त 'स्पिरिट' कहबैत छैक ! जौं घाटक सीढ़ी पर खटाखट उतरि गेल त 'तेजी' भेलैक, जौं बिलमि-बिलमि उतरलि त 'नजाकत' भेलैक! जौं निहुरि कऽ चलति त 'अदा' कहौतैक; जौं सोझ भऽ कऽ चलति त 'बोल्डनेस' कहौतैक! गर्ल'क पाछाँ हजारो युवक 'गरल' पीबक हेतु तैयार रहै छथि। हिनके लोकनि पर बङ्गला मे एक पैरोडी बनल छैन्ह-

"आमार मृत्यू हय यदि गर्ल स्कूलेर मोटर तलाय।"

षोडशी पानियो भरैत रहति त कवि कैं कविताक मसाला भेटि जैतैन्ह। ओ स्नान कऽ कऽ बहराइति त चित्रकार कैं तूलिकाक सामग्री भेटि जैतैन्ह। ओ रेल में सफर करति त पुरुष कैं नेत्र-रंजनक साधन भेटि जाइ छैन्ह। ओ जौं कनितो रहै अछि त रसिक पुरुष कैं ओहि मे करुण रागिणीक रस भेटि जाइ छैन्ह। ओकर पसेनो मे हुनका कस्तूरीक गन्ध भेटै छैन्ह। यदि ओ माथक दर्द सँ बेचैनो रहति तैयो विज्ञापनदाता कैं चित्रक 'मोडेल' भेटि जैतैन्ह। युवती की भेलि, पुरुषक खेलौना भेलि!

'युवती जे किछु करै अछि से ओकरा छजै छैक। यौवन काल मे सभ बात कटगर लगे छैक। किन्तु वयस ढरने सैह सभ अनकच्छल बूझि पड़ै छैक। यौवनवती कैं सौ खून माफ ; वृद्धा कैं एकोटा नहि। रसलोलूप पुरुष कैं गतयौवना पत्निक 'शरबत' सँ बेशी नवयौवना प्रेमिकाक 'शरवत् वचन' मे रस भेटैत छैन्ह।

सुन्दरी युवतीक पैर सँ पैर पिचा गेने कतेको पुरुष ओहि अल्हड़ता कैं अपन भाग्य कऽ कऽ बुझताह, किन्तु वैह अल्हड़पना वृद्धा स्त्री सँ भेने तुरंत उपदेश देबय लगलथिन्ह - 'बूढ़ी ! केहन अबढङ्गाहि छह ! सुझै छौह नहि ?' युवती उघार-पुघार भऽ कऽ सुतल रहतीह त 'निर्विकार' कहौतीह और वृद्धा ओना रहतीह त 'अपचेष्ट' कहौतीह ! यदि वृद्धा खिसिया कऽ बजलीह त 'खबीसनी' कहौतीह। लेकिन तरुणी तमसा कऽ बजतीह त 'तेजस्विनी' कहौतीह ; जे युवावस्था क 'मस्ती' से वृद्धावस्थाक 'पागलपन' ! जे तरुणीक 'भोलापन' से वृद्धाक 'बुड़िबकइ' ! जे युवतीक 'विलाप' से बुढ़ियाक 'भभटपन' !

साधारण सँ साधारण लूरि युवती मे देखि कऽ पुरुष-वर्ग कैं 'कला' बूझि पड़ैत छैन्ह। राड़-रोहिया सभ दिन राति भादवक भरल गंगा हेलि कऽ पार करैत रहै अछि तकर त मोजर नहि , किन्तु जौं एकटा तरुणी हेलि कऽ कनेक दूर गेलीह त हुनकर अखबार मे छपि जाइ छैन्ह।

मलाह सभ बड़का-बड़का टा महाजाल बुनैत अछि तकर त कोनो चर्चा नहि , किन्तु युवती एक बीत डोराक जाली बुनलन्हि त प्रदर्शनी मे राखल जाइत छैन्ह !

पुरुष बुझै छथि जे ओ कोनो तरुणी पर एहि द्वारे मुग्ध जे ओकरा मे गुण छैक। किन्तु हम बुझैत छी जे पुरुष ओहि गुण पर एहि द्वारे मुग्ध छथि जे ओ गुण तरुणीक देह पर छैक।

"हमर ई कथ्य नहि जे पुरुष खाली गुणक आदर नहि करै छथि। किन्तु हमर कथ्य ई जे छुच्छ गुण पर ओ नहि मरै छैथि। पुरुषक गुण कैं ओ दाम दऽ कऽ किनै छथि, किन्तु तरुणीक गुण पर ओ बिनु दाम बिका जाइत छथि। पुरुषक कलाक मूल्य होइ छैन्ह 'प्रशंसा', नारीक कलाक मूल्य 'आत्म-समर्पण!' पुरुष कलाकार कैं जाहि कलाक पुरस्कार में सर्टिफिकेट मात्र भेटतैन्ह , नारी कैं ताहि कलाक पुरस्कार मे 'नवधा भक्ति' भेटि जेतैन्ह।

'नारी-यौवनक सहयोग पाबि तुच्छो गुणक-मूल्य तहिना बढ़ि जाइ छैक जेना अंकक सहयोग सँ शून्यक मूल्य बढ़ि जाइत छैक। और जहिना ओ तुच्छ शून्य ओहि अंकक मूल्य दस गुना बढ़ा दैत छैक , तहिना ओ तुच्छ गुण युवतीक आकर्षण कइक बेर चमका दैत छैक। जेना शून्यक समूह 'वामाङ्क' पर पड़ने लाख बनि जाइत अछि , तहिना साधारणो गुणक समुदाय 'वामाङ्क' मे गेने लाख भऽ जाइत अछि।

ई सभ सेक्स इन्स्टिक्ट (काम-प्रवृत्ति) क लीला थिक। पुरुष यथार्थ मे मोहित त होइ छथि स्वयं युवती पर , परन्तु से कहबाक साहस नहि होइ छैन्ह। तखन प्रशंसा करऽ लगै छथिन्ह ओकर और-और गुणक। 'वाह ! सिलाइ केहन सुन्दर ! रुमालक फूल केहन चिक्कन ! सूत केहन मेंही ! बुनिया केहन विलक्षण ! बाजव की मधुर ! चाय की अपूर्व !

ई सभ प्रवंचना थिक। जखने पुरुष युवती मे गुण देखि कऽ प्रशंसा करऽ लागय तखने बूझक चाही जे ओ 'आधेय गुण' सॅं अधिक 'आधार द्रव्य' पर लट्टू अछि। यदि केओ पुरुष सपथ खा कऽ हमरा कहय जे ओ केवल हमरा गुणे टा पर मोहित अछि , त हम बूझब जे या त ओ सरासर फूसि बजै अछि , अथवा नपुंसक थिक। 'महात्मा' क नाम हम एहि द्वारे छोड़ि देल अछि जे आइ धरि केओ एहन महात्मा हमरा नहि भेटल छथि।

माफ करब। हम अहाँ पर व्यक्तिगत आक्षेप नहि करैत छी। पुरुष मात्रक ई स्वभाव होइत छैन्हि।

मिस बिजलीक प्रगल्भतापूर्ण यथार्थवाद सॅं सी० सी० मिश्रक गंभीर 'आदर्शवाद' क धज्जी उड़ि गेलैन्ह। हुनक 'आध्यात्मिक प्रेम' क पताका नीचा खसि पड़लैन्ह। ओ आब अपन ढहैत-ढनमनाइत सिद्धान्तवादक भीत मे सोङ्गर लगाएब व्यर्थ बुझलन्हि।

किन्तु सायंकालीन सरिता-तट पर एकान्त स्थान मे युवतीक संग विश्रम्भालाप सँ हुनका भावुकता उद्दीप्त भऽ उठलैन्ह। मुक्त हृदया युवती सँ घनिष्टता-पूर्ण गप्प कैं एक अलभ्य लाभ बूझि , ओ एहि नारी मित्रक आगाँ अपन हृदय खोलि कऽ 'आत्मनिवेदन' करय लगलाह। आद्योपान्त अपना विवाहक उपाख्यान कहि सुनौलथिन्ह।

सम्पूर्ण वृत्तान्त कहि गेला पर सी० सी० मिश्र बिजलीक सहानुभूति प्राप्त करबाक उद्देश्य सँ पुछलथिन्ह - कहूँ ! केहन दुखान्त नाटक ! एहि मे ककर दोष अहाँ दैत छिऐक ?

बिजली कहलथिन्ह - ओहि गमार लड़कीक।

मिश्रजी फक दऽ निसास छोड़ैत बजलाह - अहाँ जौं ओहि लड़कीक स्थान मे रहितहुँ त एहना परिस्थिति मे की करितहुँ ?

बिजली तड़ दऽ जबाब देलथिन्ह - हम ओहन स्वार्थी पुरुष कैं 'शूट' कय दितिऐक।

सी० सी० मिश्र जे पासा फेकने छलाह से उनटे पड़ि गेलैन्ह ! ओ झमा कऽ आकाश पर सँ खसि पड़लाह। बूझि पड़लैन्ह जेना कौशलमयी रमणीक पेंच मे पड़ि कऽ ओ अचानक पटका गेल होथि !

बिजली तमकि कऽ बजलीह - विवाहक बाद लड़की कैं नापसंद करबाक अहाँ कैं कोनो हक नहि। ई हक पाणि-ग्रहण सँ पहिने छल। बिनु जँचने-बुझने हाथ धऽ लेलिऐक से अहाँक अपन बेबकूफी भेल। एहि मे लड़कीक कोन कसूर ? अपना गलतीक खातिर अहाँ ओहि लड़की कैं दण्ड नहि दऽ सकै छिऐक। यदि हम ओहि लड़कीक स्थान मे रहितहुँ त अहाँ कैं नाके सूत पानि पिया कऽ छोड़ि दितहुँ। तखन अहाँ कैं स्त्रीक प्रति अभद्रतापूर्ण व्यवहार करबाक साहस नहि होइत।

सी० सी० मिश्र सिटपिटाइत बाजय लगलाह - हम आजीवन स्त्री-समाज मे शिक्षाक ज्योति जगैबाक हेतु सन्यास ग्रहण करबाक संकल्प कैने छी और ......।

बिजली बात कटैत कहलथिन्ह - अहाँ अपने घर मे शिक्षाक ज्योति नहि जगा सकब त अनका घर मे की जगैबैक ? और हमरा सामने ढोङ नहि रचु। अहाँ सन-सन सैकड़ो युवक सन्या सी कैं हम अपना कनगुरिया आङ्गुरक इशारा पर नचा सकैत छी। मानि लियऽ एखने जौं हम अहाँक सकल्प तोड़बाक संकल्प करी, त के जीतत ? अहाँ कि हम ? अहाँ हमरा लऽ कऽ रहब कि अपन ब्रह्मचर्य लऽ कऽ ?

सी० सी० मिश्र एहन मधुर प्रश्नक हेतु तैयार नहि छलाह। प्रश्नक सरसता सँ हुनका सौंसे देह मे गुदगुदी लागऽ लगलैन्ह मन मे बजलाह - अहाँक आगाँ त स्वर्ग, मोक्ष और त्रैलोक्यक सम्पदा

तुच्छ थिक। एहि क्षुद्र सन्यासक कोन कथा ! किन्तु युवती सरिपों पुछै छथि वा हँसी करै छथि से निश्चय नहि कऽ सकलाक कारण ओ चुप्पे रहलाह।

बिजली एकाएक गंभीर बनि कहय लगलथिन्ह - हमर त ई सिद्धान्त अछि , जे कोनो पुरुष कैं अपन 'स्वामी' नहि बनाबी। हँ, योग्य पुरुष कैं देखि 'जीवन-सङ्गी' बना सकैत छी। किन्तु ओ कोनो बात मे हमरा ऊपर हुकुम नहि चला सकत और ने हमरा व्यक्तिगत विषय मे बिनु पुछने दखल दऽ सकत।

सी० सी० मिश्रक मन मे त ऐलैन्ह जे - 'अहाँक तरबो रगड़बाक सौभाग्य प्राप्त भेने लोक जिबैते तरि जायत !' प्रकाश्यतः बजलाह - अशिक्षिता स्त्रीक 'स्वामी' भेलाक अपेक्षे त अहाँ सन सुशिक्षिता महिलाक 'सेवक' बननाइ लाख कच्छे नीक।

बिजली देवीक ठोर पर कनेक कठोर मुस्कुराहट दौड़ि गेलैन्ह। बजलीह - थम्हू , हमर औरो सब शर्त त पहिने सुनि लियऽ।

सी० सी० मिश्र मन मे कहलन्हि - अहाँक सभटा शर्त विनु सुननहि हमरा मंजूर अछि। दुधार गायक लथारो नीक लगै छैक।

बिजली बजलीह - पहिने हम जे जे गुण पुरुष मे जोहैत छी से सभटा गुण अहाँ मे अछि कि नहि ? ई त बूझी ! अच्छा, अहाँ बौक्सिंग (मुष्टिप्रहार कला) मे त निपुण होएब ?

सी० सी० मिश्र अफसोस करैत बजलाह - नहि, घुस्साक प्रैक्टिस त हम नहि कैने छी।

बिजली कठोर स्वर मे बजलीह - हम त एहन पुरुष कैं चाहैत छी जे स्त्री पर जोर-जुलुम करयवाला गुंडा कैं एके वज्रमुष्टिक प्रहार सँ धाराशायी कऽ सकय। अच्छा , अहाँ राइडिंग (अश्वारोहन) मे त प्रवीण होयब ?

सी० सी० मिश्र विषण्ण स्वर सँ बजलाह - नहि , घोड़ा पर चढ़बाक मौका त हमरा नहि भेटल अछि।

बिजली तिरस्कारपूर्वक बजलीह - हम त एहन पुरुष कैं पसंद करै छी जे बदमाश सँ बदमाश अरबी घोड़ा कैं सरि कऽ कऽ घंटा मे दस माइलक चालि सँ सरपट दौड़ा सकय। अच्छा , शूटिंग (बन्दूक चलाबय) मे त अहाँ सिद्धहस्त हैब ?

सी० सी० मिश्र अप्रतिभ होइत बजलीह - नहि , बन्दूक चलैबाक अभ्यास त हमरा नहि अछि।

ई सुनि बिजली देवी अत्यन्त भर्त्सनापूर्ण स्वर मे बजलीह - छिः छिः ! एहन मर्द की जे बन्दूक नहि चला सकय ! हम त ओहने मर्द कैं मर्द बुझैत छी जे बाघक मुँह मे फायर करयवाला हो। जे एकटा गोली नहि चला सकय, तेहन नामर्द कैं त गोली मारि देबक चाही !

ई कहि बिजली सी० सी० मिश्रक कवितावली कैं हुनका आगाँ मे फेंकैत चमकि कऽ बिदा भेलीह और फुर्र दऽ अपन मोटर उड़बैत चलि जाइत रहलीह। एको बेर पाछाँ घूरि कय नहि तकबो नहि कैलथिन्ह !

बेचारे सी० सी० मिश्र पराजित सैनिक जकाँ अपन उपेक्षित 'प्रेमकाव्य' उठौलन्हि और अछितबैत-पछितबैत, अप्पन सन मुँह कैने चारि कोस दूर डेराक बाट धैलन्हि।

चंचला युवतीक संग हवाखोरीक मजा आब बहराय लगलैन्ह। जहिना आनन्द सँ आयल छलाह तहिना घिसिऔर कटैत फिरय लगलाह। हुनक सरस छायावाद रौद देखैत बिला गेलैन्ह और रसिकता सिकता मे मिलि गेलैन्ह।

बिजलीक निष्ठुर वज्राघात सँ सी० सी० मिश्रक कल्पना-महल चूर-चूर भऽ गेलैन्ह।

----===----

6. शिक्षाक प्रोग्राम

मिस बिजली कैं छकैबाक हेतु सी० सी० मिश्रक पेट मे हर बहय लगलैन्ह। कखनो होइन्ह जे व्यायामशाला मे जा कऽ बौक्सिंग प्रैक्टिस करी। कखनो होइन्ह जे एक बढ़ियाँ घोड़ा लऽ कऽ मैदान मे सवारीक अभ्यास करी। कखनो होइन्ह जे गंगाक ओहि पार जा बन्दूक चलैबाह रेयाज करी। ई सभ त नहि भेलैन्ह , लेकिन घुड़सवारी, घुसेबाजी, और शिकार पर जतेक किताब यूनवर्सिटी लाइब्रेरी मे भेटलैन्ह से सभटा एक दिस सँ पढ़ि गेलाह। एहि विषयक सूचिपत्र पर्यन्त नहि छोड़लन्हि।

बिजलीक एक-एक मर्मभेदी वाक्य हुनका सालय लगलैन्ह। सभ सँ बेशी ई बात लगलैन्ह जे, अहाँ पहिने, अपना घर मे त शिक्षाक ज्योति जगाउ ! मिश्रजी अपना मन मे कहलैन्ह - बिजली आखिर अपना कैं बुझै की छथि ? ई बड़े करै छथि त हमहूँ देखा दैत छिऐन्ह !

मिश्रजी एहि संकल्प-विकल्प मे पड़ल छलाह कि हठात रेवतीरमण आबि पहुँचलथिन्ह। रेवतीरमण किछु सिहरल सन भऽ कऽ कहय लगलथिन्ह - गाम मे महिला-क्लब वा बुच्चीदाइक समुचित शिक्षाक आयोजन हैब त असंभवे जकाँ बुझना जाइछ। तैं हम एतय आयल छी। आब जे अहाँक आदेश हो से हमरा लोकनि करक हेतु तैयार छी।

सी० सी० मिश्रक जतेक खीस बिजली पर छलैन्ह से सभटा रेवती पर उतारय लगलथिन्ह। रेवती त विषक घोट पीबक हेतु जी-जान अरोपिए कऽ आयल छलाह। अपन सभटा दोष सकारैत, दण्डक हेतु माथ ओरि देलथिन्ह। एहि सँ मिश्रजीक अत्यन्त तप्पत पारा सेराइत-सेराइत किछु ठंढा भेलैन्ह।

तदनन्तर गंभीर भाव सँ विचार-विमर्श होमय लागल। मुख्यतः तीन टा प्रश्न उठल - (१) बुच्ची दाइ कैं कतेक दूर तक शिक्षा देल जाइन्ह ? (२) कतय राखि कऽ शिक्षा देल जाइन्ह ? (३) कोन रूपें शिक्षा देल जाइन्ह ?

प्रथम प्रश्नक सम्बन्ध मे एक वृहत् योजना तैयार भेल।

बुच्ची दाइ कैं योग्य बनैबाक हेतु निम्नलिखित विषय निर्वाचित भेल ;- (१) हिन्दी, (२) अँग्रेजी, (३) संस्कृत, (४) गणित, (५) इतिहास, (६) भूगोल, (७) हाइजिन (स्वास्थ्य-

विज्ञान), (८) पाक-शास्त्र , (९) शिल्प-कला , (१०) संगीत , (११) फिजिकल कल्चर (खेलकूद ओ व्यायाम), (१२) एटिकेट ((शिष्टाचार)

हिन्दीक हेतु निम्नांकित 'सिलेबस' (पाठ्यक्रम) निर्धारित भेल -

[१] व्याकरण और रचना - (क) शब्द विवरण , (ख) लिंग ,वचन और कारक , (ग) वाक्य-रचना, (घ) क्रियापद (विशेषतः 'ने' चिह्नक प्रयोग), (ङ) अनुवाद (मैथिली सँ हिन्दी) , (च) पत्र-लेखन, (छ) निबन्ध रचना , (ज) अन्वय-व्याख्या-भावार्थ-लेखन, (झ) शब्द-संग्रह, (ञ्) मुहाविरा और लोकोक्ति, (ट)संस्कृत गर्भित वाक्यांश, (ठ) उर्दू अल्फाज ।

[२] गद्य साहित्य - (क) उपन्यास , (ख) कहानी, (ग) नाटक, (घ) प्रहसन, (ङ्) गद्य काव्य , (च) जीवन-चरित, (छ) समालोचना, (ज)विविध विषयक लेख (भ्रमण-वृत्तान्त आदि)

[३] पद्य-साहित्य - (१)प्राचीन कविता [तुलसी , सूर, कबीर, विद्यापति, मीराबाई, वृन्द, रहीम, रसखान, देव, केशव, मतिराम, पद्माकर, बिहारी, भूषण, गिरिधर राय, भारतेन्दु इत्यादि]

(२) अर्वाचीन कविता - ['हरिऔध', मैथिलीशरण, सनेही, त्रिशूल, रामचरित उपाध्याय , माखन लाल चतुर्वेदी, सुभद्रा कुमारी चौहान, महादेवी वर्मा, पन्त, निराला, बच्चन, वियोगी, द्विज, दिनकर, आरसी,, इत्यादी]

(३)उर्दू कविता [मीर, दाग, आतिश, गालिब, नासिख, अकबर, विस्मिल इत्यादि ।]

(४) विविध साहित्याङ्ग- (क) रस , (ख) पिंगल, (ग) अलंकार, (घ)साहित्य-विवेचन, (ङ) हिंदी साहित्यक इतिहास।

एकरा अतिरिक्त सामयिक साहित्यक प्रगति सँ परिचित होएबाक हेतु 'सरस्वती' 'माधुरी' 'सुधा', चाँद, विशालभारत, विश्वमित्र, हंस प्रभृति मासिक पत्रक सम्पूर्ण फाइल।

केवल एके सबजेक्ट (विषय) क तालिका देखि रेवतीरमणक पिलही चौंकय लगलैन्ह । मिश्रजी एतबा दया कैलथिन्ह जे 'पृथ्वीराज सँ, सूरसागर, कबीरक साखी, जयशंकर प्रसादक नाटक, तथा पन्त, निराला और महादेवीक छायावाद रूपी आदिक रसास्वाद बुच्चीदाइ कैं करैबाक हेतु बेशी बाद-विवाद नहि कैलथिन्ह ।

हिन्दी अध्याय समाप्त भेला पर अँग्रेजी काण्ड सुरु भेल । एती काल धरि रेवतीरमण साहस कैने छलाह , किन्तु जखन सी० सी० मिश्र धड़ाधड़ शेक्सपीयर , मिल्टन, वर्ड्सवर्थ,शेली, कीट्स, ब्राउनिंग टेनीसन, हार्डी, डीकेन्स, थेकेरे, बर्नार्डशा, इबसेनक नाम लेबय लगलथिन्ह तखन धैर्यक बान्ह टूटि गेलैन्ह । ओ मन मे बिचारने छलाह जे बुच्चीदाइ कैं अँगरेजी मे मामूली बातचीत तथा चिट्ठी- पत्री करबाक हेतु थोड़ेक ग्रामर, कम्पोजिशन, और ट्रान्सलेशन,

सिखा देने काज चलि जैतैक। किन्तु सी० सी० मिश्र कहलथिन्ह जे अँगरेजीक 'जनल-मैगजीन' पढ़ि कऽ बुझबाक योग्यता होयब जरूरी छैन्ह। रेवतीक बहुत जोर लगौला पर सी० सी० मिश्र एतेक रेयायत केलथिन्ह जे चौसर (प्राचीन कवि) क कविता ओमिट कऽ (हटा) देलथिन्ह और इंगलिश प्रोसोडी (अंग्रेजी पिंगल) बुच्चीदाइ हेतु ओप्सनल (अपना इच्छा पर) छोड़ि देलथिन्ह।

आब संस्कृतक पारी आयल। रेवतीरमण कैं पहिनहि सँ छाती धड़कय लगलैन्ह जे कतहु बुच्चीदाइ कैं पाणिनीय व्याकरणक सूत्र नहि रटय पड़ैन्ह। किन्तु सी० सी० मिश्र कैं अपनहि 'सिद्धान्त कौमुदी' नहि पढ़ल छलैन्ह। अतएव ईश्वरचन्द्र विद्यासागर कृत 'सरल व्याकरण' पर्याप्त बूझल गेल ताहू मे उणादि धातु , अणादि प्रत्यय, जुहोत्यादि गण यङ्गलुङ्न्त क्रिया , लिट लकार , और निपातन समासक फाँस सँ गरदनि छोड़ा देल गेलैन्ह। मिश्रजी एतेक उदारता देखौलथिन्ह जे रघुवंश , कुमारसंभव, किरातार्जुनीय, शिशुपाल बध , नैषधचरित, शकुन्तला, उत्तर-रामचरित, स्वप्नवासवदत्ता, मृक्षकटिक, कादम्बरी, ओ दशकुमार चरित क स्थान मे केवल , हितोपदेश, पञ्चतंत्र, चाणक्यनीति, अमरकोश और दुर्गाशप्तशती पर स्वाच्छन्न दऽ देलथिन्ह कालिदास, भारवि, भवभूति, माघ, दण्डी, श्रीहर्ष, भास तथा बाणभट्ट सँ बुच्चीदाइक पिंड छूटि गेलैन्ह।

आब गणितक झमेला उठल। रेवतीक मन रहैन्ह जे चारु सरल नियम , एकिक नियम , त्रैराशिक और व्यवहारगणित सिखा कऽ बुच्चीदाइक जान बकसि देल जाइन्ह। किन्तु सी० सी० मिश्र अर्थमेटिक संग-संग ज्यूमेट्री और अलजेब्रा पर अड़ि गेलाह। रेवतीक बहुत घिघिएला पर आवर्त्त दसमलव तथा चक्रवृद्धि व्याजक हिसाब छोड़ि देलथिन्ह; रेखागणित मे २९ क साध्य सँ आगाँ, और बीजगणित मे सर्ड ओ ग्राफ माफ कऽ देलथिन्ह।

भारतवर्षक इतिहास वैदिक युग सँ लऽ कऽ ब्रिटिश शासन पर्यन्त सम्पूर्ण। इंगलैण्डक इतिहास मे प्रथम जार्ज सँ पूर्वक अंश 'छूट' देल गेलैन्ह। किन्तु तकरा बदला मे बुच्चीदाइ कैं फ्रांस, जर्मनी, रुस ओ अमेरिकाक क्रान्ति पढ़य पड़तैन्ह। संगहि संग अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति।

भूगोल मे एशिया-यूरोप सांगोपांग। अफ्रिका, अमेरिका और आस्ट्रेलियाक नक्सा मोटा-मोटी। भिन्न-भिन्न देशक रहन-सहन, रीति-रिवाजक ज्ञान प्राप्त करैबाक हेतु मिश्रजी कैं 'लैण्ड ऐण्ड पीपुल सीरीज' बहुत उपयुक्त बूझि पड़लैन्ह।

हाइजिन (स्वास्थ्य विज्ञान) मे बेशी तूल फजूल नहि भेलैन्ह। केवल निम्नलिखित विषयक तालिका बनल -

स्वास्थ्य रक्षा-दिनचर्या , ऋतुचर्या, दाँत और कानक सफाइ , वासस्थानक विचार-दूषित जलवा युक परिष्कार-कीटाणु सॅ रक्षा संक्रामक रोगक प्रतिकार।

आहार विज्ञान - भोजन-तत्व-मिमांसा , पौष्टिक खाद्य ओ विटामिन वर्णन-दूध ओ फलक महत्व-खोइया ओ भुस्सा-चोकरक गुण।

शरीर विज्ञान - अस्थिपिंजर , मस्तिष्क ओ स्नायुजाल , हृदय ओ स्वांसयंत्र , नाड़ी ओ रक्त संचालन क्रिया, अँतड़ीक कार्य तथा मल-निःसरण।

प्रारम्भिक उपचार तथा शुश्रूषा-मलहमपट्टी, सेंक, पुलटिस, मालिश, फुचकारी, रोगी कैं ठीक ढंग सॅ लघी-नदी ओ स्नान कराएब , सुताएब तथा खोआएब-टेम्परेचर चार्ट बनाएब , भिन्न-भिन्न प्रकारक पथ्य तैयार करब-अकस्मात चोट लगला , छिलैला, कटैला वा पकला पर तात्कालिक चिकित्सा।

धात्री विद्या-गर्भविज्ञान, प्रसवक वैज्ञानिक तरीका , प्रसूतिकाक रक्षा, स्त्री-रोगक लक्षण तथा चिकित्सा, सन्तानक रक्षा, शिशु-पालन, बाल रोगक निदान तथा उपचार।

पाक-कलाक हेतु सी० सी० मिश्र अँगरेजी खानाक 'कैटलग' (सूची) जोहय लगलाह। किन्तु रेवतीरमण कैं आब नहि रहल गेलैन्ह। कहलथिन्ह-'अंगरेजी खाना खैबाक हो त कोनो बावर्ची राखि लेब। आब ई त नहि होयत जे हमर बहिन अंडाक पुडिंग ' तैयार करति।' हारि दारि कऽ हिन्दुस्तानीए खाना पर बुच्ची दाइ कैं 'फारखता' भेटि गेलैन्ह। किन्तु सी० सी० मिश्र 'बङ्गला स्टाइल'क खाना पसन्द करैत छलाह। तैं 'डालना' 'चर्चरी भाजा' 'इलिश माछेर टक' चिङ्गरी माछेर कट्लेट' हाँसेर डिमेर चाँप तथा रसोगोल्ला बुच्ची दाइक कोर्स मे सम्मिलित भऽ गेलैन्ह।

शिल्प-कला मे रुमाल , पर्दा, टेबुल क्लाथ , ब्लाउज, शेमीज, फ्रौक, अंडरवियर, मौजा, गुलबन्द स्वेटर, - एतेक त अनिवार्ये बूझल गेल। पशु-पक्षी तथा फूल-पत्ती, काढ़ब बुच्चीदाइ कैं अपना शौक पर छोड़ि देल गेलैन्ह।

आब 'संगीत' कऽ चलल। सी० सी० मिश्र बुच्चीदाइ कैं सिखैबाक हेतु निम्नलिखित रागिनीक नाम संकलित कैने छलाह -

भैरव, मालकोश, असावरी, तोड़ी, कलिंगडा, जोगिया, खम्माज, पुरिया, बिलावल, पीलू, ईमनकल्याण, भीमपलासी, तिलक कामोद, दरबारी कान्हड़ा, इत्यादि।

एहि मे प्रत्येक सरगम, आरोह-अवरोह, वादी, सम्वादी, अनुवादी, विवादी, मात्रा, लय, ताल, आलाप, तान पकड़, ध्रुपद खयाल, टप्पा, ओ ठुमरी समेत।

एतेक सूनि रेवतीक तेहन अवस्था भऽ गेलैन्ह जाहि मे 'मलार' गायब कठिन बूझि पड़ैत छैक।

अन्ततोगत्वा बहुत महोजरो कैला पर केवल भैरवी , विहाग, वागेश्वरी, देश ओ काफी पर मामिला फरिछा गेल। बाजा मे केवल हारमोनियम और बेहाला। तबलाक 'ताधिन धिन्ना' ओ सितारक 'तुम तन नन' सॅं बुच्चीदाइ कैं पिंड छूटि गेलैन्ह।

एडिशनल सबजेक्ट (अतिरिक्त विषय) मे निम्न लिखित वस्तु बुच्ची दाइक हेतु आवश्यक बुझल गेलैन्ह -

स्वास्थ्य-सौन्दर्यक हेतु कइएक तरहक 'एक्सरसाइज' (व्यायाम) तथा स्विमिंग (हेलनाइ) ; फुर्ती ओ तेजीक हेतु टेनिस तथा रोपडान्स (पैर तर रस्सी नचौनाइ) स्मार्ट बनक हेतु साइकिल और मोटर हकनाइ ; अप-टु-डेट बनबाक खातिर स्टाइल सॅं साड़ी पहिरनाइ और भद्रमहिला बनक हेतु सभ्य-समाजक एटिकेट(शिष्टाचार)।

एवं प्रकार बुच्ची दाइ कैं योग्य बनैबाक हेतु विस्तृत योजनाक निर्माण भेल।

आब दोसर-तेसर प्रश्न पर विचार होमय लागल। बहुत तर्क-वितर्कक अनन्तर निश्चय भेल जे काशिए मे मकान भाडा लऽ कऽ बुच्ची दाइ कैं पढ़ाओल जाइन्ह। किन्तु स्कूलक निम्न कक्षा मे नाम लिखौने छोट-छोट बच्चीक संग बैसि कऽ पढ़य पडतैन्ह, ताहि सॅं लज्जा बोध करतीह। तैं डेरे पर पढ़ैबाक प्रबन्ध होइन्ह।

ततः पर प्रश्न उठल जे पढौतैन्ह के ? सी० सी० मिश्र कहलथिन्ह जे और सभ विषय त हम अपने पढ़ा देबैन्ह। किन्तु संगीत शिल्पकला , पाकशास्त्र तथा धात्री-विद्याक हेतु शिक्षिका राखय पड़त।

आब ई 'बजट' बनय लागल जे बूच्ची दाइ कैं एतय रखबा मे खर्च कतेक पड़त। बुच्ची दाइ एकसरि त रहतीह नहि। संग मे एक और स्त्री रहब आवश्यक छैन्ह। एक टहलनी वा नोकर रहबे करतैन्ह। भानस भात मे लगतीह त पढ़बाक बहुमूल्य समय ओही मे नष्ट भऽ जेतैन्ह। अतएव भनसीयओ जरुरिए छैन्ह। परिवारक रहबा योग्य मकानक भाड़ा तीस-चालिस टका सॅं कम नहि। मोटा-मोटी हिसाब कैला पर देखलन्हि जे डेढ़ सै टका मास सॅं कम मे गुजारा नहि। तत्काल मे प्रयोजनीय पाठ्य-पुस्तक तथा बाजा आदि किनबा मे चारि पाँच सै टकाक खर्च अलावे।

ई आर्थिक समस्या हल कोना होऐ ? एहि विषय मे सी० सी० मिश्र उदारताक परिचय देलन्हि। सार कैं कहलथिन्ह - अहाँक भार एतबे जे ओतय सॅं मंगा लिऔन्ह। एतऽ ऐला पर जे खर्च पड़त से हमर। हॅं डेरा डंटा क सल्तनत अहाँ कैं लगा देबऽ पड़त। मिश्रजी मनहि मन हिसाब

कऽ देखलन्हि जे 'टाइम्स' मे लेख देने और 'ट्यूशन' द्वारा एतबा रुपयाक ब्यौंत होयब कठिन नहि।

आब ई प्रश्न उठल जे बुच्ची दाइ औतीह कोना ? और हुनका संग रहतैन्ह के ? बहुत तारतम्य उपरान्त ई निश्चय भेल जे भाद्र पूर्णिमा मे चन्द्रग्रहण लगैत छैक ; ताही लाथें लालकाकी बेटी कैं नेने काशी आबथि। ताबत एहि ठाम डेरा ठीक भेल रहय। और लोक सभ ग्रहण-स्नानक बाद घर जाथि ; किन्तु लालकाकी बेटीक संग मास करक ब्याज सँ एत्तहि रहि जाथि। तदनन्तर पाछाँ बूझल जैतैक।

रेवतीरमण अपना माय कैं पत्र पठौलन्हि , जाहि मे सी० सी० मिश्रक आशय जनबैत लिखलथिन्ह जे चिट्ठी देखैत ग्रहण-स्नानक हेतु काशी अबैत जाउ।

आब विचार कैं कार्यान्वित करबाक यत्न होबय लागल। दुनू सार बहिनोय मकानक तलाश मे बिदा भेलाह। सी० सी० मिश्रक आन्तरिक अभिप्राय रहैन्ह जे गंगाकात मे डेरा लेल जाय , जाहि सँ बुच्चीदाइ कैं हेलनाइ सीखऽ मे सुभीता होइन्ह। अतएव असी घाटक समीप एकटा छोटछीन मकान चुनलन्हि। ओहि मे और बात सभ त मन मोताबिक भेटलैन्ह किन्तु आङ्गन बैडमिंटन खेलयबा योग्य नहि। तथापि दस टका अगाउ दऽ कऽ डेरा लेल गेल।

सी० सी० मिश्र कै आब भनसीयाक फिकिर भेलैन्ह। यदि बङ्गला खाना बनाबऽवला रसोइया भेटि जाय त 'एक पंथ दुइ काज '। संयोगवश मालदह जिलाक एक 'ठाकूर' भेटि गेलैन्ह जे बीस वर्ष धरि ढाका , मुर्शिदाबाद ओ मैमनसिंह जिला मे पाककलाक 'ट्रेनिंग' पौने छल। मिश्र जी बीस टका पर तकरो नियुक्त कैलन्हि।

एक दिन दशाश्वमेघ घाट पर सी० सी० मिश्र कैं एक मधुर स्वर लहरी सुनाइ पड़लैन्ह। पुछारी कैला पर ज्ञात भेलैन्ह जे एक भगतनी दाइजी नित्य एहिठाम आबि कऽ गंगा -पूजन ओ भजन करै छथि। भगतिनीजीक अपूर्व शोभा ओ ठातः-बाट देखि मिश्रजी चकित रहि गेलाह। भगतिनीजीक स्वरूप अत्यंत भव्य मुखमंडलक दिव्य कांति। गोर दगदग शरीर पर लाल रेशमी साड़ी खिलैत। भरल-पुरल अंग देखि ई अन्दाज करब कठिन जे बाइस बर्षक थिकीह वा बत्तीस वर्षक वा बेयालिस वर्षक। भगतिनीजी मस्त भऽ कऽ बैसलि तानपूरा पर एक भजन गबैत छलीहि-

'जखन चरण गंगाजीक धैलहुँ आनक की दरबार!'

दर्शकवृन्द मन्त्रमुग्ध जकाँ ठाढ़ भय भगतिनीजीक संगीत-सौन्दर्य-रस पान करैत छलाह। ओहि में कतेक एहनो श्रद्धालु भक्त छलाह जे भगतिनीजी कैं साक्षात भगवतीक अवतार बुझैत छलथिन्ह।

भगतीनीजीक चन्दन-चर्चित चन्द्रमा सन चमकैत ललाट , पृष्ठदेश मे भूमि पर छितराएल एक पाँज कारी केश , मांसल वक्षःस्थल पर सोनक तार में गाँथल रुद्राक्ष-माला ; सभ मिलि एक तेहेन अदभुत रसक सृष्टि करैत छल जाहि में शान्त और श्रृंगार गंगा-यमुना जकाँ मिलि एकाकार भऽ जाइत छल।

भजन समाप्त भेला पर भगतिनीजी लट छिटकौने अपन चाँदीक गंगाजली ओ फुलडाली उठौलन्हि और खसक खुशबु सँ घाट-बाट कैं मँह-मँह करैत विश्वनाथजी पर बेलाक गजरा चढाबक हेतु चललीह।

सी० सी० मिश्रक हृदय भक्ति और श्रद्धा सँ परिपूर्ण भऽ उठलैन्हि। ओहो विश्वनाथजीक मन्दिर धरि गेलाह। ओतय भगतिनीजीक पूजनक ठाट-बाट देखि मिश्रजी और चकित रहि गेलाह। विचारलन्हि जे जौं ई भगतिनीजी कतहु बुच्चीदाइ कैं गायन-वादन सिखाएब गछि लेथि त घीवो सँ वेशी चिक्कन!

एक घंटाक बाद भगतिनीजी मन्दिर सँ बाहर भेलीह और डेरा दिस चललीह। मिश्रजी हुनक पछोहि धैने कचौड़ी गली मे एक मकानक सामने एलाह। भगतिनीजी भीतर पैस गेलीह मिश्रजी बाहर थकमकाय लगलाह।

दस मिनटक भीतर एक खबास आबि कहलकैन्ह जे माइजी अन्दर बजा रहल छथि। मिश्रजी पनही उतारि किछु धखाइत भीतर गेलाह ।

आब देखै छथि त दोसरे ठाठ-बाट। बेशकीमती ईरानी कालीन पर कामदार मखमली मसनद सँ ओंगठलि भगतिनीजी गोमुखी मे हाथ देने जप कऽ रहल छथि।

पेयाजी सिल्कक खुलता जम्फर सँ रुद्राक्षक दाना झलकैत छलैन्ह तरकुन जकाँ डगडग करैत गुदगर देहक चमकैत अङ्गौट पर गँगौटक छाप बिहारीलालक शब्द मे 'दृगपग पायन्दाज' बनल छलैन्ह। सिन्दूर -आभूषण वेत्रेक ओ सोलहो श्रृंगारवाली सोहागिन कैं मातु करै छलीह ।

भगतिनीजी मिश्रजी कैं किछु संकुचित जकाँ देखि सहज वात्सल्य स्नेह सँ अपना लग बैसा , परिचय पूछय लगलथिन्ह। मिश्रजीक अभिप्राय सुनि ओ बजलीह - बच्चा हम त केवल गंगाजी और विश्वनाथजी कैं छोड़ि ककरो ओहि ठाम नहि जाइ छी। हरिर्विष्णु हरिर्विष्णुः। यदि अहाँक स्त्री कैं हमरा सँ किछु सिखबाक होइन्ह त एत्तहि कहियो काल कऽ आबि जैहथि । हरिर्विष्णु हरिर्विष्णुः ।

भगतिनीजीक सामने योगवसिष्ठ और पानदान दूनू राखल छलैन्ह। भगवद्गीताक पुस्तक पर बनारसी जर्दाक डिबिया तथा कान मे तुलसीदलक संग-संग मोतियाक फाहा देखि ई अनुमान

करब कठिन नहि जे भगतिनीजी योग और भोग मार्गक गठबन्धन कय विलक्षण संयोग कैने छथि।

भगतिनीजी प्रसाद-स्वरुप चाँदीक वर्क मे लपेटल गंगाजल सँ सिक्त पानक खिल्ली सी० सी० मिश्रक आगाँ बढा देलथिन्ह। मिश्रजी भक्तिपूर्वक माइजीक प्रसाद ग्रहण करैत बिदा भेलाह। नीचा ऐला पर देखै छथि जे जूता गायब। किन्तु पुछारी करबाक साहस नहि भेलैन्ह। खालिए पैताबा पहिरने गलीक मोड़ पर ऐलाह और ताङ्गा कऽ कऽ ड़ेरा पहुँचलाह।

संगीत-शिक्षिकाक जोह करबाक खुशी मे मिश्रजी कैं नव 'फ्लेक्स शू' हेरैबाक मोह नहि रहलैन्ह। आब ओ होसियार 'मिडवाइफ' (धात्री) क टोह मे बौआय लगलाह। एक ठाम पता लगलैन्ह जे कबीर चौड़ाक गलीक मोड़ पर एक मेम रहै अछि जे लंडन सँ 'मिडवाफरी' (धात्री-विद्या) पास कैने छथि।

मेम एक अंग्रेजी होटलक ऊपर मे रहैत छलीह। सी० सी० मिश्र एक वेयराक हाथें अपन कार्ड पठा देलथिन्ह। कनेक काल मे बजाहटि भेलैन्ह। सी० सी० मिश्र ऊपर गेलाह। परमीशन लऽ, चिक हटा भीतर गेलाह। मेम सोफा पर बैसलि मोजा बुनैत छलीह। हिनका देखि कुर्सी पर बैसबाक इसारा करैत पुछलकैन्ह - 'गुडमौर्निंग, क्या कहना माङ्गटा है, बाबू ?'

सी० सी० मिश्र तेहन लटपटाइत जकाँ अपन उद्येश्य कहलथिन्ह जे ओकरा दोसरे अर्थ लगलैक। कहलकैन्ह - 'तुम्हारा वाइफ के पास जाना होगा। हमारा फीस एक टाइम का बीस रुपी।'

सी० सी० मिश्र सलाम कऽ कऽ जहिना नीचा उतरक हेतु बिदा भेलाह कि मेम बाट छेकि कऽ ठाड़ भऽ गेलैन्ह - 'सुनो बाबू ! हमारा कन्सलटेशन फी पाँच रुपी है सो डेटा जाव।'

आब मिश्रजी कैं ऊपर टाङ्गल साइनबोर्ड पर नजर पड़लैन्ह - 'कन्सल्टेशन फी रुपीज फाइव।'

मेमक 'बुलडौग' कैं अपना दिस तकैत देखि सी० सी० मिश्र मनीबेग सँ एकटा पँचटकही नोट बहार कय जान छोड़ा कऽ नीचा सड़क पर ऐलाह।

डेरा पर पहुँचि रेवतीरमण कैं कहलथिन्ह - आब अहाँक बहिन एतय पहुँचतीह तखने सभटा प्रबन्ध लगतैन्ह। एखन 'गाछे कटहर ओठे तेल' कैने कोन फल ?'

----====----

7. तीर्थयात्रा

भादवक पूर्णिमा कैं चन्द्रग्रहण थिकैक। लालकाकी एहि बेरि सदलबल काशी जैबाक न्यार कैने छथि। दल मे रहथिन्ह ढुनमुन काकी , बुच्चीदाइ, आवेशरानी, भखराइनवाली तथा ज्योतिषिआइन। बल मे रहथिन्ह - भोलानाथ झा, बटुकजी तथा पं० नमोनाथ झा।

दशमीक रात्रिशेष मे भुरुकवा उगला पर लालकाकी प्रभृति गोसाउनिक सीर मे गोर लागि , पूर्णकलश तथा दही देखि , 'जय गणेश'-जय गणेश' करैत घर सँ बहराइत गेलीह। जहिना देहरि नँघै छथि कि ढुनमुनकाकीक नेना छीकि देलकैन्ह। लगले सभ गोटा पाछाँ फिरैत गेलीह और भोलानाथ शान्तिपाठ करय लगलाह।

पं० नमोनाथ झा पत्रा मे सिद्धियोग ताकि , एक दिन पहिनहि यात्रा कऽ एक जोड़ जनउ ज्योतिषिआइनक चार में खोंसि आएल रहथि। किन्तु एखन चलय काल कतबो टोइया मारला पर नहि भेटलैन्ह। अन्त में हारि दारि कय 'गणानां त्वा गणपतिग्वं हवामहे' करैत बिदा भेलाह।

गामक लोक केओ टोकय नहि , ताहि द्वारें सड़क छोड़ि एकपैरियाक बाट धैल गेल। झोल्हफल्ह मे नीक जकाँ नहि सुझबाक कारण ज्योतिषिआइनक पैर एक बेर थाल मे पड़ि गेलैन्ह। ओ ठेहुन धरि पाँक में धँसि गेलीह। ढुनमुनकाकी नव रेशमी साड़ी पहिरि कऽ चलल रहथि। ओ थाल-कीचक डरें खेतक आड़ि पर दऽ कऽ चलय लगलीह। किन्तु एक ठाम तेहन पिच्छर रहैक जे हुनक पैर छहिलि कऽ आगाँ चलि गेलैन्ह और ओ चितङ्गे खसि पड़लीह। आड़िक कडनी पर सँ ओ नीचा खत्ता मे ओंघड़ा गेलीह। चोट त बेशी नहि लगलैन्ह , किन्तु साडी कादो में लेढ़ा गेलैन्ह।

एकठाम माछ बझैबाक हेतु अरसी-टभका लागल रहैक। बटुकजी कैं फुरलैन्ह जे यात्रा पहर माछ देखि लेबाक चाही। ओ ओहिठाम जा जहिना पानि मे पैसय लगलाह कि एकटा ढोंढ़ साँप कैं बहराइत देखि 'बाप-बाप' कय पड़ैलाह। रास्ता में एक नढ़ेआ बाट काटि देलकैन्ह ताहि सँ ओ और भयभीत भऽ उठलाह।

एवं प्रकार भिनसर होइत-होइत यात्रीक दल सकुशल सकरी स्टेशन पर पहुँचि गेल। भोलानाथ झा कहलथिन्ह - 'एखन गाड़ी आबऽ मे बहुत देरी छैक। तावत सभ गोटे पोखैर सँ भऽ अबै

जाउ। एत्तहि नहा-सोना कऽ बखेड़ा छोड़ौने रहब से नीक हैत। तावत हम और पं० जी एहिठाम बैसि कय अगोरैत छी।

बटुकजी सभ स्त्रीगण कैं लऽ कऽ पोखरि दिस बिदा भेलाह। ओतय सभ गोटा कैं बेराबेरी कुडुर-आचमन करैत नहाइत-धोइत सूर्योदय भऽ गेलैन्ह। लालकाकी कऽ विचार भेलैन्ह जे नूआ सुखौनहि चली। ढुनमुन काकी अपन रेशमी साड़ी पखारय गेलीह , लेकिन कदवाह पानि मे धखोरने और भटरङ्ग भऽ गेलैन्ह। तखन खिसियाक भीड़ पर पसारि देलथिन्ह। जा नुआ सभ सुखाइ छलैन्ह, ता लालकाकी, आवेशरानी ओ भखराइनवाली आनन्दक उमङ्ग मे गीत उठा देलथिन्ह-

बाबा विश्वनाथ दर्शन पर नैना लागि रही हमरी।

एम्हर गीत प्रारम्भे भेल छल कि तावत ओम्हर स्टेशन पर घंटी टनटनाएल भोलानाथ झा हड़बड़ा कऽ बजलाह-जाह ! गाड़ी चलि अबै अछि। पं० जी , अहाँ दौडू! झटकि कऽ सभ कैं नेने अबियौक। तावत हम टिकट कटबै छी।'

पं० नमोनाथ झाक पैर में बेमाय फाटल रहैन्ह। तैं इँकड़ी बचबैत-बचबैत बड़ी कालें पोखरिक घाट पर पहुँचलाह। ओतय देखै छथि त बड़े टहंकार सँ गीत चलि रहल अछि। पं० जी चिचिया कऽ बजलाह 'ब ब ब बटुकजी!

किन्तु बटुकजी भरि डाँड़ पानि में 'अघमर्षण सूक्तस्याघमर्षण ऋषि' क टाङ्ग तोड़ैत छलाह।

पं० जी पुनः जोर सँ चिचियाकऽ बजलाह-'च च च चलै चलू। घ घ घ घंटी पड़ि गेलैक।

किन्तु गीतगाइन सभ अपना-अपना सुर मे मस्त छलीह। केओ-हिनका दिस ध्यान नहि देलकैन्ह।

भखराइनवाली पं० जीक स्त्री रहथिन्ह और फुचुकरानी भाभहु। अतएव पं० जी ओहिठाम जैतथि कोना? फेर फराके सँ बाजय लगलाह-अहाँ लोकनि एतय क क क कजरी गबै छी , ओम्हर गाड़ी छोड़ने अछि।

लालकाकी गबैत-गबैत, हाथक इशारा सँ हुनका रोकि , गीतक अन्तिम पद पुरौलन्हि , तखन पुछथिन-आब की कहै छी से कहू।'

'पं० जी बजलाह- ग ग ग गाड़ी च च च चल...'

तावत तुमुल ध्वनि सँ सभ कैं हड़हड़बैत सद्यः रेलगाड़ी अपना आगमनक सूचना दऽ देलकैन्ह।

आब तऽ हुलिमलि उठि गेल। लालकाकी माथ पिटैत बजलीह-' दैव रे दैव ! आब कोन उपाय हेतैक? बाट-बाट मे गाड़ी छूटि गेल। आब फुचुकरानी नीक जकाँ अपन पटोर सुखबैत रहथु।

अपने पटोर पर सभटा दोष थोपाइत देखि ढुनमुन काकी एक आँजुर थाल लऽ कऽ ओहि मे लपेटय गेलीह। किन्तु आवेशरानी बिच्चहि मे थाम-थैया कऽ लेलथिन्ह।

बटुकजी अङ्गपोछा गारैत बजलाह मङ्गनी मे देखैत-देखैत टैन छूट गेल। आब दिन भर हिंए बैठ कऽ तानारीरी करैत रह।

ई लोकनि जा स्टेशन पहुँचथि-पहुँचथि ता गाड़ी फूजि गेल।

भोलानाथ झा बटुकजी दिस तकैत बजलाह - तों एहन भारी पिंडश्लोकी छह से हमरा नहि जानल छल ! खाली सानिमाठ मे गाड़ी छूटि गेलौह। बाट मे कतहु ऐतेक टीङ्ठोप भेलय !

बटुकजी अपन सफाइ दैत बजलाह - हम त पहिले ही कहलिएन्ह जे गाड़ी के टैम लगिचाएल है; फुर्ती करै जाउ। लेकिन हिनका सभ के त भासे चढ़ाबे से न फुरसत रहन। हमर बात के सुनैअऽ ?

पं० नमोनाथ झा कहलथिन्ह - हम त जखने स स सिकन्दर खसल देखलिऐक तखने बुझलौं जे आइ स स सोरहो दण्ड एकादशी स स सकुड़ीए मे करय पड़त।

भोलानाथ झा अफसोस करैत बजलाह - हमरो सॅं एकटा बुड़ित्व भऽ गेल जे हड़बड़ी मे दस टा टिकट कटा लेलिऐक। आब जोड़ि कऽ देखैत छी त नौए टा लोक अछि।

लालकाकी बजलीह - हमरा लोकनिक संग-संग कर्मो ने लागल छथि। तिनको एकटा टिकट कटा गेलैन्ह। नहि त एहन कत्तहु भेलय जे पाछाँ सॅं आबयवाला लोक सब चढ़ि कऽ चलि जाय और हमरा लोकनि जे अन्हरोखे सॅं ओगरने छी से मुँह तकैत रहि जाइ !

'सभ धर्मात्मा पार उतरि गेल, पापी रहल किनारे।'

पं० नमोनाथ झा बजलाह - फ फ फेर गीतक पद होमय लागल। कतहु द द दोसरो गाड़ी ने छूटि जाय !

भोलानाथ झा सभ कैं लऽ जा कऽ मोदियाइनक दोकान मे बैसौलन्हि। पं० जी और ज्योतिषिआइन्ह कैं त एकादशीए रहैन्ह। औरो लोक सभ अफसोसक मारे नहि खैलक। गामक तमहा चूड़ा, टटका दही और भेली गुड़ केवल बटुकजी कैं पैठ भेलैन्ह।

दू घंटा पहिनहि सॅं सभ गोटे प्लेटफार्म पर बैसि कऽ दुबज्जी गाड़ीक प्रतिक्षा करय लगलाह। भोलानाथ झा बारम्बार बटुक जी कैं बुझाबय लगलथिन्ह - जहिना गाड़ी लगैक तहिना तों

छड़पि कऽ जनानी डब्बा फोलिहऽ और हिनका लोकनि कैं ओहि मे बैसा दिअहुन। ताबत हम और पं० जी दोसरा कोठरी मे सभटा वस्तु चढौने रहब। पाछाँ तोहूँ आबि कऽ ओहि मे चढ़ि लिहऽ।

बटुकजी कहलथिन्ह - अहाँ मडुआ भर फिकिर न करु। हम एसगरे कुल असबाबो चढ़ा लेब और हिनका सबके बैठाइयो देबैन। अहाँ दुनु गोटे जौन जगह खुशफैल बुझाय तौन जगह बैठ जायब।

निर्दिष्ट समय सँ पौन घंटा लेट कऽ कऽ गाड़ी अबैत दृष्टिगोचर भेल। यात्री दल सुगबुगाय लगलाह। किन्तु अभाग्यबश ई लोकनि जाहि सामने बैसल रहथि ताहि सँ चारि लग्गा आगाँ बढ़ि कय गाड़ी लागल। आब त हड़बिड़रौ उठि गेल। पहिलुक सभटा प्रोग्राम गड़बड़ा गेलैन्ह।

बटुकजी भरकछ भीड़ि कय पेटी उठौलन्हि और दुलकी लगबैत बजलाह - सभ कोने एक-एक ठो चीज लेके हमरा पीछे दौड़ल आउ।

आब जकरा आगाँ जे पड़लैक से उठा कऽ दौड़ऽ लागल।

बटुकजी ओ भोलानाथ सभ सँ आगाँ बढ़ि गेलाह। लालकाकी और बुच्चीदाइ हुनका पैरे लागल गेलथिन्ह।

ढुनमुन काकी दहीक कोहा लऽ कऽ दौड़य लगलीह। किन्तु गोझनौट मे दूहू पैर फँसि गेने कोहा नेने देने मुँहे भरें खसि पड़लीह। अडाँचीक बुकनी छीटल छल्हिगर दही प्लेटफार्म पर किचकाहैन भऽ गेलैन्ह। हुनका उठाबक हेतु आवेशरानी ठाढ़ि भऽ गेलीह।

ज्योतिषिआइन तथा भखराइनवाली आगाँ रहि गेलीह कि पाछाँ से पता नहि। पं० नमोनाथ झा फिफहिया भऽ हुनका खोजय लगलथिन्ह।

ताबत एंजिन सीटी दऽ देलकैक। आब के कत्तह चढ़ल तकर कोनो ठेकान नहि रहल। गाड़ी चलय लागि गेल।

वटुकजी अपना डब्बा मे तजबीज करैत बजलाह - ले बलैया ! देखू धन्धा ! चार गो मेहरारू एह मे चढ़बे नहि कैलन ! पंडितोजी बुझाइअऽ छूट गेलन।

ई सुनितहि छिछरी-पटिया उठि गेल। दैबा रे दैबा ! केहन कुयात्रा मे चलल छलहुँ से नहि जानि ! आब कोन उपाय हैतैक ? ई कहि लालकाकी घेओना पसारबाक सुर-सार करय लगलीह।

भोलानाथ धड़फड़ा कऽ जंजीर खिचबाक हेतु सुरफुरैलाह। किन्तु बटुकजी कहलथिन्ह - अहाँ सभ नाहक घबराएल हती। हम सौंसे मूड़ी बाहर कऽ कऽ देखलीहऽ। लाटफारम पर कोनो न छुटल है। ऊ सभ पं० जीक के जोरे दोसरा कोठरी मे चहर गेल होएतन।

ई सूनि सभ गोटा कैं किछु धैर्य भेलैन्ह। लालकाकी मनहिमन कुलदेवता कैं गोहरबैत कबुला करय लगलीह जे एहि संकट सॅं उबरला पर कुमारि कैं मधुराएल भोजन करायब।

भोलानाथ झा बजलाह - चलैत काल एकटा टिटही बाजि देने रहय। हम त तखने कहलहुँ 'बिनु कारण टिटही नहि बाजय'। आब देखा चाही की-की होइ अछि !

लालकाकी सभ सॅं बेशी अपना देयादिनीक हेतु अपस्यांँत होइत अहुरिया काटय लगलीह। बजलीह - सभ गोटाक आँखि पर पाथर पड़ि गेल। गै बुचिया ! तोंहू त देखितहुन ?

बुच्ची दाइ कहलथिन्ह - हमरा त हुनके नेना कैं कोरवाही करैत-करैत विपत्ति ! ताहि पर तोहर वाला साजो और गंगाजली हमरे हाथ मे। लद्दफद्द होइत कोनो तरहें तोरा सभक पाछू धैने ऐलियौ। बटुक भैया क पैर मे जुमनाइ मिश्किल ! पाछाँ फिरि कऽ देखक की होश रहय ?

यावत धरि गाड़ी चलैत रहल तावत धरि लालकाकीक प्राण अवग्रह मे पड़ल रहलैन्ह। 'दरिभङ्गा' पहुँचैत देरी बटुकजी और भोलानाथ कूदि कऽ बहरैलाह।

बगलवाला कोठरी मे फुचुकरानी और आवेशरानी पुक्की फाड़ि कऽ कनैत छलीह। अपना पुरुष पात कैं देखि कत्तहु सॅं प्राण ऐलैन्ह। दूनू लालकाकीक लग आबि नोर पोटा चुआबऽ लगलीह। लालकाकी भरि पाँज धऽ कऽ कहलथिन्ह - हे दाइ सभ हे दाइ सभ ! तोरा बिनु आँखि हेराएल छल हे दाइ सभ ! ओइल-पाइल मे मन छल जे की करु। भरि बाट लाबा-फरभी होइत ऐलहुँ अछि। ई कहि लालकाकी आँचर सॅं आँखि पोछय लगलीह।

भोलानाथ झा बजलाह - आब एहि कन्ना-रोहटि सॅं कोन फल ? और-और लोकक पता लगाबक चाही।

ताबत पं० नमोनाथ झाक स्वर कर्णगोचर भेल - औ कत्तहु भ भ भोलानाथ बाबू ......

भोलानाथ बजलाह - हॅं, हॉं यैह, यैह।

पं० जी भखराइनवाली तथा ज्योतिषिआइन कै नेने पहुँचि गेलाह। हतासें सभक प्राण सुखाएल छलैन्ह।

अपना संग-समाज कैं पुनः जुटल देखि लालकाकी बजलीह - धन्य भगवान ! बड़ रक्षा रखलन्हि। नहि त आइ कोन दशा मे रहितहुँ ?

जखन सभ बैसैत गेलीह तखन मोटरी-चोटरीक हिसाब होबय लागल।

ढुनमुनकाकी डेराइत-डेराइत कहलथिन्ह- दहीक बासन त हमरा बुतें फूटि गेलैन्ह।

बटुकजी कैं सकरी मे दुइए छौ दही भेटल छलैन्ह , ताहि सॅं कनेक छुछुआयले जकाँ उठल रहथि। बजलाह - ओह ! जनती त हुँअई खूब ठेल कऽ खा लीती। छुच्छे चिउड़ा से गड़ा लगैत रहे से लेबे न कैली, और मङ्गनी मे सब दही टीसने पर जियान हो गेल।

ओ दही लालकाकी बड़े यत्न सॅं पौरने रहथि। कनेक अभिरोष करैत बजलीह - हम अपने हाथ मे नहि लेलहुँ तकर फल थिक।

ढुनमुनकाकी ठोर बिजुका कऽ बाजऽ लगलीह - हे दिनकर ! जौं हम जानि बुझि कऽ फोड़ने होइऐन्ह त हमरा काया मे घून लागय, हमर समाङ नहि काज आबय ....।

आबेशरानी हुनका मुँह पर हाथ धरैत कहलथिन्ह - हाँ ! हाँ ! शपथ केओ खाय ? दही कोन वस्तु छैक ? लोक रहल चाहय।

लालकाकी ठकुआ कऽ बजलीह - सैह कहथु बहिना ! हम की कहने छलिऐन्ह जे एतेक लगलैन्ह ? हम त यैह ने बजलहुँ जे अपने हाथ कें किएक ने लेलहुं। ई कि कोनो गारि भेलैक ?

एकाएक भोलानाथ कैं अपन छाता मन पड़लैन्ह। बजलाह - जाह ! हमर छत्ता की भेल ? हौ बटुक जी ! हम तोरे हाथ मे देने रहियौह।

बटुकजी कहलथिन्ह हम त पेटी उठाबे के बखत छत्ता हुँअइ रख देने रही। आब हुँआ से कोन सार उठैलक से न मालूम।

पं० नमोनाथ झा बाजय लगलाह हाँ हाँ हाँ हाँ हाँ ग ग ग ग गारि नहि दहौक। ह ह हमहीं उठा कऽ रखने छी।

एवं प्रकारें खोज-पुछारी होइत-होइत अन्ततोगत्वा पता लगलैन्ह जे और सभ वस्तु त सकरी मे चढ़ि गेल , लेकिन एकटा मोटरी ओत्तहि छूटि गेल जाहि मे सभ गोटा कऽ भिजल नूआ लपेटि-सपेटि कऽ बान्हल रहैन्ह ; फुचुकरानीक पटोरो ओही मे रहैन्ह। ओ ठोर पटपटबैत बजलीह - ततेक ने पटोर-पटोर भेल जे पटोर जाइते रहल ! नीक भेलैक।

भखराइनवाली रसगुल्ला कोरक तिनपढ़िया साड़ी कैं लाल रंग मे कुंडाबोर कऽ रङ्गने रहथि। से दु दुइयो दिन नहि पहिरि सकलीह। शाप दैत बजलीह - ओ मोटरी जे नेने होय तकरा भगवान भोग नहि दिहऽथिन्ह।

ज्योतिषिआइन फेरल साड़ी फाटल-पुरान जकाँ रहैन्ह। कहलथिन्ह - जाय दियऽ। तीर्थ-यात्रा मे जे वस्तु हेरा जाय, तकर बेशी सोच नहि करक चाही।

पं० नमोनाथ झा बजलाह - 'प प प प्रथमग्रासे मक्षिका पातः' भऽ गेल। आबो च च च चेति कऽ चलक चाही।

समस्तीपुर पहुँचला पर सभ गोटे उतरैत गेलाह। मालूम भेलैन्ह जे दस बजे राति कऽ गाड़ी भेटत। बटुकजी कहलथिन्ह अभी त पाँचे बाजल हे इतना देर लाटफारम पर बैठ कऽ की करब ? मुसाफिर खाना मे चलै चलू।

किन्तु भोलानाथ झा कहलथिन्ह- 'एतेक वस्तु-जात लऽ कऽ मुसाफिरखाना जाएब और फेरि ढो कऽ आनब ताहि मे त बड़ भीड़ पड़ै जाएत। जतय गाड़ी लगतैक तत्तहि चलि कऽ सभ गोटे बैसइ जाह। ओहि बेरक हड़बड़-दड़बड़ नहि ठीक।

पुल पार कय निर्दिष्ट स्थान पर बटुकजी बड़का सतरंजी खोलि बिछौलन्हि। लालकाकी प्रभृति बैसैत गेलीह। तीनू पुरुष किछु फराक हटि कम्बल पर बैसलाह।

भोलानाथ बटुकजी कैं कहलथिन्ह-"हौ! आइ तोरा छोड़ि कऽ सभ निराहारे छथुन्ह। आबहु त उपवास-भंग करबहुन।

ज्योतिषिआइन बजलीह-हम आइ एकादशी कै कऽलक पानि की पिउब ? अहाँ लोकनि खाइ- पिबै जाउ।

पं० नमोनाथ झा बजलाह-'हँ, से त हमरो एहिठाम फ.....फ.... फलाहार करबाक प्रपन्नता नहि होइत अछि, तथापि क....क....कनेक किछु लऽ कऽ 'उपवास-खण्डन' कऽ लेब।'

लालकाकी चङ्गेरी खोलि कऽ साँच , पिडुकिया, टिकरी और भुसबा बाहर करय लगलीह। बटुकजी एक तमघैल पानि कल सँ लय ऐलाह। स्त्रीगण कैं त सहल पेट मे अधिक नहि खा भेलैन्हि। किन्तु बटुकजी बड़ी काल सँ सोन्हाएल छलाह। चङ्गेरा मे जतेक साँच और भुसबा बाँकी बचलैक से चूरमूर समेत अपना आगाँ मे उझीलि , डाला झाड़ि कय ब्रह्मक पूजा करय लगलाह।

भोजन सँ करीब डेढ़ घंटा बद बटुकजीक पेट मे दर्द उठलैन्ह। टटाएल ठकुआ और सुखाएल आमक फाँड़ा अँतड़ी कैं ऐंड़य लगलैन्ह। ओ कच्छ-मच्छ करय लगलाह।

भोलानाथ कहलथिन्ह-'जा, एक बेर नदी दिस सँ भऽ आबह। पेट खुलासा भेने मन हल्लुक हैतौह।

बटुकजी एक लोटा पानि लऽ अन्हार माथे बिदा भेलाह।

थोड़ेक काल मे बटुकजी आबि कोइलाक छाउर सँ हाथ मटियाबैत बजलाह-हमरा त कुत्था शुरू हो गेल है। निछक्के पानी झरल है। हे लिउ, फेर खोंच मारे लागल। '

ई कहैत बटुकजी पुनः कान पर जनौ चढ़बैत जेम्हरे सँ आएल रहथि ताही दिस फेरि झटकैत बिदा भेलाह।

दुइये मिनट बाद एक रेलवे कर्मचारी शब्द सुनाइ पड़ल-कौन है? तदनन्तर किछु हल्ला गुल्ला ओ धड़पकड़ जकाँ बूझि पड़ल। बटुकजी खाली हाथ डोलबैत पहुँचलाह। अपन बुधियारी देखबैत बजलाह - लोटा त सार छीन लेलक, लेकिन हम अपने केनतो कऽ निकस ऐली।'

भोलानाथ खिन्न भऽ बजलाह-'विघ्न पर विघ्न उपस्थित भेल जा रहल अछि। भगवतीक की इच्छा छैन्ह से नहि जानि!

पं० नमोनाथ झा हुनक समर्थन करैत श्लोक पढ़य लगलाह-

'एकस्य दुःखस्य न या या या ...... ' हुनक कष्ट देखि भोलानाथ झा पूर्त्ति कऽ देलथिन्ह- '........यावदन्तम्, गच्छाम्यहं पारनिर्वाणवस्य! तावद्द्वितीयं समुपस्थितं मे, छिद्रेष्वनेर्था बहुली भवन्ति।।

तावत टप-टप बुंद पड़य लागल। गाड़ी ऐबाक घंटी पड़ि गेल रहैक तैं ओहिठाम सँ हटबोक उपाय नहि! अगत्या स्त्रीगण भीजय लगलीह। तीन पुरुष मे एकेटा छाता रहैन्ह ; अतएव ओ लोकनि और बेशी भिजैत गेलाह। दस मिनटक भीतर सभक कपड़ा भीजि कऽ शरीर मे सटि गेलैन्ह। ज्योतिषिआइनक सौंसे देह जाड़ सँ भुलकय लगलैन्ह।

तावत कटिहारक एक्सप्रेस ट्रेन प्लैटफार्म कैं दलमलित करैत धड़धड़ाइत आबि पहुँचल। ग्रहणक कारण ओहि मे ठसाठस भीड़। भीतर तिल रखबाक जगह नहि , और बाहर दुहू कात लोक बादूर जकाँ लटकल!

गाड़ीक त ई हाल और प्रत्येक डब्बाक सामने हाँजक हाँज मुसाफिर चढ़क लेल सतुआ-सम्मर बन्हने, फाँड़ कसने तैयार! ई रेड़ बहेड़ देखि भोलानाथक होश गुम भऽ गेलैन्ह। हताश भऽ बजलाह-बटुकजी आब की होबक चाही?

बटुकजी कहलथिन्ह-'हमरा पेट मे त विपता सन्हियाएल छथ। एखनीओ हूर मारैअऽ। न त कोनो अक्किल हम जरूर लगैती।

पं० नमोनाथ कहलथिन्ह-नइँ होए त ई ट्रेन छोड़ि कऽ दोसरा ट ट ट ट्रेन सँ चलै चली।

भोलानाथ म्लान भऽ बजलाह-'दोसरा ट्रेन मे त अहु सँ बेशी रोड़ पड़ैत रहत जौ एहि गाड़ी सँ नहि जा सकलहुँ त बूझू जे काशी नहिए पहुँचि सकब।'

ई सुनितहिं स्त्री-वर्ग में घोर निराशा व्याप्त भऽ गेल। ज्योतिषिआइन जोर सँ निसास छोड़ैत टेर लगौलन्हि-हे बाबा, कोनो तरहें डोरी खीचह; पार घाट लगाबह।

लालकाकी बजलीह-'अही द्वारे हम भुकै छलहुँ जे दू दिन और पहिनहि विदा होइ जाउ। आव केहन बूझि पड़ै छैन्ह?

पुरुष-वर्ग कोनो तरहें नेहोरा कय एक चकैठ सन कुली कैं राजी कैलन्हि। ओ एक आना फी आदमी पर सभ गोटा कैं गछि लेलकैन्ह। भोलानाथ एकटा दुअन्नी अगाउ दैत कहलथिन्ह - ले, एखन तोरे कान्ति चमकैत छौ। आब लऽ चल, जहाँ अऽ चलबैं।

कुली दुअन्नी कैं तजबीज कय गेंठी मे खोंसैत बाजल - रौआ सभ नाहक घबराइत बानी। एकठो माल के डब्बा एह मे जोड़ाइ। ओही मे सभ जना के चढ़ा देहब नू ?

मालक डब्बा जोड़ाइत देरी दू-अढ़ाइ सै यात्रीक झुण्ड एक्के बेरि रेड़ि कऽ देलक। एक्के टा मुँह, ताहि मे सभ समाएल चाहय ! केओ मुड़िया मारैत सन्हियाएल, केओ घुसकुनिया काटैत पैसल। केओ ककरो देह पिचैत चढ़ल ; केओ ककरो मोटा पर लात दैत छड़पल। तेहन अन्धाधुन्ध भेड़िया- धसान मचल जे ककरो धड़-मूड़ीक ठेकान नहि रहल ! धक्का-मुक्की मे ककरो हाथ थुड़ाएल। ककरो आँखि मे एक केहुनाठी लागल ; ककरो नाक पर एक हुथुक्का लागल। तथापि खसैत-पड़ैत सभ उपरा- उपरी करैत कोनहुना मालक पेट मे सन्हियाय लागल।

धक्का मे पं० नमोनाथ झाक पाग कतय जा कऽ खसलैन्ह तकर पता नहि। भोलानाथक छाता तिरा गेलैन्ह; केवल डंटी टा हाथ मे रहि गेलैन्ह। बटुकजी एगोटा क माथ पर दऽ छड़पऽ लगलथिन्ह। किन्तु ताबत ओ उचङ्गि गेल , जाहि सँ बटुक जी भट्ट दऽ औन्हे मुँहें खसि पड़लाह। ओहि वेग मे पड़ि दोसरो गोटे पेटी नेने देने हुनकहि पीठ पर खसल। बटुक जी तर सँ किकिया उठलाह।

देखैत-देखैत पाँच मिनट मे सम्पूर्ण डब्बा खचाखच भरि गेल। लालकाकी क कुली पहिने पहिने मोटरी-चोटरी सब भीतर कऽ फेकि देलकैन्ह। तदनन्तर जनी-जात कैं धऽ धऽ कऽ भेड़-बकरी जकाँ रुण्ड-मुण्डक झुण्ड मे कोंचय लगलैन्ह। अन्हार कुप्प मे जनसंकूलक बीच के कतऽ ठुसायल तकर ठेकान नहि।

लालकाकी बुच्चीदाइ कैं छापि कऽ बैसलीह। ढुनमुन काकी नेना कैं गहियौने पिचैबाक डरें एक कोन मे ठाढ़ि रहलीह। किन्तु बेचारीक आँखि मे कोयलाक बुकनी पड़ि गेलैन्ह जाहि सँ

आँखि मिड़ैत-मिड़ैत प्रलय भऽ गेलैन्ह। ज्योतिषिआइन कैं घुरमी लागऽ लगलैन्ह। ओ दम्म साधि कैं मोटाक ढेरी पर सुटुकि , कऽ अपनो मोटरी भऽ गेलीह। भखराइनवालीक नुआ मे अलकतरा लागि पोता गेलैन्ह। आवेशरानी कैं पियासे कण्ठ सुखाय लगलैन्ह।

एवं प्रकारें 'त्राहि कृष्ण ! त्राहि कृष्ण !' करैत ई लोकनि भोर होइत-होइत छपड़ा पहुँचैत गेलीह। आब उतरबाक रेड़ि मचल ! ठेलम ठेला मे स्त्री वच्चाक प्राणरक्षा हेतु भोलानाथ दुर्गाक कीलमंत्र पाठ करय लगलाह।

थोड़ेक काल मे डब्बा खाली भेला पर बटुकजी अपन बहादुरी देखबैत बजलाह - आब सभ केओ उतरबो करब की एही मे बैठल रहब ? हियाँ गाड़ी बदली होयत।

आब गेठरी-मोटरीक जोह होबय लागल। भीजल मोटा सभ असंख्य लतखुर्दनक प्रसादात् मोक्षावस्था प्राप्त कऽ गेल छल। लालकाकीक साजो थकुचा कऽ सरि बराबर भऽ गेल छलैन्ह। ढुनमुनकाकीक पेटी पचकि कऽ निमकीक आकार ग्रहण कैने छलैन्ह। वस्तुजातक ई वत्राचार देखि लालकाकी हकन्न कानय लगलीह।

ता ज्योतिषिआइन कैं चाउन्हि आबि गेलैन्ह। हुनका सभ केओ हाथे-पाथे उठा कऽ बाहर लऽ एलैन्ह। आवेशरानी आँचर सँ बसात करय लगलथिन्ह। पं० नमोनाथ झा एक चूरू पानि लऽ कऽ मुँह मे देबय लगलथिन्ह। किन्तु बूढ़ी हाथक इशारा सँ मना कऽ देलथिन्ह। कुहरैत-कुहरैत कहलथिन्ह-'पहिने कुम्हड़क खण्ड सँ हमरा पारण कराबह, तखन कोनो वस्तु मुँह मे देबौह।'

भोलानाथ बटुकजी कै पोल्हबैत बजलाह-हौ बटुकजी! एहि ठाम तोंही सभ सँ बेशी चड़-फड़ छह। कत्तहु सँ कुम्हड़ ऊपर करह।'

बटुकजी अपना चातुर्यक दाबी करैत बजलाह-ई कोन भारी बात है? सजकोंहड़ा त आइ हमरो फैदा करत।

ई कहि बटुकजी बिदा भेलाह। तावत सभ केओ कल पर मुँह हाथ धोइत गेल। दातमनिक अभाव मे छाउर सँ दाँत रगड़ि टुटलाही साजीक कमची लऽ कऽ जिभिया भेल। स्त्रीगण अपन-अपन समसल नूआ फेरय लगलीह।

बटुकजी हलुआइक दोकान सँ एक दोना कुम्हड़क मोरब्बा नेने पहुँचलाह। से देखि बूढ़ी फुड़फुड़ा कऽ उठलीह। और-और लोक केरा तथा रामदानाक लड्डु खा कऽ पानि पिबैत गेल।

तावत गर्द उठल जे काशीक गाड़ी आबि रहल अछि। ई सुनितहिं यात्री-दल मे नव जोश भरि गेलैक। हाथें-पाथें गठरी-मोटरी नेने सभ लपकि कऽ बिदा भेल।

भाग्यवश जनानी गाड़ी मे किछु खाली रहैक। लालकाकी अपन संपूर्ण दलक सहित ओहि मे प्रवेश कैलन्हि। कोनो-कोनो तरहें समावेश भेलैन्ह। किन्तु हाथाबाँहि मे एकटा माउगिक हुक्का मे धक्का लागि लगलैक। तकर पानिक छिटका ज्योतिषिआइनक मुँह पर पड़ि गेलैन्ह। हुक्काक अशुद्ध पानि पड़ने ज्योतिषिआइन माहुरक घोंट पीबि कऽ रहि गेलीह। किछु बजने मुँहक भीतर पानि पहुचि जैतैन्ह, ताहि डरें ओ मुँह घोकचौंने और ठोर मुनने रहलीह।

ढुनमुन काकीक नेना ठाढ़े-ठाढ़ एगोटाक सातुक मोटा पर लघी कऽ देलकैन्ह। ओ माउगि जबर्दस्त रहय। ढुनमुनकाकीक पहुँचा पकड़ि सातुक दाम वसूल करय लगलैन्ह। आवेशरानी हुनकर हाथ छोड़ाबक हेतु उठलीह। ताबत गाड़ी में एंजिनक धक्का लगलैक। ओ तलमलाइत-तलमलाइत बेसम्हारि भऽ एक लहठीक चङ्गेरा पर जा खसलीह। कइएक जोड़ लाल-पीयर लहठी भुरकुस भऽ गेलैक। आब लहेरिन हुनकर कोंचा धैलक। एहि तरहें जनानी गाड़ी मे महाभारत मचि गेल।

ओम्हर मर्दाना गाड़ी मे कत्तहु जगह नहि। भोलानाथ प्रभृति सूपक भाँटा जकाँ एम्हर सँ ओम्हर ढेङ्गराय लगलाह। ताबत एंजिन सीटी दऽ देलकैक। बटुकजी छड़पि कऽ हैंडिल पकड़लन्हि और पावदान पर चढ़ि गेलाह। भोलोनाथ तहिना कैलन्हि।

पं० नमोनाथ झा तहिना फानऽ लगलाह , किन्तु हैंडिल नहि धराइ देलकैन्ह। दोबारा चेष्टा करय चाहलैन्ह, ताबत गार्ड पकड़ि कऽ हटा देलकैन्ह। पं० जी चिचिया कैं भोलानाथ कै कहय लगलथिन्ह - अहाँ अपने त ल ल ल ल लटकल चल जाइ छी , और हम एत्तहि छूटि गेलहुँ। आब हम क क की करु ?

ता गाड़ी धड़धड़ाइत बहुत आगाँ बढ़ि गेल जाहि सँ पं० जीक अरण्य-रोदन भोलानाथक कान मे नहि पड़लैन्ह।

क्रमशः बलिया, गाजीपुर होइत गाड़ी दू बजेक करीब सारनाथ पहुँचि गेल। आब अगिला स्टेशन काशीए भेटत , ई बुझितहि यात्री-दल बाबा विश्वनाथक जयघोष करय लागल। लालकाकीक दल आनन्दक उमङ्ग मे टहंकार सँ गीत उठा देलक-

बाबा विश्वनाथक मन्दिर मे सोनमा चमचम चमकै ना।

----===----

8. ग्रहण-स्नान

काशी स्टेशन पर उतरितहिं , यात्री-दल कैं चारू कात सँ पंडाक झुण्ड घेरि कऽ चरो-बेरो कऽ लेलेकैन्ह। बाप-पितामहक नाम बूझि एक पंडा भोलानाथ आगाँ लगलैन्ह , दोसर पाछाँ। फाटक सँ बहराइतहिं भीम पंडा कुली कैं ललकारि एक ताङ्गा पर पेटी लदबाबय लागल! ई देखि हनुमान पंडा लपकि कऽ अपने हाथ सँ मोटरी सभ उचङ्गि कऽ दोसर ताङ्गा पर राखय लागल। छीनाछोरी मे आधा -छीधा सामान कत्तहु गेल ; आधा-छीधा कत्तहु। भोलानाथ कैं कोनो अक्क-बक्क नहि फुरलैन्ह। भीम पंडा हुनकर गट्टा पकड़ि कऽ एक दिस लऽ चललैन्ह। ई देखैत हनुमान पंडा बटुक जी कैं कोर मे उठा कऽ चाँपि लेलकैन्ह। बटुकजी ओकरा काँख तर सँ गारि पढ़य लगलथिन्ह। किन्तु ओ एकोरत्ती सुनबाहि नहि कैलकैन्ह। तखन बटुकजी किटकिटा कऽ दाँत सँ भम्होरय लगलथिन्ह। तावत दूनू ताङ्गावाला अपन-अपन घोड़ा कैं टिटकारीदैत ओहिठाम पहुँचि गेल। आब ओहू दूनू कैं आपस मे बाझि गेलैक। स्त्री लोकनि 'शैलाधिराजतनया न ययौ न तस्थौ" जकाँ थकमकाइत रहि गेलीह ।

एतबहि मे रेवतीरमण पालकी गाड़ी नेने पहुँचि गेलाह । पित्तिक पैर छुबैत बजलाह - हमरा त जानल छल जे आइ भोरेक ट्रेन सँ उतरै जाएब तैं भिनसरे पहुँचल छलहुँ ।

भोलानाथ कहलथिन्ह - हँ, सकुड़ी मे ओ गाड़ी छूटि गेल, ताहि सँ आबऽ मे देरी भऽ गेल ।

रेवती एम्हर-ओम्हर ताकि बजलाह - पं० जी कैं नहि देखैत छिऐन्ह ?

भोलानाथ बजलाह - हँ, ओ छपरा मे छूटि गेलाह । अगिला ट्रेन कय बजे अबै छैक ?

रेवती कहलथिन्ह - एक गाड़ी दस बजे राति कऽ औतैक । ताहि सँ ओ पहुँचताह । आब हमरा फेरि स्टेशन पर आबय पड़ल !

ई रंग-ढंग देखि दूनू पंडा घसकि गेल । दूनू तांगा सँ पालकी गाड़ी पर सामान लादय लागल । तखन पता लगलैन्ह जे बटुक तसला वला बोरा गायब अछि ।

बटुकजी कहलथिन्ह - ई जरूर ओही पंडा के काम है । हम त निम्मन जगती ओकरा बदमाशी के मजा चखा देती, लेकिन ऊ हमर हाथे सकपंज कैने रहे त हम करै छी की ?

भोलानाथ अफसोस करैत बजलाह - देखू एतेक गोटा छलहुँ। ककरो दृष्टि नहि पड़ल। और देखैत-देखैत द्रव्यजात लऽ कऽ पार भऽ गेल !

रेवती कहलथिन्ह तखन ओ दूनू काशीक गुंडा छल। ई सभ 'गाँगा स्वाइत' जकाँ पहिनहि सँ सीखा-बुद्धी कैने रहै अछि। आब की ओकर पता भेटत ?

'बोरा लऽ गेल ' ई सुनैत लालकाकी माथ पीटय लगलीह। थारी-बाटी , लोटा-गिलास, तमघैल, बहुगुना-सभक गुन मन पड़य लगलैन्ह। बजलीह - गैटक गैंट बासन साँठि कऽ लायल छलहुँ। से सभटा उचङि लेलक! कोढ़िया लाहेब कैलक।

लालकाकी ओकर 'सराध-विट्टारि' कतय लगलीह और भोलानाथ वर्त्तन-वासनक दाम जोड़य लगलाह। रेवती कहलथिन्ह - आब एहि सब सँ कोन फल ? जकरा अंश मे छलैक से लऽ गेल। आब चलू डेरा पर चलै चलू।

पालकी गाड़ी ढकर-ढकर करैत असीघाट दिस चलल। बाट मे एक स्कुलिया लड़की कैं साइकिल पर चढ़लि देखि बुच्चीदाइ कहलथिन्ह - देखही गे माय ! कोना हँकने जाइ छैक ?

लालकाकी कैं बासनक सोच रहि-रहि कऽ हूर मारै छलैन्ह। बजलीह - गै छौंड़ी ! बेशी लुचलुच नहि कर। तोंहू ओहिना चढ़ि कऽ चलिहें। हम सोचे मरल जाइ छी , एकरा लेल धन सन !

आवेशरानी कहलथिन्ह - त ! कतेक रासे पात्र छलैक। हमरो जी कचटैत अछि।

ताबत ढुनमुनकाकीक नेना भूपाली राग पसारि देलकैन्ह। लालकाकी लोहछि कऽ बजलीह - ई छौड़ा त उकछा कऽ छोड़ि देलक। कौखन संचमंच नहि रहत। एहन कनना नेना ने देखलहुँ। एकोबेर मुँह सपटीओ त ने लगैत छैक।

किन्तु नेना और जोर सँ चिचियाय और खुरछाही काटय लागलैन्ह। तखन लालकाकी ओकरा झमोरि कऽ ढुनमुनकाकीक कोर मे पटकि देलथिन्ह - राखू अपन बेटा कैं। लंगो चंगो कऽ कऽ छोड़ि देलक ! तखन सँ उछन्नर कैने अछि !

ढुनमुनकाकी खिचले चाट ओकरा गाल पर लगबैत बजलीह - धमधुसरा मरबो त ने करै छैं ! कहाँ सँ ऐबो कैल !

डेरा पर पहुँचि रेवती कहलथिन्ह - यैह मकान भाड़ा लेल गेल अछि। अहाँ लोकनि सुचित्त होइ जाउ। तावत हमरा सब बाजार जाइत छी। बटुकजी जौं तेल भरबाक हो त लालटेन लऽ लेब।

भोलानाथ बजलाह - जाह ! लालटेन त गामे पर बिसरि गेल। चलय काल ककरो सोहे पर नहि रहलैक।

बटुकजी कहलथिन्ह - हमरा याद त रहे, लेकिन जतरा के बखत लालटेन के नाम लीती ? सब हमरे पर मार-मार कऽ छुटैत !

लालकाकी 'लाल' क नाम द्वारें लालटेन कैं 'रामटेन' कहैत रहथिन्ह। बजलीह - यात्रा पहर 'तेल' क नाम नहि लऽ कऽ 'चिकनइ' बाजक चाही। किन्तु 'रामटेन' कहने कोन दोष ?

पुरुषवर्ग डेराक सल्तनत कय आवश्यक वस्तु किनय-बेसाहय बाजार चललाह।

स्त्रीगण ओसारा पर शतरंजी बिछा सुस्ताय लगलीह। ज्योतिषिआइन पेटकुनियाँ दऽ कऽ कुहरय लगलीह - आहि, आहि, आहि ! गत्तर-गत्तर टूटल जा रहल अछि।

भखराइनवाली हुनकर तात्पर्य बूझि पैर जाँतय लगलथिन्ह। ज्योतिषिआइन कहलथिन्ह हँ ओहिना कऽ घुट्ठी दबा दियऽ। भगवान बेटा देथु। .....कनेक और जोर सॅं ....हाँ , हाँ .... ओतेक जोर सॅं नहि। जाउ, लोहछा देलहुँ।

ज्योतिषिआइन कैं जँतबैत देखि लालकाकी अपना देयादिनी पर अनुरोध करैत बजलीह - गै बुचिया ! पितिआइनक पैर टटाइत हेतौक। कनेक ससारि दहुन।

ढुनमुनकाकी कैं एहि कथाक गूढ़ मर्म नहि बूझि पड़लैन्ह। ओ पैर पसारि कऽ बुच्चीदाइ सॅं मुक्की लगबाबऽ लगलीह।

ई देखि लालकाकी कैं विवेक छुटलैन्ह। अभिरोष करैत बाजऽ लगलीह - संसार मे ककरो केओ नहि। जखन अपना कोखिक धी-बेटी अपन नहि होइत छैक , तखन अनकर बाढ़लि देयादनी- गोतनी की काज औतैक ? हम त अन्तकाल धरि मैंयाक अप्पन भरि सेवा करैत गेलिऐन्हि। मुरितो काल आशीर्वाद देलन्हि- 'ऐ मधुरानी! अहाँ बड़ सेवा कैल। भगवान हमरा सन मौगति सभ कैं देथुन्ह। मुदा आबक बहुरिया ककरो गोदानैत छैक ? जेठ जेठानुस कैं देखि कऽ जाँतक डरें छीह कटैत अछि। कनिया-बहुआसिन अपने फुरने तेल-कूर लगाओति से त आब सिहन्ते रहत। कनेक आङ्गुर फोड़य कहबैक त आङ्गुर तोड़ि कऽ धऽ देति। आब अपने समाङ्ग पर भरोस राखक चाही।'

किन्तु लालकाकीक तीर खाली गेलैन्ह। किऐक त ढुनमुनकाकी एतेक ठेहियाइलि छलीह जे थकनी उतरबैत-उतरबैत हुनका झक लागि गेलैन्ह।

अपना बातक सुनबाहि नहि होइत देखि लालकाकी कैं और बेशी पित्त उठलैन्ह। ढुनमुनकाकी कैं देखि कऽ हुनका ढोंठ , थेथर, अलच्छ ओ कर्कशा स्त्रीक सभटा उपलक्षण मन पड़य

लगलैन्ह। ओ दयादिनी कैं वेधक हेतु चुनि-चुनिक अन्धोक्ति , वक्रोक्ति, ओ व्यंग्योक्तिक विषाण वाण छोड़य लगलीह। आवेशरानी कैं संबोधन कय कहऽ लगलथिन्ह- 'मैंया कतेक 'फकरा' जनैत रहथि तकर ठेकान नहि! एकटा ढीठ मउगि पर कहथिन्ह-

'आहि ! आहि ! आहि ! बड़ मथवाहि ! धान कुट रे मनुसा ! हम दुख मरै छी ! आहि ! आहि ! आहि ! बड़ सुलवाहि ! घूरि बैस रे मनुसा ! हम सुरपेटै छी।

एकटा 'अलच्छ' पर कहलथिन्ह-

'लछमिनि दैया !' 'तों कोना बुझलैं रे भैया !' 'ओलतीक खढ़ चढ़ल गऽ टोइया' तैं हम बुझलौं लछमिनि दैया !'

'एकटा 'छुद्रघंटी' पर कहथिन्ह-

'डोला सँ बहु लऽवऽली ऎपन देखि विधुअइली। कोन धी-डाही ऎपन देल ? सेर भर चाउर मोर ऎपनहिं गेल! तेहन बनाएब घर तेहन बनाएब! ऎपन पोछि कऽ लिटटी लगाए!'

''एकटा 'भरछुलाहि'पर कहथिन्ह- ओ धीजरुआ तीन तिमन संग , नोन तेल मिरचाई। हम कुलवन्ती छुच्छे खाइ छी, दही दूध मिठाई !

एकटा 'कर्कशा' पर कहथिन्ह

सुतल पड़ल हम सब देखै छी , कनखी केकरा दै छी ? मारि लाठिए हम घूठ तोड़ै छी , तरकी बेचि कऽ बरद किनै छी। ईह ! सुतल पड़ल जे यैह अरजै छथि। आनक तरकी बलहुँ बेचै छथि। 'कहथि 'घुटर कवि' सुनऽ हो काका ! आबक बहुआसिनक की करै छऽ लेखा !

किन्तु ऎतेक कहलो पर ढुनमुनकाकीक ध्यान आकृष्ट नहि भेलैन्ह। ओ पूर्ववत औंघी मे भेर भेलि शान्तिपूर्वक अपन पैर जँतबैत रहलीह। ई देखि लालकाकीक ज्वालामुखी भभकि उठलैन्ह। ओ एक बेरि बुमकार छोडैत देयादिनी पर छुटलीह - अयँ ए ! बड़ सधोरि अहाँक जे पुरुषाइन बनि कऽ हमरा सोझा टाङ्ग पसारने छी !'

आब जा कऽ ढुनमुन काकी कैं होश भेलैन्ह जे एतीकाल सँ हुनके पर फुलझडी छुटैत छलैन्ह। ओ बुच्चीदाइ कैं झटकारि कऽ कहलथिन्ह - कोन पाप लागल जे हम हिनका बेटी कैं अपन पैरो छूबय देलिऎन्ह ! बुच्चीदाइ हमरा दूरि करबैत छथि। जौं हमरा लग नहि अबितथि त एतेक फज्झति-गंजन किएक होइत ? हम त सोझिया लोक ! एतेक राग-स्याख की जानऽ गेलिऎ ?

ई कहैत-कहैत ढुनमुनकाकी कैं घघा क् नोर बहय लगलैन्ह।

बुच्चीदाइ पितियाइनक पक्ष लैत बजलीह - ऐं गै ! तों अपने जताबहू कहलहुन और आब उनटे बिगरबो करै छहुन !

लालकाकी लोहछि कऽ बजलीह - गै धोंछी ! तों बीच मे लुब लुब नहि कर। तोरो बुझलिऔक ! एतेक त नहि भेलौक जे माय थाकलि अछि।

बुच्चीदाइ अपना माइक पैर जाँतऽ गेलीह , किन्तु ओ जोर सँ हाथ झटकि कऽ कहलथिन्ह - 'आब जे हमर पैर छुबय से हमरे माथ लात देबय। जौं भक्ति रहितौक त पहिनहि ने अबितैं! हम एहन खङ्गष्टल नहि छी जे रकटल जकाँ अपने मने पैर पसारि देबौक।'

तावत आवेशरानी आबि कऽ गोबर-माटि लगाबय लगलीह- 'जाय दियऽ। जे भेलैक से भऽ गेलैक। तीर्थ स्थान मे आबि कऽ केओ झगड़ा दन्न करय ? ज्योतिषिआइन कहलथिन्ह-'जाउ ऐ भखराइन वाली! अहाँ फुचुकरानी कैं चुप्प कऽ दिऔन गऽ। रूसल कैं बौसी नहि , फाटल कैं सीबी नहि, त बढ़ले जाय!

लालकाकी सरदारक टोन मे बजलीह-'ऐ फुचुकरानी! आबो अपन भाभट समटू। नहि त हमहीं कतहु पड़ा कऽ चलि जाइ छी।'

ढुनमुनकाकी गर घिंचैत अपना कर्मदोषक घमर्थनि करय लगलीह।

तावत ओम्हर सँ रेवतीरमण , भोलानाथ और बटुकजी बासन , घैल, बाढनि, डिबिया, जारन ओ सीधा-सामग्री नेने पहुँचि गेलाह। रेवतीरमण कनेक क्षुब्ध होइत कहलथिन्ह- 'एहिठाम कथीक घाँउ-माँउ होइत छल ? अबतहिं एना घोंघाउज होमय लागल! 'मिसर' औताह त ई सभ देखि कऽ की कहताह?

आब शान्त भेला पर स्त्रीगणक विचार भेलैन्ह जे सभ सँ पहिने गंगास्नान होएबाक चाही। बटुकजी और भोलानाथ कैं डेरा अगोरऽ लेल छोड़ि रेवतीरमण सभ स्त्री कैं लऽ कऽ घाटक बाट धैलन्हि। असीघाट पर पहुँचि लालकाकी बजलीह-धन्य भाग जे आइ एहन दिन भेल! काशीक गंगा भेटलीह। देखिते सभ पाप कटित भऽ गेल।'

ई कहि ओ उमकि कऽ गीत उठा देलन्हि-

'गंगा माइक लहरी। देखैत सकल पाप गेल बहरी। ' स्त्रीगण पहिने एक चूडू गंगाजल माथ पर सिक्त कय गंगाजी मे पैसलीह लालकाकी घुमि-घुमि कय अपना घर भरिक साँति डुब देमय लगलीह।

ऊपर भेला पर सभक विचार भेलैन्ह जे आइ गंगाजले मे भानस होऐ। आवेशरानी घैल मे गंगाजल भरि लेलन्हि। थोड़ेक दूर ऐला पर सब्जी-मण्डी भेटलैन्हि। रेवती कहलथिन्ह- 'जौं कोनो तरकारी पसन्द पड़य त किनने चलू।

बुच्चीदाइ बजलीह-गे दाइ! ई कोन कदीमा छैक ? एहि रंगक कदीमा नै कहियो देखने छलिऐक!

लालकाकी कहलथिन्ह-तों देखलैं कहिया ? "सावन जनमला गीदड़ ; भादव आएल बाढ़ि। कहलन्हि जे एहन बाढ़ि कहियो ने देखल !"

रेवतीरमण कहलथिन्ह - नहि नहि ! तोरा सभ नहि चिन्हलही। ई बनारसी भाँटा थिकैक।

लालकाकी बजलीह - ऐं ! भाँटा छैक ? तखन यैह नेने चली। आइ राति एकरे साना होऐ।

ज्योतिषिआइन कहलथिन्ह - हम त द्वादशी कैं भाँटा खाएब नहि। भेटैत त किछु फल-फलहारी एम्हरे सॅं किनने चलितहुँ।

तावत आवेशरानी चमकि कऽ बाजि उठलीह - देखथुन्ह ऐ बहिना ! बनारसी बैर जे सुनै छलिऐक से देखथुन्ह त कतेक टा होइत छैक ! और केहम उज्जर।

भखराइनवाली आश्चर्यित भय बजलीह - ऐं ! आइकाल्हि भादव मास बैर कतय सॅं ऐलैक ? ई कहि ओ एकटा उठा कऽ ज्योतिषिआइनक हाथ मे देबय लगलथिन्ह।

तावत रेवतीरमण लग पहुँचि कऽ कहलथिन्ह - हाँ, हाँ। छोड़ू ! छोड़ू ! ई अंडा छैक।

ई सुनैत देरी ज्योतिषिआइन कैं काठ मारि देलकैन्ह। अंडा हाथ सॅं छूटि कऽ नीचा खसि पड़लैन्ह और फच दऽ फूटि गेलैन्ह। अंडावाली दाम वसूल कऽ लेलकैन्ह। ज्योतिषिआइन ओ भखराइनवाली पुनः स्नान करय गेलीह।

तावत लालकाकीक नजरि एक चुडिहारिन पर पडलैन्ह। ओ बुच्चीदाइक फानक चूडी मोलाबय लगलीह। जखन ओ लवादुआ नहि गछलकैन्ह , तखन बेटी कैं कहलथिन्ह - चल , ई भारी महघोरनी अछि ; एकरा सॅं नहि पटतौक। एखन गंगेस्नान कैने छें। की एकरा सॅं छूति करबैं ?

डेरा पहुँचला पर लालकाकी बजलीह - एक मनोरथ त पूर भेल। आब बाबाक दर्शन भऽ जाइत त जन्म सफल होइत।

भोलानाथ कहलथिन्ह - बेश, हर्ज की ? अहाँ लोकनि 'कंटिर' क संग दर्शन कऽ आबै जाउ। ताबत हमरा लोकनि भानस-भातक उद्योग मे लगै छी। जखन अहाँ लोकनि आएब त हम और बटुकजी दर्शन कऽ अबै जाएब। की हौ बटुकजी?

बटुकजी चूल्हि पजारैत बजलाह-'और न की? बाबा की कहीं भागल जाइ छथ! जब ऐलीहऽ तब देखबे करबैन कि बाँकी रहतन?

लालकाकी आदि स्त्रीगण हुलसि कऽ बाबाक दर्शन करक हेतु बिदा भेलीह। कइएक गली पार कय मन्दिरक द्वार पर पहुँचलीह। मंदिर में बाबाक श्रृंगारक उपरान्त आरती भऽ रहल छलैन्ह। घंटाध्वनिक संग संग 'बम बाबा विश्वनाथ ' क पवित्र नाद सुनि तथा दिव्य धूप-कर्पूर ओ बेलपत्रक सुगन्ध सँ गमगम करैत प्रांगण मे आबि , लालकाकी कैं बूझि पड़लैन्ह जे सद्यः बैकुण्ठ धाम पहुँचि गेलहुँ। ओ आनन्द सॅ विभोर भऽ बारंबार 'साष्टाङ्ग' प्रणाम करय लगलीह।

हिनका लोकनिक भक्तिभाव सॅ आकृष्ट भय एक ब्राह्मण देवता आबि कऽ संग लागि गेलथिन्ह। कहलथिन्ह जे केवल पाँचे मुद्रा मे विधिवत दर्शन-पूजा करा देब। रेवती किछु बाजक चाहलन्हि, किन्तु माइक मुख-मुद्रा देखि साहस नहि पडलैन्ह। ब्राह्मण झट दऽ धतूर-बेलपात आनि कऽ लालकाकीक हाथ मे देलथिन्ह और संकल्पक मंत्र पढ़ाबय लगलथिन्ह।

मन्दिर मे रेड़ि पडैत छल। ई लोकनि कोनहुना भीतर प्रविष्ट भेलीह , किन्तु ओहि अनगित नर समुदाय मे पड़ि कऽ पिसीमाल होमय लगलीह। ब्राह्मण देवता धकियबैत-फकियबैत कोनो-कोनो तरहें हिनका लोकनि कैं जलढरी लग लऽ ऐलथिन्ह और बाबाक दर्शन करा देलथिन्ह। सभ आनन्द सॅ निर्माल्य लैत गेलीह। केवल एकटा दुर्घटना भेल जे ज्योतिषिआइन निहुरि कय जल ढारैत रहथि , ताबत पाछाँ सॅ तेहन धक्का लगलैन्ह जे लोटा नेने देने महादेव पर खसि पडलीह। कपार फूटि गेलैन्ह। सभ लोक हुनका झटपट उठा कऽ बाहर लऽ अनकैन्ह। स्वस्थ्य भेला पर गीत उठि गेल -

हरह सकल दुख मोर, हो भोला बाबा ! हरह सकल दुख मोर !

पं० नमोनाथ झा कैं जखन दस बजे राति कऽ काशी स्टेशन पर पकड़ि लेलकैन्ह तखन टिकटक हेतु 'भ भ भ भोलानाथ कऽ गोहारि कतय लगलाह। किन्तु भोलानाथ ओतय रहथि तखन ने ! टी टी सी हुनका धऽ कऽ स्टेशन मे लऽ गेलैन्ह। तोतराइत-तोतराइत कहलथिन्ह - छ छ छ छ छपडा मे छ छ छ छ छ बजे गाड़ी छ छ छ छ छड़पऽ मे छ छ छ छ छूटि गेल।

किन्तु एतेक छ छ छ क छेकानुप्रासक छटा सॅ छानि कऽ छिट्ट-पुट्ट शब्दक अभिप्राय बुझबा मे स्टेशन मास्टरक छक्का छूटय लागल।

ताबत रेवतीरमण पं० जीक टिकट नेने पहुँचि गेलथिन्ह। पं० जी बिगड़ि कऽ कहलथिन्ह - तों कनेक और पहिनें अबितह त हमरा ट ट ट ट टी टी टी० टी० सी० किएक धरैत ?

डेरा पहुँचला पर पं० जी कैं देखितहि सभ लोक हाल-चाल पूछऽ लगलैन्ह। पं० जी भोलानाथ कैं बहुत बात कहलथिन्ह। तकर सारंश ई जे हम ओतेक चिचिऐलहुँ और अहाँ एको बेर टेरबो नहि कैलहुँ। हमरा बाट मे जे पराभव भेल से हमहीं जनै छी।

पं० जी कैं सभ सँ बेशी खीस भेलैन्ह भखराइनवाली पर जे " ओ जैं यथार्थ अर्द्धांगिनी रहितथि त स्वामी कैं छपरा मे छुटैत देखि आगाँ नहि बढ़ितथि। "एहि पित्तें ओ अपना स्त्री सँ मुँहाबज्जी बन्द कऽ लेलन्हि।

देखैत-सुनैत दू दिन बीति गेल। एहि बीच में लालकाकी सांग-सायुध-सवाहन काशी विश्वनाथक परिक्रमा करैत ज्ञानवापी , ढुढिराज, साक्षीविनायक,अन्नपूर्णा, दशाश्वमेघ, मणिकर्णिका, सभ सँ परिचित भऽ गेलीह। एक दिन 'माधोरावक धरहरा' पर चढ़ैत गेलिह। दोसरा दिन 'भारतमन्दिर' देखि ऐलीह। बीच-बीच मे कतेक छोट-मोट मनोरंजक अनुभव प्राप्त भेलैन्ह से विस्तार-भय सँ नहि देल जाइत अछि।

आइ पूर्णिमा थिकैक। राति मे ग्रहण लगतैक। नौ बाजि कऽ चालिस मिनट पर स्पर्श और बारह बाजि कऽ दस मिनट पर मोक्ष। ई अढ़ाइयो घंटा लालकाकी लोकनि गंगाजले मे ठाढ़ि रहतीह।

साँझे सँ हड़बिड़रौ उठय लागल जे "सबेरे-सकाल भोजन-छजनक काण्ड समाप्त भऽ जाय। नहि त कनेको ग्रहणक स्पर्श भऽ गेने सभटा भानस-भात दूरि जाएत।"

आइ काशीक प्रत्येक घाट पर जनताक बाढ़ि उमड़ल अछि। असंख्य नरमुण्डक तरंग लहरा रहल अछि। नीचा गंगाजीक हिलकोर, ऊपर जनसमुद्रक लहरि! दूनू एक दोसर सँ मिलक हेतु व्यग्र भऽ रहल छथि।

एतबहि मे गर्द उठल-"ग्रहण लागि गेल। ग्रहण लागि गेल!

आब त धमगज्जर मचय लागल। हाँजक हाँज लोक अबल-दुबल कैं पिचैत धङैत , आगाँ बला कैं ठेलैत, आड़िक रस्सा फनैत और स्वयंसेवक दल कैं रेड़ैत , गंगाजी मे भेड़ियाधसान करय लागल।

भीड़-भड़क्का मे कतहु नेना भुटका पिचाएल , कतहु वृद्ध पछड़िक खसलाह ; कतहु वृद्धा पिछडि कऽ खसलीह। कतहु मारि बजरि गेल। तथापि पुण्य लूटक लोभ मे केओ पाछाँ पैर नहि कैलक।

देखैत-देखैत सम्पूर्ण स्थल-सेना, जल-सेना मे परिणत भऽ गेल। सहस्त्रो नर-नारी आकण्ठ जल मे ठाढ भय ऊपर टकटकी लगौलन्हि। कतेको पंडित राहुरूपी दैत्य सँ चन्द्र देवताक उद्धारक हेतु नाना प्रकारक श्लोक-मंत्र पाठ करय लगलाह। घाट पर चाण्डालक झुण्ड ग्रहणदान-ग्रहणदान करैत घुमय लागल। ओकर छायाक छूति सँ नैष्ठिक कर्मकाण्डी पड़ाय लगलाह। किन्तु द्विज देवता कैं डोमरूपी राहुक ग्रास सँ बाँचब कठिन भऽ गेलैन्ह।

लालकाकीक दल दशाश्वमेध घाट पर एक बड़का धक्काक लहरि मे पड़ि अनायासे भरि ठेहुन पानि धरि पहुँचि गेल। ककरो चलबाक कष्ट नहि पड़लैक। किन्तु एहि लहरि मे पड़ने ढुनमुनकाकीक नेना पिचा कऽ अधमरु भऽ गेलैन्ह। ओ चिचिऐलीह- "दैव रे दैव! देखथुन्ह , कीदन भऽ गेलैक।" लालकाकी कहलथिन्ह- "दाँती लागि गेलैक अछि, औना कऽ बेदम भेल अछि। बसात दिऔक।" भोलानाथ बालग्रहक मन्त्र पढ़ि-पढ़ि आँखि पर पानि छिटय लगलथिन्ह।

ज्योतिषिआइनक मुँह मे केवल एकेटा दाँत छलैन्ह जे भात खैबा काल मिझरा जाइत छलैन्ह। बहुत दिन सँ उखड़बाबक हेतु सपरैत छलीह। आइ ई काज अनायासे सम्पन्न भऽ गेलैन्ह। भीड़ मे ककर हुथुक्का कल्ला मे लगलैन्ह से त नहि बूझि पड़लैन्ह , किन्तु मसकूर छनछनैला पर जखन जीभ सँ टोएलन्हि तखन पता लगलैन्ह जे दाँत नहि अछि। ओ ई बूझि सन्तोष करय लगलीह जे दुर्गतियो सहने दाँत कै त सदगति भेल। किन्तु एक बातक असौकर्य ई भेलैन्ह जे अढ़ाइ घंटा धरि कुड़ुर करबाक उपाय नहि। कारण जे ग्रहणक मध्य मुँह मे जल देने कण्ठ मे घोटैबाक भय छैलैन्ह।

भखराइनवाली गंगाजल सिक्त करक हेतु आँखि-कान पर हाथ देलन्हि त विदित भेलैन्हि जे एकटा बीरझुम्मक वीरगति कैं प्राप्त कैलक। किन्तु ओ कानक जड़ि कै चँछैत अपन स्मारक चिहन छोड़ने गेल छलैन्ह। हुनका ज्योतिषक हिसाबें एहि ग्रहणक फल 'मृत्यु' होईत छलैन्ह, ताहि डरें ओ एको बेरि ऊपर आँखि उठा कऽ तकबो नहि कैलन्हि।

एवं प्रकारें सभ कैं किछु ने किछु ग्रहणक फल भेटि गेलैन्ह। चन्द्र देवता कै राहुक ग्रास मे पड़ल देखि जनता त्रास सँ हाहाकार करय लागल। लगातार दू घंटा धरि भरि छाती जल मे रहने चन्द्राभिमुखी कोमलांगीगण हिमवत शीतल भऽ गेलीह। ठाढ़ेठाढ़ किनको पैर मे बघा लागि गेलैन्ह । किनको झुनझुनी भरि गेलैन्ह । किन्तु बिनु उग्रास भेने एहि सँ उद्धार कोना होय ?

राहुक पंजा सँ चन्द्रदेवक छुटैत देरी जयजयकार होमय लागल । दैत्यदलनकारी भगवानक स्तुति चतुर्दिक्षु प्रतिध्वनित भऽ उठल । आनन्द-बधाबा बाजय लागल ।

अर्द्धरात्रिक उपरान्त लालकाकी लोकनि इष्टदेवताक मन्त्र जपैत डेरा पर अबैत गेलीह। पं० नमोनाथ झा प्रभृति यज्ञोपवीत बदलऽ लगलाह। घैल मे कुश गंगाजल देल गेल। माटिक बासन-पातिल फेका गेल।

ग्रहणक दोसरे दिन मोटरी-चोटरी बन्हाय लागल। यात्रीदल कैं घरक उछाट लेलकैन्ह। किन्तु लालकाकी बेटीक संग मास करक लाथें रहि गेलीह और सभ केओ तैयार भऽ कऽ बिदा भेल ।

चलैत काल सभक आँखि मे पानि भरि ऐलैन्ह। आवेशरानी नोर पोछैत बजलीह - बहिना , संगक सुख बनारस जाइत त भऽ गेल। किन्तु फिरती बेरि संग फुटुकि गेल।

लालकाकी कहलथिन्ह - की कहिऔन्ह बहिना ! हमरो प्राण त घरे टाङ्गल अछि। कार्तिक स्नानक बाद लगले बिदा भऽ जाएब।

ढुनमुन काकी देयादिनी कैं प्रणाम करैत कनैत-कनैत कहलथिन्ह - हमरा सॅं बहुत अपराध भेलैन्ह, कहल-सुनल माफ करिहथि।

लालकाकी हुनका भरि पाँज धऽ कऽ उठबैत कहलथिन्ह - आब घरक सभटा भार अहीं पर। जाइते चिट्ठी देब। जनै छी भगवान कहिया घरक मुँह देखौताह !

ताबत घोड़ागाड़ी आबि गेलैन्ह। पं० नमोनाथ झा चिचिया कैं कहलथिन्ह - आब सभ कैं च च च च चढ़ऽ कहिऔन्ह; नहि त च च च च चरिबज्जी ट्रेन छूटि जाएत।

----===----

9. बुच्चीदाइक 'एडुकेशन'

प्रोग्रामक अनुसार सी० सी० मिश्र सासुरक डेरा मे आबि गेलाह और रेवतीरमण हुनक निर्देशानुसार बुच्चीदाइ कैं पढ़ाबय लगलथिन्ह। चिट्ठी-पत्री त बुच्चीदाइ पहिनहि सॅं जनैत छलीह। आब व्याकरण, साहित्य , गणित, इतिहास, और भूगोलक श्रीगणेश भेलैन्ह।

प्रथम दिन 'कर्त्ता' 'कर्म' 'क्रिया' सॅं प्रारम्भ भेल। लालकाकी कुतुहलवश कोनटा लागि , कान पथने सुनैत रहलीह जे ओ की सब पढ़ैत अछि। किन्तु बेशीकाल धरि नहि सुनि भेलैन्ह। हतोत्साह भऽ बजलीह - ऐं हौ ! और कोनो नीक बात सभ नहि भेटैत छौह जे अलच्छे बात सभ बुझबैत छहौक। क्रिया कर्म मुइला पर होइत छैक , कर्ता मुँह मे ऊक दैत छैक। ई सभ त कंटाह पुरोहितक धिया-पुता सिखय जकरा यजमानिका पुजाबक होइ। हमर बेटी ई सभ जानि कऽ की करति? अशुभ बात केओ भाखय! हमरा मुइला पर एकर सभक विचार करिहऽ।

राति मे 'ठाकुर' क चीनी देल दालि तथा छेनाक 'डालना'मुँह मे दैत लालकाकीक जी ओकाय लगलैन्ह। ओ प्राते भेने अपन भानस फुटका लेलन्हि।

दोसर दिन रेवतीरमण बुच्चीदाइ कैं 'एकवचन' 'बहुवचन' बुझाबय लगलथिन्ह। लालकाकी आँच पजारैत छलीह। काँच जारनक धुआँ सँ आँखि-नाक भरल छलैन्ह। बारंबार 'बहुवचन' 'बहुवचन' सुनैत-सुनैत लालकाकी कैं काष्ठाग्निक स्थान मे क्रोधाग्नि प्रज्वलित भऽ उठलैन्ह। बजलीह- "ऐं हौ! एक पहर सँ हाय 'बहुवचन' कि हाय 'बहुवचन' ! दोसर कोनो बचने नहि सुनैत छिऔह। माय भकसी झोंकाइत छौ और तोरा बहुवचन मोन पड़ैत छौह ! एकोबेरि मायवचन मुँह सॅं बाहर होइतौह तखन ने बुझितिऔह जे सपूत भेलाह !

राति मे जखन लालकाकी 'कार्त्तिक चौरान नाशय ' जपैत सुतय गेलीह त बुच्चीदाइ कैं चिन्तित देखि पुछलथिन्ह - तोरा की होइ छौक जे कच्छमच्छ करै छैं ? निन्द किएक नहि पड़ैत छौक ?

बुच्चीदाइ कहलथिन्ह - भैया कहने छथि जे छौ टा कोन-कोन भूत होइ छैक तकर सभक नाम और और कोन-कोन भूत मे 'न' लगै छैक से सभ ठेकान राखक लेल। सैह सब मन पाड़ै छिऐक।

ई सुनितहि लालकाकी क्रोध और भय सँ थरथर काँपय लगलीह। बेटा कैं सोर पारि कय बजलीह - महावीर जी तोरा कहिया सुमति देथुन्ह ? काल्हि राति त क्रियाकर्म, त आइ राति भूत ! यैह सभ बात तोरा पढ़ाइ मे लिखैत छौह ? हम कहैत छलौंह जे रामायण, महाभारतक नीक-नीक बात सिखौथिन्ह त हमहूँ सूनब। से सिखबैत छथिन्ह की त भूत-प्रेत-वैताल ! कोन-कोन भूतक की नाम होइ छैक ? कोन-कोन भूत नकियाइत अछि ? बाप रे बाप ! आइ भरि राति हम घिघियाइत रहब। खबरदार जे आइ दिन सँ फेरि कहियो राति कऽ भूतक नाम लैत गेलाह !

ई कहि लालकाकी भयक मारे 'हनुमान चालिसा' पाठ करय लागि गेलीह।

तेसर दिन बुच्चीदाइ हिसाब शुरु कैलन्हि। साधारण जोर-घटाव त जनिते छलीह। आब 'भिन्न' सँ प्रारम्भ कैलन्हि। रेवतीरमण 'हर' 'अंश' बुझबितहि छलथिन्ह कि लालकाकी आबि पहुचलथिन्ह। एहि बेर सन्तुष्ट होइत कहलथिन्ह - हँ, ई सभ बात पहिने जानि लेत से नीक। 'भिन्न' त सासुर मे कहियो ने कहियो होमहि पड़तैक। मिसरक देयाद-गोतिया त पहिने सँ सभ हड़पने छैन्ह। इहो जौं होशियार भऽ कऽ जाइति तखन ने बाँट बखरा करा कऽ अपन हिस्सा लेति।'

एक दिन रेवतीरमण छन्दक पुस्तक खोलि बुच्चीदाइ कैं सवैया क मात्रा बुझबैत रहथिन्ह। लालकाकी बजलीह-ई त हमहूँ बुझा देबैक। एक सवें सवाइ , दू सवें अढ़ाइ , तीन सवें ......जरलाहा मने नहि पड़ैत अछि।

रेवतीरमण कहलथिन्ह-पहाड़ा वाला सवैया नहि। ई पिंगल पढ़ैत अछि।

लालकाकी उत्तेजित भऽ कऽ बजलीह-बापक गर मुङ्गरी पूतक गर रुद्राक्ष! तोहर बाप हमरा सामने कहियो 'पिंगल' छँटबे नहि कैलथुन्ह और तोरा सभ एखने 'कठपिंगल' बनै जाइ छह। ई बैसलि-बैसलि पिंगल छाँटति त आश्रमक काज कोना चलतैक?

बुच्चीदाइ 'पिंगल' छोडि गजः गजौ गजाः' घोखय लगलीह।

लालकाकी आँटा सनैत बजलीह-हम मरै छी, तो गजौ छैं। ई कोन पढ़नाइ कहबैत छैक ? हम चीकस गीजी और तों हमरा कचकचाबैं-गजं गजौ गजान्। आबि कऽ सोहारी बेल नहि त सभ पंडितारै बहार कऽ देबौक।'

एक दिन रेवतीरमण पठान और मुगल बादशाहक वंशावली बुच्चीदाइ कैं बुझबैत रलथिन्ह। ई देखि लालकाकी पुछलथिन्ह - मियाँक वंशावली सँ एहि लोक कैं कोन प्रयोजन ?

रेवती - मिसर कहने छथिन्ह जे .....।

लालकाकी - हुनका वंश मे मोगल पठान सँ विवाह दान चलैत हैतैन्ह , तैं चौदहो पीढ़ीक नाम अभ्यास छैन्ह। हमरा सभ कैं ओकर उतेढ़ि जनने कोन फल ? एहि गोत्राध्याय सँ त विष्णुसहस्रनाम पाठ करति त धर्मो होयतैक।

एक राति बुच्चीदाइ कैं ध्यानमग्न देखि लालकाकी पुछलथिन्ह - की सोचैत छैं ?

बुच्चीदाइ कहलथिन्ह - विलायतक पहिल 'जार्ज' बादशाह कहिया मुइलैक से मन पाड़ै छियैक।

लालकाकी मुँह गोँहछा कऽ बजलीह - अनकच्छल बात सूनि कऽ देहो जरैये ! विलायतक बादशाह सँ तोरा कोन काज ? ओ तोरा तीन मे की तेरह मे ? कहियो मरौ ? तोरा कि एकोदिष्ट करबाक छौक जे ओहि पाछाँ बेहाल छै ? "धोबी खातिर कुम्हैन सती" आ, पैर दबो हन।

दोसर दिन प्रातः काल लालकाकी सराइ मे नैवेद्य काढ़ने पूजा करैत छलीह ताबत बुच्चीदाइ अपन अँग्रेजीक 'रीडर' रटब शुरु कैलन्हि -

दि एग इज इन देट डिस - उस तश्तरी में अंडा है।

बारंबार तश्तरी-अंडाक नाम सूनि लालकाकी खौंझा उठलीह। जप समाप्त होइतहिं बेटी पर फुफुआ कऽ छुटलीह - ऐ गे ! दुइए अक्षर अँगरेजी पढि कऽ नैवेद्य कैं अंडा बना देलैं। कनेक और पढ़ि जैबें तखन हमरो मुर्गी बनबिहैं।

ई कहैत लालकाकी तमसा कऽ सराइ माँजय चललीह। ओही दिन बुच्चीदाइक हेतु हारमोनियम किना कऽ ऐलैन्ह। किन्तु सिखाबौ के ? तखन ई विचार भेल जे रेवतीरमण पहिने अपने माइजी सँ सीखि आबथि और तखन बहि कैं सिखाबथि। तदनुसार रेवतीरमण माइजीक ओतय जा 'सरगम' सीखि ऐलाह और बुच्चीदाइ कैं सातो पटरी चिन्हा देलथिन्ह।

सन्ध्याकाल बुच्चीदाइ रेयाज करय बैसलीह। लालकाकीक कान टनकैत रहैन्ह। जेना-जेना 'आरोह' क स्वर तीव्र भेल जाइक तेना-तेना हुनक टनक बढ़ल जाइन्ह। आखिर हुनका नहि रहि भेलैन्ह। बुच्चीदाइ 'सा नि ध प क आलापे लैत छलीह कि धप्प दऽ एक धमाका पीठ मे लगलैन्ह। लालकाकी लोहछैत बजलीह - बड़ सौख ! हमर पुटपुरी फाटल जाइ अछि और ई फटियाय बैसलि छथि ! तखन सँ पधनि-पधनि सुनैत-सुनैत कान बहीर भऽ गेल। बड़ पदमिनी बनलीह अछि ! चल पहिने तुलसीक रस बरका कऽ हमरा कान मे ढार , तखन अपन गिरगिरी भरैत रहिहैं।

एक दिन बुच्चीदाइ 'लैण्ड्स ऐण्ड पिपुल्स' पुस्तक लऽ कऽ चित्र सभ देखैत रहथि। एक जवां द्वीपक युवती कैं देखि बजलीह - देखही गे माय ! केहन छैक !

लालकाकी सिहरि कऽ बजलीह - गे दाइ गे दाइ ! गट्टा सन माउगि और आँचर नदारद ! देखियौ त कोना उत्तान भेलि ठाढ़ि अछि ? एकोरत्ती धाखो संकोच नहि। हमरा लोकनि कऽ एना उघार भऽ कऽ आँखि ताकि होइत ! और एकरा लेल धन सन ! हमरा सभक बेटी पुतोहु एना करैत त ......।

तावत रेवतीरमण एकटा रबरक स्विमिङ्ग सुट नेने पहुँचि गेलाह। किछु संकुचित होइत बजलाह - मिसरक इच्छा होइ छैन्ह जे ई (बुच्चीदाइ) हेलनाइ सीखि जाय। तैं ई हल्लुक पोशाक किनलथिन्ह अछि।

लालकाकी जमाय कैं नाना उपाधि सँ विभूषित करैत बजलीह - बड सधोरि ! हमर बेटी मेम ने अछि जे जँघिया पहिरति ? हम अपना सोझाँ मे एहन निर्लज्ज नहि बनऽ देबैक।

ई कहि लालकाकी रबड़क पोशाक कैं नूड़ी-गुड़ी कय मोड़ी मे फेकलन्हि। आब हुनक जी उचटि गेलैन्ह।

जाहि दिन बुच्चीदाइक हेतु बैडमिंटनक सेट किना कऽ ऐलैन्ह , ताहि दिन लालकाकी गामक हेतु अपन मोटा-चोटा सरियाबय लागि गेलाह। बेटा कैं कहलन्हि - बाजि ऐलहुँ एहन जमाय सँ ! आब हमरा नहि देखल जाइ अछि। "देशी कुत्ता विलायती चालि" ! "खंजन चललीह बगराक चालि त अपनो चालि बिसरि गेलीह !" देखैत-देखैत आँखि पाथर भऽ गेल। हमरा आब गाम लऽ चलह। तखन जे-जे मन अवैक से-से करै जाओ।

बेटीक कतबो कनने-खिजने तथा जमायक बुझौने लालकाकी नहि रुकलीह। ओ बेटाक संग गामक हेतु बिदा भऽ गेलीह।

लालकाकीक जैतहिं एक नवीन समस्या उपस्थित भय गेल। बुच्चीदाइ एखन धरि स्वामी सँ बाजलि नहि छलीह। ओ स्वामी कैं देखि लाज करैत छलीह। आब बाजाभुक्की शुरु हो त कोना ?

संयोगवश ई समस्या स्वयं हल भऽ गेल। एक दिन मिश्रजी कैं दुलकी लागि एलैन्ह। ओ पियासे बारंबार 'ठाकुर' कैं सोर पारय लगलथिन्ह। किन्तु दुर्भाग्यवश वा सौभाग्यवश 'ठाकुर' डेरा मे नहि रहय। दू-एक बेरि धरि त संकोचें बुच्चीदाइक कंठ नहि फुजलैन्ह। अन्ततः हृदय मे निहित गृहिणीक संस्कार लज्जा पर विजय प्राप्त कैलकैन्ह। मुँह झपने एक गिलास पानि लऽ कऽ देबय गेलथिन्ह।

ई अभूतपूर्व घटना देखि मिश्रजी कैं एक विलक्षण रसक अनुभूति भेलैन्ह। मुग्धा स्त्रीक हाथ सँ पानि पिउबा मे जे माधुर्य छैक तकर प्रथम अनुभव हुनका जीवन मे आइ भेलैन्ह। बालिका पत्नीक कंठस्वर सुनबाक अभिप्राय सँ ओ पुछलथिन्ह - ठाकुर कतय गेल ?

बुच्चीदाइ आँखि निहुरौने नहूँ-नहूँ उत्तर देलथिन्ह - गंगास्नान करय गेल छैक।

मिश्रजी पत्नीक हाथ धऽ पुछलैन्ह - अहाँ हमरा दिश तकैत छी किएक नहि ?

बुच्चीदाइ लजा कऽ ओहि ठाम सँ जाय लगलीह। मिश्रजी कहलथिन्ह - सुनू ! हमरा माथ मे बड़्ड जोर धाह फुकने अछि। टो कऽ देखू त !

आब बुच्चीदाइ नहि जा सकलीह। लजाइत-लजाइत कपार पर आङ्गुर दऽ कऽ देखलन्हि त काठ फुटैत।

मिश्रजी कहलथिन्ह - ठंढा पानिक पट्टी दऽ सकैत छी ?

बुच्चीदाइ अत्यन्त फुर्त्ती सँ जा कऽ अपना पेटी सँ साफ लत्ता बाहर कैलन्हि और भानस घर सँ एक बाटी मे पानि नेने पहुचि गेलीह। सीरम मे ठाढ़ि भय लत्ता भिजा-भिजा पट्टी देबय लगलथिन्ह। मिश्रजी अपूर्व शीतलताक अनुभव करय लगलाह।

ठंडैला उत्तर मिश्रजी कहलथिन्ह - आब अहाँ जा सकै छी।

किन्तु बुच्चीदाइ नहि गेलीह। मिश्रजी कैं ओढना तर सँ ज्ञात भेलैन्ह जे केओ पैथान मे बैसलि पैर दबा रहल अछि। ओ मन मे विचारय लगलाह- हम त एहि बालिकाक प्रति निष्ठुर व्यवहार कैने छिऐक। एकरा हृदय मे स्नेहक अंकुर कोना उत्पन्न भय गेलैक ?

ओहि दिन ठाकुर कैं ऐबा मे बेशी विलम्ब भऽ गेलैक। किन्तु ई अपराध तेहन मधुरफलयुक्त भेलैक जे मिश्रजी कैं दण्डक बदला पुरस्कारे देबाक इच्छा भेलैन्ह।

शनैः शनैः संकोचक व्यवधान अन्तर्धान भेल। किन्तु जेना-जेना पति-पत्नीक भाव जाग्रत भेल गेलैन्ह तेना-तेना गुरु शिष्यक सम्बन्ध क्षीण होमय लगलैन्ह।

एकान्त मे युवती पत्नी कैं निर्लिप्त भाव सँ पढ़ा सकनिहार स्वामी संसार मे बहुत कम भेटताह। शिष्या पत्नीक शासनातीत यौवन सँ जनिक गाम्भीर्युक्त गुरुत्वक गद्दी नहि डगमगाइन्ह से निश्चय महात्मा थिकाह। किन्तु एहन असिधारा व्रतक पालन करक हेतु जीवन्मुक्त विदेह सन ब्रह्मज्ञान ओ योगबल चाही।

सामान्य पति मे त पुरुषक पशुत्व 'गुरु' पदक मर्यादा कैं अत्यन्त लघु कऽ दैत छैन्ह। प्रमदा पत्निक एक भ्रू-विलास सँ 'भूगोल' क पढ़ाइ मे भूडोल आबि जाइछ और इतिहास परिहास मे परिणत भऽ जाइछ। हुनक एक लहराइत अलकक झलक सँ पलक मात्र में अध्यापकक चित्त विषय-विचार सँ विषय-विलास पर जा खसैत छैन्ह। भालक एक गोल बिन्दी क्षण भरिक हेतु समस्त अंकगणित कैं शून्य मे तथा रेखागणित कैं बिन्दु मे परिणत कय दऽ सकैछ। एहन

परिस्थिति मे कतौक स्वामी पत्नीक भाषा सँवारैत-सँवारैत भूषा सँवारय लागि जाइ छथि , और साहित्य रचनाक संग-संग केश रचना मे प्रवृत्ति भऽ जाइ छथि। शब्दालङ्कार अध्ययन स्वर्णालङ्कारक झंनझनाहट मे विलीन भऽ जाइछ। वर्णसन्धिक विचार ओष्ठसन्धि पर जा कऽ समाप्त होइछ और समासक वर्णन एकशेष पर। अद्वैतवादक मीमांसा होइत-होइत दू हृदयक द्वैतभाव तिरोहित भऽ जाइछ।

मिश्रजी देखलन्हि जे अपना बुतें पत्नीक हेतु शिक्षा-सरणी प्रस्तुत करब तहिना कठिन जेना कौशिकीक धार मे बालुक पुल बनाएब। अगत्या ओ एक 'मास्टरनी' क खोज मे बहरैलाह। संयोगवश एक क्रिश्चन लेडी भेटि गेलथिन्ह जे जन्मना भारतीय महिला भेनहु कर्मणा विलायती मेमक कान कटैत छलीह। हुनक 'बूट' 'गाउन' तथा 'हैट' देखि केओ हुनका 'हिन्दुस्तानी' स्त्री कहबाक साहस नहि कय सकै छलैन्ह। ओ अपनहुँ 'मिस साहिबा' वा 'मेम साहिबा' कहाएब पसंद करैत छलीह।

मिस साहिबाक वास्तविक क्वालिफिकेशन की छलैन्ह से त ज्ञात नहि। किन्तु ओ पहिने एक मिसनरी गर्लस्कुल मे 'मिस्ट्रेस' छलीह। कोनो अज्ञात कारण सँ 'रिटायर' कय, आब 'ट्युशन' आदि द्वारा स्वच्छन्द जीवन व्यतीत करैत छलीह। मिस साहिबा अनुभवी और अनेक कला मे प्रवीण छलीह। पाउडर ब्रेसरी तथा खिजाबक कौशलपूर्ण प्रयोग सँ ओ अपन असली वयसक अँटकर ककरो नहि लागय दैत छलथिन्ह। ओ एक सै टका मासिक पर बुच्चीदाइ कैं पढ़ाएब गछि लेलथिन्ह।

जखन मिस साहिबा काँख तर 'फैंसी अम्ब्रेला' (जनानी छतरी) और हाथ मे लेडीज बैग नेने बुच्चीदाइ कै दिक्षित करबाक हेतु पहुँचि गेलथिन्ह त मिश्रजीक एक भारी चिन्ता दूर भऽ गेलैन्ह।

मिस साहिबा अबितहिं बुच्चीदाइक 'पिछुआ' हटा 'पारसी स्टाइल' कऽ देलथिन्ह, और हुनक नाम 'मिसेज बुची डाइ' राखि देलथिन्ह। दुइए एक दिन मे बुच्चीदाइक काया कल्प भऽ गेलैन्ह। स्पिरिटक प्रयोग सँ गोदनाक रंग उड़ि गेलैन्ह। कँगनाक स्थान मे 'रिस्टवाच' सुशोभित भऽ गेलैन्ह।

दुइए मासक अभ्यन्तर बुच्चीदाइ आश्चर्यजनक उन्नति कऽ गेलीह। जहाँ केवल सकरी ओ हड़ाहिक हाल जनै छलीह तहाँ आब लंदन और पेरिसक हाल बूझय लागि गेलीह। जहाँ हिन्दुस्तानोक शहर सभहक नाम नहि जनै छलीह , तहाँ आब इङ्गलैंडक नकशा बनाबय लगलीह। जहाँ पहाड़ा पहाड़ बूझि पड़ैत छलैन्ह , तहाँ आब पाउण्ड शिलिंग पेंसक हिसाब जोड़य लगलीह।

किन्तु एहूसँ बेशी आश्चर्यजनक परिवर्तन भेलैन्ह बुच्चीदाइक आचार-व्यवहार मे। ओ आब माटिक स्थान मे साबुन तथा दातमनिक स्थान मे टूथब्रशक व्यवहार सीखि गेलीह। जहाँ सराइ-अरघी माँजि कऽ पूजा-घर मे रखैत छलीह तहाँ आब चिनिया प्लेट और सीसाक ग्लास धो कऽ टेबुल पर सजाबय लगलीह। बुच्चीदाइ जहाँ चूल्हि पर पटुआक झोर बरकबैत छलीह तहाँ डेकची पर चाय खदकावय लगलीह।

बुच्चीदाइ आब काशी कै 'बेनारेस' और गंगाजी कै 'गैंगेज' कहब सीखि गेलीह। ओ पान कै असभ्यतासूचक बूझि 'लिपस्टिक' कै महत्व देवय लगलीह। अमौटक स्थान मे आमक 'जेली' व्यवहार करय लगलीह। जहाँ गाम पर माटिक महादेव बनबैत छलीह तहाँ आब महादेव कै माटि बनाबय लगलीह।

सी०सी० मिश्र उत्साहित भय पत्नी कै और द्विगुण वेग सँ प्रगतिशीलताक पथ पर अग्रसर कैलन्हि। हुनक इच्छानुसार मिस साहिबा बुच्चीदाइ कै 'लेडीज क्लब' मे लऽ जाय लगलथिन्ह। ओतय ओ नित्य दू एक गेम टेनिस दू एक कप चाय दू एक गत पियानो वा 'डांस' क आनन्द लेवय लगलीह। प्रारम्भ मे त किछु दिन धखाइत रहलीह, किन्तु पाछँ कऽ 'सोसाइटी' मे एतेक मन लागि गेलैन्ह जे घर सँ बेशी ओत्तहि नीक लगैन्ह। चारि बजे जे जथि से आठ बजे सँ पहिने डेरा पर नहि आबथि।

'ठाकुर' कै ताकीद रहैक जे क्लब सँ अबैत देरी 'मिसेज बी० डाइ' क हेतु टेबुल पर खाना सजाओल जाइन्ह। जहिया ओ दुःखित पड़ि जाय तहिया ई सौभाग्य मिश्रजी स्वतः लूटथि।

एक दिन बुच्चीदाइ एकान्त मे 'डांस' क प्रैक्टिस करैत चलीह। कोनौ कार्यवश मिश्रजी छथ पर गेलाह। किन्तु ओ अपन नृत्य-कलाक अभ्यास मे तन्मय छलीह। ई तन्मयता देखि मिश्रजी तन्मय भऽ गेलाह। ओहि ताल पर हुनक मन मयूरनृत्य करय लगलैन्ह।

दू एक सप्ताहक प्रयत्न सँ बुच्चीदाइ कै हेलनाइयो आबि गेलैन्ह। जाहि दिन सी० सी० मिश्र हुनक हेलैत कालक 'स्पैनशौट' लऽ कऽ 'प्रिंट' कैलन्हि, ताहि दिन आनन्द-समुद्र मे डूबि गेलाह।

आब एकटा कसरि 'मिसेज डाइ' मे रहि गेलैन्ह जे धुड़झाड़ अंग्रेजी बाजिऽ आबि जाइन्ह। तदर्थ सी० सी० मिश्र हिन्दी संस्कृत आदिक बखेड़ा छोड़ा, हुनका एक मात्र अँग्रेजी पर भार देबय कहलथिन्ह। 'बी० डाइ' रात्रिर्दिवा अँग्रेजीक अभ्यास करय लगलीह। मिससाहिबाक संसर्ग सँ ओ किछुए मासक भीतर गिटपिट करय लागि गेलीह।

जखन गुरुआइन अंग्रेजीसभ्यताक एक रंगारंग मे कुंडाबोरि रँगलि छलथिन्ह तखन शिष्या पर कमलपत्रीओ रंग कोना ने चढ़ौन्ह ! बुच्चीदाइ आब बुच्चीडाइ बनि गेलीह।

जहाँ ओ महेशवाणी गबैत छलीह तहाँ आब अँग्रेजी ताल पर गुनगुनाय लगलीह -

ओ गाड ! दाउ आर्ट ग्रे .....ट !

आब एकटा बातक कमी छलैन्ह सेहो मेम साहिबाक प्रसादात् पूर्त्ति भऽ गेलैन्ह। एकमासक अनवरत अभ्यास सँ क्लबक मैदान मे बुच्चीदाइ साइकिल सीखि गेलीह। पहिने सार्वजनिक स्थान मे साइकिल चलबैत लाज होइन्ह। परन्तु स्वामीक बहुत हठ कैला पर जखन मेम साहिबाक संग पहिले-पहिल साइकिल पर चढ़ि कऽ क्लब सँ भऽ ऐलीह तखन धाख छूटि गेलैन्ह ; प्रत्युत एक गर्वक अनुभव मन मे करय लगलीह। ओहि दिन सी० सी० मिश्रक एक बडका मनोरथ पूर्ण भऽ गेलैन्ह।

आब नित्यप्रति सी० सी० मिश्र अपने हाथ सँ साइकिल मे पम्प कय पहिनहि सँ तैयार रखथिन्ह। जखन 'मिसेज डाइ' चुमकी सँ साइकिल पर चढ़ि 'टेनिस शू' सँ पैडल चलबैत रैकेट युक्त हाथ सँ हैंडल घुमा क्लब दिस विदा होथि त मिश्रजी कैं तहिना गर्व होन्हि जेना वीराङ्गना कैं अपना स्वामीक विजययात्रा सँ होइ छैक।

एक दिन बुच्चीदाइ कैं क्लब जेबा मे देरी होइत देखि सी० सी० मिश्र पुछलथिन्ह - 'आर यू नाट गोइंग टु योर क्लब टुडे ?' (कि आइ अहाँ अपना क्लब नहि जाएब) ?

बुच्चीदाइ तड दऽ जबाब देलथिन्ह -स्योरली आइ विल बी गोइंग। बट आर वाय केडस रेड्डी? (जाएब त निश्चय। लेकिन हमर टेनिस खेलैबाक जुती तैयार अछि ? अर्थात अहाँ पालिश कऽ रखने छी?)

ई सुनि सी० सी० मिश्र कैं बूझि पड़लैन्ह जे जीवनक सभ सँ पैघ महत्त्वाकाक्षां आइ पूर्ण भऽ गेल। पत्नी में एहन प्रबल व्यक्तित्वक विकास देखि ओ भगवान कें अनेकानेक धन्यवाद देलन्हि और ओहि खुशी मे मिस साहिबा कें एक डिनर (भोज) दऽ देलथिन्ह।

एही बीच मे सी० सी० मिश्र कैं एक सर्विस भेटि गेलैन्हि। ओ 'आर्यन कल्चर (आर्य सभ्यता) नामक अंग्रेजी मासिक पत्रक एडिटर (सम्पादक) नियुक्त भेलाः।

किन्तु आब एक कठिनाइ ई उत्पन्न भेल जे बुच्चीदाइ बिनु द्विरागमने हाउस वाइफ बनि कऽ रहब अस्वीकार कऽ देलथिन्ह।

सी० सी०० मिश्रक संकेतानुसार मिस साहिबा बहुत बुझौलथिन्ह जे- ह्वाइ शुड यू फालो दि रस्टिक कस्टम्स और योर सोसाइटी ? डॊण्ट ओबजर्व दि सिली सेरेमनी '(अर्थात समाजक देहाथी प्रथा अहाँ किएक मानब? एहि मूखारू विधि-वाध कैं छोड़ू)।

किन्तु लालकाकी बेटी कैं मातृ-संस्कार जोर कैलकैन्ह। ओ अपना आत पर अड़ि गेलीह। हारि-दारि कऽ मिश्र जी पुछलथिन्ह-'अच्छा कोन-कोन बिध होइ छैक से अहाँ हमरा नोट करा दियऽ। आब बेशी टाइम नहि अछि। एक हफ्ता के अन्दर द्विरागमन भऽ जैबाक चाही।'

बुच्चीदाइ कहलथिन्ह-'दिन मनाबक हेतु पहिने दही-माछक भार जाइ छैक तखन वर जा कऽ कनेयां कैं बापक घर सॅं लऽ अबै छैक।

सी० सी० मिश्र बजलाह- 'माइ गाॅड! तखन त हमर और अहाँ दूनू गोटा क गेनाइ कम्पलसरी भऽ गेल। कि खाली फिश (माछ) और कर्ड (दही) पठा देने काज नहि चलि सकैत छैक?

बुच्चीदाइ कहलथिन्ह-वाह! जौ हमहीं नहि रहबैक त द्विरागमन हेतैक ककर ? और जौं अहीं नहि जेबैक त द्विरागमन हैतैक कोना?

मिश्रजी बजलाह-'फिश' कर्ड, पहुँचलाक बाद हम सभ जायब ततेक टाइम आब कहाँ अछि? हँ, ई भऽ सकै अछि जे फिश , कर्ड अपना संगहि नेने चली। लेकिन ओतय पहुँचैत-पहुँचैत 'फिश सड़ि जाएत और कर्ड खराब भऽ जाएत।

बारंबार 'फिश' और कर्ड क नाम सुनि मिस साहिबाक मुँह मे पानि भरि एलैन्ह। सभ बात बूझि ओ अपन विचार इ देलथिन्ह जे टिनक डब्बा मे बन्द कैल जे फिश अबैत छैक से खराब नहिं होएत और दहीक बदला 'चीज' (पनीर) लऽ चलू।

बुच्चीदाइ कहलथिन्ह-'हमर गाम पैघ अछि। सौंसे गाम बाँटक लेल कम सॅं कम एक बक्स चाही। हँ, तखन एकटा विधि और होइत छैक। वरक संग बरियातो जाइ छैक।

सी० सी० मिश्र चिन्तित भऽ बजलाह- 'आब त एतेक टाइम नहि अछि जे इनभिटेशन कार्ड (निमन्त्रण पत्र) छपाबी। अच्छा, त बरियात मे मिस साहिबा चलतीह।

मिस साहिबा थोड़ेक नाकर-नूकर करैत अन्त में राजी भऽ गेलीह।

सभ ठीक-ठाक कय सी० सी० मिश्र सासुरक पता सॅं तार देलन्हि जे- 'हफ्ताक भीतर द्विरागमनक प्रबध करू। हमरा लोकनि बरियातक संग आबि रहल छी।'

----===----

10. वर-बरियातक विधि

तार पहुँचैत देरी खढ़भढ़ मचि गेल लालकाकी बजलीह कहू त भला एना कतहु द्विरागमन भेलैक अछि !

भोलानाथ अनुमोदन करैत कहलथिन्ह - त ! द्विरागमन मे कतेक ओरिआओन करय पड़ै छैक । कन्याक हेतु कपड़ा-लत्ता, गहना-गुरिया.......

ला० - बाजू-बिजौठ, बड़हरी, नकमुन्नी, मङटीका, हैंकल, पहुँची, पाजेब ....।

भोला० - तखन बर्त्तन-बासन चाही ।

ला० - थारी, बाटी, लोटा, गिलास, बटुक, तसला, कड़ाही, करछुल, तमघैल, अढ़िया .....।

भोला० - तखन मेवा-मसाला साँठल जाइ छैक ।

ला० - सुपारी, लौंग, अड़ाँची, दालचीनी, शीतलचीनी, जाफर, जावित्री.........

भोला० - पौती-पेटारक काज होइ छैक ।

ला० - पहिनहि सँ सीकीक डाली-मौनी बनै छैक । सरकंडाक पौती बनै छैक । जनउ तैयार होइ छैक । डाला बनैत छैक । पीढ़ी लिखल जाइ छैक ।

भोला० - कहार-महफा कैं साइ देल जाइ छैक ।

ला०- सोअसिनक संग खवासिन जाइ छैक।

भोला०- तखन वरक विधि सेहो होबक चाही।

ला०- चुमाओनक ओरिआओन होबक चाही। डाला परक मधुर होबक चाही। दही , अक्षत, पान, मधुर, धोती, तौनी, पाग, डोपटा, चानन, काजर......

भोला०- तखन बरियात कैं सौजन्य कराबऽ पड़ै छैक!

ला०- त! सँचारक हेतु पूरा बनाबऽ पड़ैत छैक। बड़,। बड़ी, अदौरी, दनौरी, तिलौरी, पापड़।.... बाप रे बाप! एतबे दिन मे ई सभ कोना कऽ पार लगतैक ? कनेयाँ नैहरे छथि। फुचुकरानी चिल्काउरे छथि। के की करतैक?

भोला०- ताही हेतु त दू मास पहिनहि दिन मनाओल जाइ छैक।

ला०- त! दही माछक भार अबै छैक। कन्याक हेतु कहौतिया नूआ अबै छैक। से पहिर कऽ बेटी कनै छैक। देह मे तेल-उकटन लगै छैक। आङने आङन सँ खायक अबै छैक। द्विरागमन कि कनेंया-पुतराक खेल छैक जे चट मङनी पट विवाह!

भोला०- मानि लियऽ और सभ वस्तु समतूलो भ जाय ; किन्तु मुहूर्त्त त अपना हाथक बात नहि। द्विरागमन मे वार , नक्षत्र, तिथि, योग, चन्द्रमा आदि बहुतो विषयक विचार कैल जाइ छैक। लग्न कि ककरो असामी छैक जे तार पाबि कऽ हाजिर भऽ जेतैक ? तखन ई अलग्न कथा कोना फुरलैन्ह?

ला०- हुनक सुलग्ने कथा आइ धरि कोन भेलैन्ह अछि? ऊँटक कोन अंग सोझ जे गरदनिए टा टेढ़ कहबैक ! गौंआँ सभ हँसितहिं अछि, आब और थपड़ी पारत।

भोला० - हँ से त जहाँ दस लोक जमा होइ अछि तहाँ अपने घरक खिधाँस करऽ लगै अछि जे द्विरागमन सँ पहिनहि बेटी कैं .....

ला० - बेशी झरकी नहि लगाउ। ई सभ अगराही बुचकुन चौधरीक लेसल छैन्ह। और दुलारमनिए दाइ कि कम लुतरी लगाबऽ बाली छथि ? हमरा बेटी-जमाय दऽ सभ कैं कहने फिरै छथिन्ह जे क्रिस्तान भऽ गेलैन्ह।

भोला० - सत्यदेव चौधरी काशी सँ ऐलाह त गाम मे एकटा नवे फाल उड़ौलन्हि जे मिसर मेम रखने छिथ।

ला० - एहन-एहन बात सूनि कऽ देहो जरै अछि। कनेक हमरा सोझाँ बजितथि त मखानक पात सँ मुँह पोछि दितिऐन्ह।

भोला० - एतबे नहि। इहो बजै छथि जे बुच्चीदाइ बाइसिकिल पर चढ़ि कऽ घुमैत अछि।

ला० - यैह सब सूनि कऽ त बाप-भाइ पुछारियो करय नहि जाइत छथिन्ह। जहिया सँ हम ऐलिऐक तहिया सँ केओ खोज खबरि लेलकैक ?

भो० - कंटीर कैं त कानूनक पढ़ाइए सँ नहि फुरसत छैन्ह। और भाइ साहेब बोधगया मे एक सेठक कन्याक वर्षफल गुनबा मे लागल छथि।

ला० - हँ, अनकर कन्याक त जन्मकुण्डली गुनैत छथि। और अपन कन्याक टीपैन हेरायल छैन्ह।

भो० - परन्तु आब त बिनु गाम ऎने उपाये नहि छैन्ह। आब चिट्ठियो देवाक समय नहि रहल। कही त तार दऽ दिऎन्ह।

ला० - हँ, हँ, भला ओहू मे पुछबाक काज ! दूनू बापपूत कैं आबक हेतु तार दऽ दिऔन्ह।

भोलानाथ तार दऽ कऽ ऎलाह त बजलाह - आब बरियातक इन्तिजाम होबक चाही। के जाने कहिया कतेक गोटा सॅं पहुचि जाथि ! तैं पहिनहि सॅं सभ समतुल कऽ कऽ राखक चाही।

लालकाकी कहलथिन्ह - तरकारी मे कदीमा और सजमनि त चारे पर अछि। भाँटा सेहो बाडी सॅं बहराएत। तखन आलू परोर हाट सॅं आनि दियऽ। घाठि घरे मे छैक। तरुआ-फरुआ लगा कऽ अठारह टा पुरा देबैक।

भोलानाथ कहलथिन्ह - दलान मे ठकबा कुट्टी कटैत अछि से भरि ठेहुन जंगल लगौने अछि। काल्हि भोरे बहरबा-सोहरबा कऽ साफ करा देबैक। एकटा सौंफ त दलान मे छैहे। दू-एक टा बड़का शतरंजी, जाजिम और मसनद मंगनी करऽ पड़त।

लालकाकी कहलथिन्ह - सुतरी वला बड़का खाट झोलंगा भऽ गेलैक अछि ! ओड़ांच कसाबक हेतैक।

भोलानाथ ठकबा कैं ल बजार दिस बिदा भेलाह। लालकाकी आङ्गन मे आबि देयादिनी कऽ कहलथिन्ह - ऎ फुचुकरानी ! जमायक ऎला पर परिछन हैतैन्ह , चुमाओन हैतैन्ह। विधिकरी त छथिन्ह नहि। चानन-काजर अहीं कैं करय पड़त।

तावत आवेशरानी कैं अबैत देखि कहलथिन्ह - आबथु ऎ बहिना ! ई नहि लागि-भीड़ि देथिन्ह त कोना कऽ सम्हरतैक ?

आवेशरानी पुछलथिन्ह - कहिया अबै जैथिन्ह।

लाल० - दिन त नहि लिखलथिन्ह अछि। तखन एक सप्ताहक भीतरे मे सभटा ओरिआओन भऽ जैबाक चाहीऎक।

आवेश० - ता त ओहो (लाल) आबि जैथिन्ह ?

लाल० - जनै छी ? तार त गेलैन्ह अछि। नहि औथिन्ह त बनतैन्ह कोना ? (चिन्तित भऽ कऽ) हमरा त डर होइत अछि जे हुनका आबऽ सॅं पहिनहि ने कतहु बरियात पहुँचि जाइक।

आवेश० - एहन कत्तहु भेलैक अछि ? मिसर पहिने हिनका बेटी कैं एतय धऽ जैथिन्ह। तखन पाछाँ सॅं बरियातक संग औताह।

लाल० - नहि ए बहिना। आइकाल्हि अङ्गरेजियाक कोन ठेकान ! वरे कन्याक संग-संग बरियातो चलि अबैक सेहो आश्चर्य नहि।

आ० - तखन त लगले बिदा कऽ देबऽ पडतैन्ह?

ला०- से नहि हैतैन्ह। बरियातक बापो उठकि औथिन्ह तैयो बुचियाक बापक बिनु ऐने द्वारागमन नहि हैतैन्ह। हमर बेटी कि फकिरनी जकाँ विदा हैत?

आ०-नहि। से कोन दुख हैतैक? गहना कपड़ा सभ त एक दिन में दडिभंगा सँ आबि जैतैक।

ला०-लेकिन एतुक्का ओरिआओन-परिआओन सभ कोना हैतैक? हम त आब अथबल भऽ गेलहुँ। सँचारक भार हिनके पर रहतैन्ह।

आ०-'वेश, जखन ओ समय औतैक त बुझल जैतैक।

ला०-तिलकोरक पात ओ भँटवर जेहन ई तरैत छथि तेहन ककरो नहि होइ छैक। और बड़ , बड़ी दनौरी तिलौरी.....

ई वाक्यो ने समाप्त भेल छलैन्ह कि एक मोटर हड़हड़ाईत दलानक सोझा आबि कऽ ठाढ़ भऽ गेलैन्ह। ढुनमुनकाकी साँझ देखाबक हेतु दुरुखा मे गेल छलीह। मोटर देखितहि पड़ैलीह और आङ्गन आबि बजलीह-'वर बरियात तऽ आबि गेलैन्ह।

लालकाकी माथ पिटैत बजलीह-दैव-रे-दैव! आब कोन उपाय हैतैक ? केओ पुरुषो-पात दरवाजा पर नहि छैक।

तावत पारसी स्टाइलक साड़ी सँ परिवेष्टित ऊँच एँड़ीक नोकदार शू पर अपन शोभाक भार धरैत बुच्चीदाइ आङ्गन मे आबि सभ कैं प्रणाम कैलथिन्ह।

बुच्चीदाइक ठाट-बाट देखि सभ केओ गुम्म रहि गेलीह। किन्तु एहन बेटी कैं पुष्पाञ्जलि देबक चाही अथवा तिलाञ्जलि? एकर मीमांसा करबाक समय नहि रहैन्ह।

झारखंडीनाथ कैं अबैत देखि लालकाकी कहलथिन्ह- 'आउ ए बाउ! बड़ बेरि पर ऐलहुँ। बर-बरियात दरवाजा लागल अछि। जा कऽ सम्भाषण करिऔक गऽ ऐ फुचुकरानी , बड़का सतरंजी, छोटकी चौकी, कलशी, खड़ाम ई सभ झट दऽ दिऔन्ह तऽ।

झारखंडीनाथ सभ किछु लऽ कऽ बहरैलाह। किन्तु दालान पर आबि देखै छथि जे बगल मे छतरी और हाथ मे चमड़ाक बेग नेने एक मेम ठाढ़ि अछि और एक टोपबला साहेब मोटर सँ सामान उतरबा रहल अछि। टोप देखि हुनका सकुरीक डाकडर स्मरण भऽ ऐलैन्ह जाहि सँ ओ सशंकित भऽ उठलाह।

दू एक मिनट झारखंडीनाथ किंकर्त्तव्यविमूढ जकाँ ठाढ़ रहलाह। ता मोटर विदा भऽ गेलैक। तखन हुनका चेत भेलैन्ह। झट दऽ सतरञ्जी ओछा, छोटकी चौकी पर एक गगरा पानि राखि, हाथ मे खड़ाम नेने उचितीक ढंग सँ कहलथिन्ह - आएल होऔ। बैसल होऔ। पैर धोएल होऔ।

मेम साहिबा हुनक आशय बूझि पुछलथिन्ह - बाथ (स्नानागार) किधर है ?

झारखंडीनाथ माथ कुड़ियबैत बजलाह - बाथ त एहिठाम सौं बहुत दूर है। कोस छबेक-सातेक सौं कम नहीं पड़ेगा। 'बाथ' (गाँव) मे आपका के रहता है ?

मेम साहिबा कनेक मुस्कुराइत बङ्गलामिश्रित उर्दू मे बजलीह - बाड़ी (घर) मे गोसुलखाना है ?

झारखंडी कहलथिन्ह - बाड़ी मे त भाँटाक गाछ रोपा हुआ है और गोस-ऊस का खाना हमरा सभक घर मे नही होता है।

बाहर त ई सभ होई छल , और भीतर ऐपन पड़य लागल। लालकाकी बजलीह-ऐ बहिना , परिछन हैतैन्ह तखन ने जमाय आँगन औताह। आब सभ सँ पहिने हँकार पड़क चाही। ककरा पठबियौक?

आवेश०-'फुलमतिया और सूर्यमुखी जा कऽ हँकार दऽ औतैक। दूनू जतय जाइत अछि ततय जोट्टे भऽ कऽ। यैह, नाम लैत दूनू पहुँचि गेल। बहुत दिन जिबै जैबै।

फुल०-हम दूनू त पोखरि सँ दौड़ले चलि अबै छी। जखने हावागाडी रुकलैक तखने बुझलिऐक जे 'सरौता' आबि गेल।

लाल०-गे बौआ, 'सरौता' सँ पाछाँ कऽ भेट करिहैं। पहिने जा कऽ सभतरि हँकार दऽ अबहीक। भऽ सकौक त गीतगाइन सभ कैं अपना संगहिं बजौने अबहुन।

ढुनमुनकाकी कै बैसलि देखि लालकाकी कहलथिन्ह- 'ऐ फुचुकरानी! ऐपन दऽ कऽ निश्चिन्त भय गेलिऐक? चानन चन्द्रौटा लबियौक। कजरौटा बाहर करिऔक। बाती बटिय़ौक। काछुक लखरोइया तकियौक।

ता झारखंडी कैं अबैत देखि पुछलथिन्ह-की औ बाबू ? कतेक गोटे सँ छथि? ताहि मे सौजन्य कै गोटाक हैतैन्ह?

झारखंडी कहलथिन्ह-'असौजनिया केओ नहि छथि।

लालकाकी भयभीत भऽ बजलीह-बाप रे बाप! सभ केओ सौजनिये छैक ? तखन कतेक रासे सँचार लगाबक पड़तैक! एखन धरि धोतियो नहि किनैलैक अछि।

झार०-धोतीक काज नहि पड़त। वर सँ बरियात धरि धोती बला केओ नहि अछि। जमाय पतलून कसने छथि और बरियात मे जे आयल छथि से घँघरा फलकौने छथि।

ला०-दुरजो! अहाँ त हँसी करै छी।

झा०-नहि, नहि, सरिपों कहै छी। बरियात मे खाली एकटा मेम आएल छथि। ई सुनितहिं आवेशरानी और ढुनमुन काकी भभा कऽ हँसि उठलीह और लालकाकी अवाक रहि गेलीह।

देखैत-देखैत समस्त टोल मे घोल भऽ गेल। 'एतेक दिन पर बुचियाक वर अबैत छथिन्ह से यैह कम कुतुहलक बात नहि। ताहि पर मेमक नाम सूनि विनोदक बाढ़ि आबि गेल। मेमक सम्बन्ध मे नाना प्रकारक कल्पना होमय लागल। उत्सुकतावश झुंडक-झुंड आइ-माइ पहुँचय लागि गेलीह। मेमक झाँकी-दर्शन करक हेतु दुरुखाक मुँह पर मेला लागि गेल।

आब टिका-टिप्पणी चलय लागल।

आवेशरानी बजलीह - त ! सरिपों स्त्रीए छैक। हमरा होइ छल जे कोनो बहुरुपिया वरियात मे आयल हैतैक।

परिहारपुरवाली - त ऐ ! हमहुँ नहि पतियाइ छलिऐक। से सब आँखि सँ देखलिऐक।

पुहुपरानी - देखियौ ने केहन शान सँ बैसलि सिगरेट पिबै अछि !

पलटीमाय - पुरुषे जकाँ झुलफीयो रखने अछि। हाथ मे अखबारो छैक।

भखराइनवाली - पुरुष सँ कम्मे कोन बात मे अछि ? एक हमरा लोकनि छी !

सरयू० - लेकिन कोनो तेहन सुन्दरि कहब से नहि अछि फैशन जे कैने रहौ !

पलटी - बिज्जी सन-सन आँखि छैक। नाक केहन ठाढ़ !

परिहारपुरवाली - ठोर कथू लऽ कऽ रङ्गने अछि।

पुहुपरानी - हाथ-पैर सुकठी छैक।

भखराइनवाली - लेकिन मुँह पर पानि छैक।

आवेशरानी - किछु-किछु मुँहठान तारा सन लगै छैक।

पलटीमाय-नहि। ताराक मुँह गोल छैक। एकर मुँह नमौन पर छैक।

कामेश्वरी-देखऽ मे त बीसे वर्षक सन लगै अछि, लेकिन वयस तीस सँ कम नहि हैतैक।

सरयू०-कोन आँखि सँ सुझै छौह? चालिस सँ कम नहि हैतैक। देखै छही नै जे....

एहि प्रकारें मेमक सम्बन्ध मे तर्क-वितर्क होइत छल कि लालकाकी आबि कऽ कहलथिन्ह- 'आब जमाय कैं परिछि कऽ आङ्गन ने लऽ अबै जाथुन्ह।

लगले गीत उठि गेल और गाइन लोकनि गबैत-गबैत बाहर ऐलीह। सी० सी० मिश्रकै ओहि सेनाक बीच में आत्मसमर्पण करय पड़लैन्ह। परिछन तथा चुमाओनक - 'पैरेड' करैत-करैत कोबर पहुँचऽ मे एक घंटा सँ ऊपर लागि गेलैन्ह।

आब तरह-तरहक व्यंग्यवाण छूटय लागल। एक पछमीनी शह चलौलथिन्ह- 'हीन चोर जगती भागल रहथ। एतना रोज पर धराइ देलन है। हिनकर निम्मन तरह से सजाय होवे के चाही।

पुहुपरानी पुछलथिन्ह-की सजाय करबैन्ह?

सरयू०-सजाय यैह जे आब फेरि एहिठाम सँ जा नहि सकताह। एत्तहि घरजमैया बनि कऽ रहय पड़तैन्ह।

भखराइनवाली-तखन त जङ्गला मे लोहक छड़ लगाबऽ पड़त।

सरयू०-और लंगाझोरी कऽ देखि लेबैन्ह जे रेती ने चोरा कऽ रखने होथि।'

कामेश्वरी-ककरो एना भऽ कऽ उछन्नर करी से उचित नहि। दोसर-दोसर बात पुछिऔन्ह।

आब आवेशरानी चिकना-चिकना कऽ कहय लगलथिन्ह- 'अयँ ए मिसर! हिनका की भऽ गेलैन्ह? चतुर्थीएक राति मे चुपचाप चलि गेलाह। विवाहक यात्रा मे जे गेलाह से फेरि कहियो घूरि कऽ खोजो ने कैलन्हि। मधुश्रावणी, नागपंचमी, जितिया, सभ पावनि मे लोक बाटे तकैत रहि गेल। हिनको जे पुछारी-कोजागराक जइतैन्ह से कतऽ जइतैन्ह ? गामपर अपन लोकवेद केओ छैन्हे नहि। सभ मनोरथ लोक कैं लगले रहि गेलैक।

तावत सूर्यमुखी पूछि देलकैन्ह - बाहर मे जे बैसलि छथि से अहाँ कैं के होइतीह ?

फुलमती - पिउसी होइथिन्ह नहि त पितिआइन।

कामेश्वरी - हिनक सासुर कतय छैन्ह ?

आब मिश्रजी कैं उत्तर देब उचित बूझि पडलैन्ह। गंभीरतापूर्वक बजलाह - हिनी कुमारिए छथि।

ई सुनितहि ठहाका पड़ि गेल।

"पलटी माय बजलीह - गे दाइ गे दाइ ! सभ परियोग भऽ गेल , बहुरिया पद धैले अछि "! ऎहन बुढ़कनियाँ सॅं के विवाह करतैन्ह ?

भखराइनवाली - झारखंडीक भाग जगलैन्ह। बेचारे दू बेरि सभा सॅं फिरि आएल छथि।

कोबर मे एहि तरहें हास-परिहास चलैत छल ता भोलानाथ ठकबाक माथ पर एकटा मोटा लदने आङ्गन पहुँचलाह। लालकाकी कैं डाला दैत कहलथिन्ह - एकरे अन्वेषण मे बहुत राति बीति गेल। के जाने कखन काज भऽ पड़य ! दस जोड़ धोतियो नेने ऎलहुँ अछि। ऎं ! ओम्हर घर मे एतेक लोक किएक जमा अछि ? जमाय आवि गेलाह की ?

लालकाकीक मुँह सॅं सभटा समाचार सुनि कऽ भोलानाथ बजलाह - नहि नहि। एहि खातिर अहाँ खिन्न किएक होइ छी ? साहेब-मेम त बड़का-बड़का व्यक्तिक ओहि ठाम नेओत पूरऽ जाइ छैक और जेहन ओकर सत्कार होइ छैक तेहन वरक बापो कैं नहि होइ छैन्ह ! हमरा सभक अहोभाग्य जे बङ्गला मे रहयवाली मेम एहि मड़ैया मे ऎलीह। हिनका रहबा मे , भोजन-छाजन मे कनेको कोनो बातक वित्थुति नहि होमय पबैन्ह।

आब मेम साहिबाक भोजनक प्रबन्ध होमय लगलैन्ह। दुरुखा मे ठाँव-बाट भेलैन्ह। हरद्वारि कम्बल चौपेति कऽ ओछाओल गेलैन्ह। बड़का थार मे एक अढ़ैया मेंही भात जाँति कऽ परसल गेलैन्ह। अठारह टा बाटी मे सँचार लगलैन्ह। लोटा-गिलास माँजि कऽ पानि धैल गेलैन्ह। पैर धोबक हेतु चिलमची-पीढ़ी राखल गेलैन्ह।

लालकाकी एक बेरि आपत्ति कैलथिन्ह, किन्तु भोलानाथ बजलाह - नहि। ओ राड़-रोहियाक श्रेणी मे नहि छथि जे अछोप जकाँ बाहर पात पर खोआ देबैन्ह। पाछाँ आगि मे झरका कऽ अपन द्रव्य शुद्ध कऽ लेब। और जखन धोती आबिए गेल अछि तखन सौजन्यक व्यवहार किऎक ने करबैन्ह ? ओ पहिरथु वा नहि पहिरथु। हम अपना घरक मर्यादा किएक छोड़ब ?

सभ किछु ठीक भऽ गेला पर भोलानाथ मिस साहिबा कैं बजाबय गेलथिन्ह। ओ एतीकाल एकसरि बैसलि-बैसलि औंघा गेल छलीह थोड़ेक काल मे मिस साहिबा चेहा कऽ उठलीह और भोलानाथ कैं ठाढ़ देखि 'सौरी' कहि हुनक पाछाँ चललीह।

'सौरी'शब्द सुनि भोलानाथ भ्रम मे पड़ि गेलाह। मिस साहिबा कैं 'सौरी माछ' क अपेक्षा छैन्ह वा 'सौरी घर' क ? एहि संशयक निर्णय ओ नहि कऽ सकलाह।

किन्तु हुनका ई भासित भऽ गेलैन्ह जे मिस साहिबा कें खोएबा-पिएबा आदिक भार आव स्त्रीगणे पर छोड़ि देवक चाही। तैं ओ मिस साहिबा कैं आङ्गन मे आनि जोर सॅं बजलाह - आब अहाँ लोकनि हिनकर आगत स्वागत करै जैयौन्ह। हम मिसर सॅं भेंट करय जाइ छिऎन्ह
।

'मेम भोजन करय आयल अछि ' ई बुझितहि सभ स्त्रीगण तमाशा देखक हेतु उमड़ि पड़लीह। ढुनमुनकाकी पैर धोआबक हेतु एक लोटा पानी लऽ कऽ ठाढ़ि भेलीह। किन्तु मेम साहिबा जूता-पैताबा पहिरनहि आसन पर चलि गेलीह। एहि पर पहिल ठहाका पड़ल।

फ्रौक मे रहबाक कारण मेम ठेहुन मोड़ि कऽ नहि वैसी सकलीह। दूनू पैर पसारी कऽ आसन पर बैसय पड़लैन्ह। एहि पर दोसर ठहाका पड़ल।

छुरी-काँटाक अभ्यास-वश मेम कैं भात सानि कऽ कौर नहि बनाबय ऐलैन्ह। आङुर सँ खैबा मे नहि ओरिआइन्ह, खसि-खसि पड़ैन्ह। अगत्या ओ एक एक टा भात मुँह मे देबय लगलीह। एहि पर तेसर ठहाका पड़ल।

मेम अप्रतिभ भऽ उड़ीदक बड़ी कैं ओमलेट जकाँ खोंटि-खोंटि खाय लगलीह। ता ढुनमुनकाकी डाला-धूप लऽ कऽ पहुँचि गेलथिन्ह । मेम कै आग्रह करैत कहलथिन्ह- "बहिनदाइ! और किछु चाहिऐन्ह?"

मेमक तृष्णा डिब्बाक पनीर पर लागल रहैन्ह। कहलथिन्ह- कुछ चीज मँगाइये।

ढुनमुन०- कोन चीज लेतीह ?

मेम मुश्किल मे पड़ि गेलीह। कहलथिन्ह- 'चीज' चीज, वही सी० एच० ई० ई० एस० ई०-चीज।

सभ स्त्रीगण कैं बूझि पड़लैन्ह जे मेम अङ्गरेजी मे गारि पढ़ि रहल छथि । एहि पर पाँचम ठहाका पड़ल ।

मेम साहिबा ढुनमुन काकी सॅं नाम-ग्राम पुछलथिन्ह ।

पलटीक माय बाहर सॅं कहलथिन्ह - स्त्रीक नाम क्या पूछते हैं ? और सासुरक नाम केओ लेता है जे हिनका पूछते हैं ?

एहि पर छठम ठहाका पड़ल ।

एम्हर ठाहाका पर ठहाका पडै छल और ओम्हर लालकाकी बीतलि जाइ छलीह । ताबत डहकन उठि गेल ।

गीत होइते छल कि एकाएक बिहारि उड़बैत दुलारमनि पिउसी आबि कऽ पलटीक माय कैं जोर सॅं पहुँचा पकड़ि लेलथिन्ह और गरजैत बजलीह - "सभ सखी झुम्मर पाड़य लुल्ही कहै हमहूँ"! सभ क्रिस्तान भऽ जाएत त अहूँ भठि जाएब ? राम राम ! एहन अनर्थ ! जे सभ कहियो ने भेल छल से सभ आब गाम मे होमय लागल । धर्म-कर्म कोठिक कान्ह पर गेल ।

मुदा जौं हम नैयाँ चौधरीक बेटी त कहि दैत छी जे एहि पापे सभ सत्यानाश मे मिलि जाएत। तकै छी की ? चलू !

ई कहैत दुलारमनि पिउसी पलटी माय कैं खिचने तिरने लऽ गेलथिन्ह। हुनका जैतहिं सभ आइ-माइ उठि बिदा भऽ गेलीह।

लालकाकी तेल-सुपारीक खातिर सोरे पारैत रहि गेलथिन्ह। किन्तु केओ फिरि कऽ तकबो नहि कैलकैन्ह।

----===----

11. सामाजिक आन्दोलन और भोजभात

गामक पंडित-प्रधान कैं एकत्र कऽ बुचकुन चौधरी कहलथिन्ह - आब 'ठोप' मेटा कऽ 'टोप' पहिरै जाउ और टीक कटा कऽ विलायतक टिकट कटबै जाउ। 'ईश' क स्थान मे 'ईशा' और 'गिरिजा' कऽ स्थान मे 'गिरजा' क पूजा होय। 'ब्रह्माण्ड' सॅं 'कुक्कुटाण्ड' और 'ओम' सॅं 'ओमलेट' पर अबै जाउ।

पं० ढोंढाइ झा कहलथिन्ह - किन्तु एगोटाक अजाति भेने कि सौंसे गाम अजाति भऽ जाएत ? हमरा लोकनि पतितक संसर्गी नहि भऽ सकै छी।

पं० नमोनाथ झा बजलन्हि - किन्तु ओ प प प पतित कोना भेलाह ?

ज्योतिषीजी कहलथिन्ह - तखन शास्त्रार्थ होय।

ई कहि जोतिषीजी वीरासन लगा संस्कृत मे बाजऽ लगलाह -

"कथं न पातित्याम् ? म्लेक्षाणां स्पर्शादेव पातित्यं संघट्यते। यथोक्तं धर्मशास्त्रे - म्लेक्षच्छायाभिषङ्गेण चाण्डालत्वं प्रजायते।"

"छायास्पर्शेनैव यदा चाण्डालत्वं सञ्जायते तर्हि काञ्चिदज्ञातकुलां विधर्मिणीं गोघ्नीं गोघ्नरूपे समादर्य , स्ववेश्मनि प्रवेश्य , स्वासने संस्थाप्य , स्वपात्रे परिषेव्य , यः सिद्धान्नं संभोजयति तस्य कथं न संसर्गदोषः ? अनार्युष्टे सति तन्महानसे कथमस्माकं तेन सह सहभोजित्वम् ? यः लोकविरुद्धमाचर्य , सनातनधर्ममर्यादामुलङ्घितवान् तस्य कथं नाम ब्राह्मणत्वम् ? वेदोक्तविधिवाक्याद्वभिचर्य , स्मृत्युक्तसदाचारसरणेः संस्खल्य , परम्परागतपरिपाटीं प्रत्रोट्य स व्रात्यत्वमुपगतोऽतएव सर्वस्मात् सामाजिककर्मणो वहिष्कार्य इति मे सिद्धान्तः। वर्त्ततेऽत्र कोऽपि सन्देहः ? तस्य प्रायश्चित्तार्हत्वे कोऽप्याक्षेपश्चेत् कस्मिंश्चिच्छङ्काच्छन्नचेतसि तर्हि उद्गीर्यताम्; प्रमाणवचनञ्च्वोद्धाट्यताम्।"

एहि प्रकारें सिंहगर्जन करैत ज्योतिषीजी पूर्वपक्ष स्थापित कैलन्हि। चारु कात सॅं 'साधु साधु' उच्चरित होमय लागल। कोनो प्रतिपक्षी कैं उत्तरपक्ष करबाक साहस नहि पड़लैन्ह। पं०

नमोनाथ झा किछु गोङियाय चाहलन्हि, किन्तु खट्टर चौधरी डाँटि कऽ कहलथिन्ह - दूर जी ! आब की बाजब ? अहाँ कैं मन होय त सागभात करू गऽ। हमरा हमरा लोकनि भटमेर नहि कऽ सकै छी।

अन्ततोगत्वा सर्वसम्मति सँ निर्णय भेल जे 'लाल' कैं बारि देल जाइन्ह। जा घर-घराएन 'पतिया' नहि करथि ता समाज नहि उठबैन्ह।

अतएव जखन लालकाकीक बैन बँटाय गेलैन्ह त केओ नहि रखलकैन्ह। दहीक स्थान मे उज्जर 'चीज' देखि घोल उड़ि गेल जे अंडाक गुद्दी सँ लालकाकी सभ कैं भटकाबय चाहै छथि। बैन देखि सभ आँगन मे किछु ने किछु व्यंग्यपूर्ण आक्षेप भेल।

ज्योतिषिआइन बजलीह - हम सत्तरि वर्षक भेलहुँ। दही-माछ देखैत-देखैत केश पाकि गेल। तों आजुक नेना भऽ कऽ हमरा परतारय आएल छह ! जौं काशी मे फच्च दऽ फुटैत नहि देखने रहितिऐक त नहियों चिन्हितिऐक। जाह , जाह ! जखन एतेक दिन निमहि गेल त आब मरक बेरि आब ई की छूबूगऽ ?

पलटीक माय बजलीह - मेम सँ छुआएल एहन महाप्रसाद फेर कतय पबै जैतीह ? अपनहि लोकनि भरि पेट खाइ जैहथि।

भखराइनवाली कहलथिन्ह-विलायती बैन खैबाक हेतु मुँहो विलायती चाही। हमरा लोकनि कैं ओहन मुँह कहाँ?

परिहारपुरवाली कहलथिन्ह-जौं सभ दिन भेटैत त खैबो करितहुँ। एक दिन खातिर की जाति दियऽ?

पुहुपरानी बजलीह-कनेयाँ अपने जा कऽ वर कैं द्विरागमन करा अनलथिन्ह तखन दही-माछ बँटाइ अछि! हुनका त ऐहबक फर बाँटक चाहिऐन्ह।

आवेशरानी नहूँ-नहूँ बजलीह-हम त राखि लितहुँ, लेकिन दस लोक सँ फराक भऽ कऽ कोना-रहब?

एवं प्रकारें टीका-टिप्पणीक संग सभ आङ्गन सँ बैन फिरता आएल।

मेम साहिबा त अपन 'डेरा' कूच कैलन्हि, लेकिन 'डंडा' भोलानाथक माथ पर बजरलैन्ह। भाइबन्धुक संगे-संग पौनियो पसारी छोड़ि देलकैन्ह। लालकाकीक रंग उतरि गेलैन्ह। मिसेज बी. दाइ' अपन बिदाइ बिसरि गेलीह और सी० सी० क 'स्पिरिट' उड़ि गेलैन्ह।

जखन लाल ऐलाह त हालचाल बूझि सभ ताल बिसरि गेलाह। ओ आब लाल पानक बादशाह सँ स्याह पानक गुलाम भेल छलाह। 'बटुको' अपैत भऽ गेलथिन्ह। 'कंटीर' 'कनकीट' भऽ गेलाह।

लालक प्रार्थना पर गामक ठाकुरबाड़ी मे सभा बैसल। पंच परमेश्वरक फैसला भेलैन्ह से भोलानाथ तुलसी-ताप लऽ कऽ शपथ खाथु जे मेमक संपर्क सँ सर्वदा बाँचल छथि। तखन लोकापवादक प्रक्षालनार्थ सभ बर्तन-बासन कै फैकि सम्पूर्ण घर-आङन कै गोबर-माटि सँ नीपि, तिल-कुश-गंगाजल सॅं सिक्त करय पड़तैन्ह।

लाल हाथ जोडि कहलथिन्ह - हमरा सभटा शिरोधार्य अछि।'जाति गंगा गरीयसी क आज्ञाक विरुद्ध के जा सकै अछि ? आब जाहि सॅं हम उत्तीर्ण होइ से अहीं लोकनिक हाथ मे अछि।

घर आबि, स्नानादि कऽ, जनउ बदलि, एक सहस्र गायत्री जपि, पञ्चगव्यादि पान कय लाल शुद्ध भेलाह। औरो और लोक शुद्ध भेलाह। केवल सी० सी० मिश्र गोमूत्र पीब अस्वीकार कऽ देलथिन्ह। तैं हुनका चाय मे मिला कऽ देल गेलैन्ह। और गोबर मे पुदीना-बेसन फेंटि कऽ 'चौप' बना देल गेलैन्ह।

आब लाल 'मांजनि' (मान्य जन) लोकनि सॅं आज्ञा लऽ भोज-भातक तैयारी मे लगलाह। किऐक त सिद्धान्तक परिपाकक हेतु समाज मे सिद्धान्नक परिपाक होयब आवश्यक।

आइ लालक आङ्गन मे छौ सात टा 'तिउर' खुनल गेल छैन्ह। ताहि पर बड़का-बड़का खाँखर सभ चढ़ल अछि। कोनो मे चाउर, कोनो मे दालि, खदकि रहल अछि। पाकमल्ल लोकनि काछ भिड़ने अपन-अपन मोर्चा पर डटल छथि। केओ टोकना मे बाँसक काँड़ी लगा कऽ माँड पसा रहल छथि। केओ खखनहर मे झाँझ सॅं भात छाँकि रहल छथि। केओ बड़का दलिरन्हा चढौने छथि। सभक देह घामे-पसीने तर-बतर भेल छैन्ह किन्तु हाथ अपैत रहने पोछथु कोना ? एक पाककर्त्ताक ललाटक स्वेदविन्दु नासाग्र पर आबि मोतीक स्वरुप धारण कैलकैन्ह। किन्तु जहिना एक आँजुर आमिल उझीलक हेतु निहुड़लाह कि ओ मोती टप दऽ खदकैत दालि मे जा विलीन भऽ गेलैन्ह।

ओसारा पर करछुक टनटन संग चूड़ीक झनझन स्वर व्यञ्जित कैरछ जे व्यञ्जन वर्ग महिलाश्रित अछि।

भंडार घर मे धूरेक केराक पात पर भालसरी फूल सन भातक ढेरी लागल अछि। भोज्यान्नक सौरभ सॅं सम्पूर्ण भवन गमगम कऽ रहल अछि।

पहर राति बितैत-बितैत लालक दलान पर समवेता-बुभुक्षवः भरि गेलथिन्ह।

एहि दल मे दन्तहीन नेना सँ लय दन्तहीन वृद्ध पर्यन्त सम्मिलित छलाह। भिन्न-भिन्न आकार प्रकारक लोटा सँ दलानक कँगनी भरि गेल।

लाल आबि पुछारी कैलथिन्ह - की ? आब त सभ केओ आबि गेलाह ?

कंटीर कहलथिन्ह - तीन गोटे नहि आयल छथि - बुचकुन चौधरी , खट्टर चौधरी और ढोढ़ाइ झा।

ढोढ़ाइ झाक महिष एक बेरि भोलानाथक खढ़ौर मे पड़ि गेल रहैन्ह जकरा भोलानाथ फाटक मे दबा देने रहथिन्ह। फलस्वरुप ढोढ़ाइ झा कैं अढ़ाइ टका दण्ड लागल रहैन्ह। एहि खीस सँ ओ खाय नहि ऐलाह।

खट्टर चौधरी कैं मुकुन्द सँ मुकदमा चलैत छलैन्ह। ताहि मे भोलानाथ मुकुन्दक दिस सँ गवाही देने रहथिन्ह। खट्टर चौधरी हारि गेलाह। आब ओकर कुन्नह भोजक बेरि सधाबय लगलथिन्ह।

बुचकुन चौधरी कैं कोनो टा देखार कारण नहि रहैन्ह। अतएव ओ खट्टर चौधरीक ईड़ धऽ कऽ रहि गेलाह।

लालकका भोलानाथ कैं कहलथिन्ह - तों अपने जा कऽ मना लबहुन। की औ ज्योतिषीजी कका ?

ज्योतिषीजी कहलथिन्ह - हँ, हँ, अवश्य।

भोलानाथ झा झारखंडी कैं संग लऽ कऽ मनौअल मे गेलाह। एहि स्वर्ण सुयोग सँ लाभ उठबैत कतिपय बुभुक्षु कान पर जनउ चढ़ा, हाथ मे लोटा लेलन्हि और अपना पाकस्थली कैं ताहि प्रकारें शुद्ध कऽ ऐलाह जेना मुमुक्षु अपना अन्तःकरण कैं शुद्ध करैत छथि।

एक घंटाक बाद भोलानाथ प्रत्यागत भेलाह। ढोढ़ाइ झा त आबि गेलथिन्ह , किन्तु खट्टर चौधरी और बुचकुन चौधरी कोनो तरहें नहि मानलथिन्ह।

लालकका ज्योतिषीजी दिस ताकि पुछलथिन्ह - आब की होबक चाही ?

ज्योतिषीजी कहलथिन्ह - एक बेरि अपने जा कऽ देखि अबियौन्ह।

लालकका अपने लालटेन लय बिदा भेलाह। निमन्त्रित ब्राह्मण लोकनि कैं भोजनशक्तिक उपयोग करबा मे पुनः व्यवधान भऽ गेलैन्ह। कतेको गोटा मनहि मन बुचकुन चौधरी कैं ब्रह्मशाप देबय लगलथिन्ह। छोट-छोट नेना सभ औंघाय लागि गेल।

डेढ घंटाक बाद लालकका खट्टर चौधरी कैं नेने पहुँचलाह। किन्तु बुचकुन चौधरी असक्क होयबाक लाथ कय नहि ऐलथिन्ह।

एक बजे रातिक अन्दाज घरबैया कहलथिन्ह-'तखन आब बिझौ होऔक!

'बिझौ' शब्द सुनितहि बिजलीक लहरि दौड़ि गेल। सभ केओ साक्षांक्ष भऽ अपन-अपन लोटा हाथ मे उठौलन्हि। जनिक नेना सूति रहल रहैन्ह से जोर सँ नेनाक नाक मलि निंद तोड़ि देलथिन्ह। भक्तदेवक विशेष भक्त लोकनि पहिनहि पैर धो माँझठाम बीडी पर जा बैसलाह। वयोवृद्ध लोकनि झटकलो उत्तर पछुआ गेलाह , तैं कतेक गोटा कैं ऐठकटार लग वैसय पडलैन्ह। ज्योतिषीजी कैं भट्टा मे वैसव स्वीकार नहि भेलैन्ह , तैं दुरुखाक मुँह पर आसन ओछा देल गेलैन्ह।

आब बारीक गण अपन-अपन चुमकी देखाबय लगलाह। भोजनार्थी लोकनि अपन-अपन सुचिक्कण कदली थंभक पात कैं सिक्त कय भात सरियाबऽ लगलाह। ताहि पर आमिल देल राहड़िक दालि परसल गेल। तदन्तर सजमनि , कदीमा, अदौरी-भाटा, आलू-परोर, साग, तिलौरी, पापड़, तिलक चटनी और तेतरिक खटमिट्ठी परसाय लागल। तत्पश्चात आम्रपल्लव लऽ कऽ घृत परसैला उत्तर ज्योतिषीजी कहलथिन्ह - आब होउ ! 'पवित्री' पड़ि गेल। नैवेद्य दैत जाउ।

आब भोजनक सपासप ध्वनि एक ताल सँ बहराय लागि गेल।

थोड़ेक कालक उपरान्त बड़ी उठल।

पं० नमोनाथ झा दू-चारि टा चाखि कऽ बजलाह - बाह ब ब ब ब बड़ी ब ब ब बड्ड व व विलक्षण ब ब ब ब बनलैक अछि।

ज्योतिषीकका समर्थन करैत कहलथिन्ह - हँ बेश मुलायम छैक। घाटि खूब कऽ फेनल गेलैक अछि। झोरो बेश खटतुरुस भेलैक अछि। किन्तु हमरा केराव बाँतर करत तैं खाइत डर होइ अछि।

पलटू झा जीभ चटपटबैत बजलाह - तेतरीक खटमिट्ठी बड़ दिव भेलैक अछि। खूब चटकार। एहि मे जीरक स्वाद अपूर्व लगैत छैक।

लाल बजलाह - हौ, खटमिट्ठी एक बेरि और उठाबह।

किछु कालक उअपरान्त दही-चीनी उठाओल गेल।

ढोढ़ाइ झा कहलथिन्ह - दही किछु अम्मत भऽ गेलैक अछि। कनेक नोन मँगाउ।

बटुकजी बजलाह - आइ चार रोज के पौरल है - खट्टा केङत कऽ न होयत ? ओह पर बथनिया सभ भैंसी के ....

लाल हुनका चुप करैत बजलाह - हौ कंटीर, रतुका पौरल मटकूर उठाबह।

ज्योतिषीजी कहलथिन्ह - हाँ हाँ ! चीनी फराके सँ परसह। जाह ! दही क ऊपरे मे धऽ देलह। बारीक पक्का नहि भेलाहै।

अन्त मे सकरौड़ी उठल। भोलानाथ बाटी लऽ कऽ पातेपात परसय लगलाह। किछु अधिक चतुर व्यक्ति गिलास वा लोटा मे सकरौड़ी पीबय लगलाह।

बौकू झा मौन-भोजन करैत छलाह। हुनका बगल मे एक सात वर्षक नेना बैसल छलैन्ह। सकरौड़ी परसाय काल ओकरा पियास लागि गेलैक। जहिना लोटा उठा कऽ मुँह मे लगौलकैन्ह तहिना बौकू झा ओकरा गाल मे बामा हाथें एक तबड़ाक लगाओल। नेनाक मुँह सँ लोटा छूटि गेलैक। बौकू झा पानि फेकि जा लोटा अजबारथि ता बारीक पाते पर परसि आगाव बढ़ि गेलैन्ह। बौकू झा पित्तें औंट भऽ गेलाह। किन्तु बाजथु कोना ? ओ अपन मृक क्रोध नेना पर उतारय लगलाह। मुँह दूसि इशारा सँ कहय लगलथिन्ह - आब पीबि ले सकरौड़ी ! अभागल ! भोजो मे एलाह त घट-घट पानिए पीबय लगलाह। पानि त अपनो इनार मे भेटितौक। कर्मनेढ़ा ! मुँह ने देखिऔन्ह केहन सुथनी सन बनौने छथि !

ताबत मुकुन्द और झारखंडी मे सकरौड़ी पिउबाक बाजी लागि गेलैन्ह। घरबैयाक छाती धरकय लगलैन्ह। भोलानाथ ऊपर सँ सकरौड़ी ढारने जाथिन्ह और झारखंडी चुर ओरने घट-घट करैत पिउने जाथि। एक्के बेरि झारखंडीक कंठ मे एतेक रासे सकरौड़ी चलि गेलैन्ह जे ओ उजबुजा गेलाह। कंठनलिका बन्द भऽ गेने दूनू आँखि उनटि गेलैन्ह और नाक दऽ सकरौड़ी बहय लगलैन्ह। आब गर्द पड़ल-पानि लाउ, पानि लाउ ! झारखंडी पर छिटिऔन्ह।

भोलानाथ एकाएक पानि लाबक हेतु जे घुमलाह से तलमला कऽ पातिल नेनहि मुकुन्दक पात पर खसलाह। आब सकरौड़ीक नदी मुकुन्दक पलथी तर दऽ बहय लगलैन्ह।

लालकका अपने दौड़ि कऽ ऐलाह और पानिक छिटका देबय लगलथिन्ह। किछु कालक उपरान्त झारखंडीक जी ओकैलैन्ह और गरी-किशमिश सहित खैलहा सकरौड़ी पाते पर बोकरि देलन्हि।

होश भेला पर झारखंडी आँखि तकलैन्ह और हाथक इशारा सँ कहलथिन्ह - केवल सरकि गेल छल। कोनो चिन्ता नहि।

झारखंडीक इच्छा रहैन्ह जे एक लोटा सकरौड़ी पान कैल जाय। किन्तु तावत सभक उठऽ क हुर्र भऽ गेल।

----===----

12. समदाउनि

भोजक प्राते भेने द्विरागमनक विचार होमय लागल। भोलानाथ और कंटीर वस्तुजात कीनक हेतु दरिभंगा बिदा भेलाह।

चिट्ठा देखि बुच्चिदाइ माय कैं कहलथिन्ह - देहाती गहना त हम एकोटा पहिरबौक नहि। पौती- पेटारक हमरा कोन काज पड़त ? और तेल-फुलेल, मसाला; तिलौरी कि 'बनारस' सॅं बढ़ियाँ एहिठाम भेटतौक जे हमरा संग कऽ देबैं ? एहि सॅं दामे जोड़ि कऽ दऽ दे। हम ओतय अपना पसन्द सॅं बनारसी साड़ी और बर्त्तन सभ कीनि लेब।

लालकाकी बेटीक बात सूनि गुम्म रहि गेलीह। एँ गे ! दुइए आखर अँगरेजी पढ़िकऽ तोरा एतेक बुद्धि भऽ गेलौक ! भरि जन्म एहीठाम रहलैं से सभटा बिसरि गेलहीक ? लेकिन कतबो अँगरेजी पढ़ि जैबें तैयो बेटी त हमरे कहैबें। जे सदाय सॅं भऽ एलैक अछि से तोरा मे कोना नहि होयतौक ?

बुच्चीदाइ - तों त देहाती जकाँ बजै छैं। अँगरेजी मे एहन बात कैं नानसेन्स (वाहियात) कहै छैक।

ला० - गै बौआ ! त आब हमरो अँगरेजी सिखा दे। और अपना बापो कै एक घंटा कऽ पढ़ा देल करहुन !

एतबहि मे एक झुण्ड आइ माइ कैं अबैत देखि लालकाकी कहलथिन्ह - देख , सभक गर धऽ कऽ कानय पड़तौक। तैयार भऽ जाही।

बुच्चीदाइ कहलथिन्ह - ई असभ्यता त हमरा बुतें नहि हैतौक जे 'कोरस' मे चिचिया कऽ कनबौक। हॅं, देखैबाक होउ त अड़ाॅचिक तेल आँखि मे लगा दे जे नोर चुबैत रहत।

लालकाकी बेटीक मुँह झपैत , आइमाइक स्वागत करय गेलीह। ता बटुकजी आबि कहलथिन्ह - हम आठ गो कहरिया ठीक कऽ ऐली हऽ। आठ गो रुपैया लेत और सभ कोनी के सीधा देबे के पड़त। आब ओहार के बन्दोवस्त मे जाइ छी।

ई सूनि सी० सी० मिश्र हुनका बजा कऽ बुझाबय लगलथिन्ह - छौ माइल सकरी साइकिल सॅं आधा घंटाक रास्ता। ओहि खातिर एतेक तुल-फजूल किएक कऽ रहल छी ? बीसम सताब्दी मे समय और मनुष्यक मूल्य एतेक कम नहि छैक एगोटा आठ मनुष्यक माथ पर लदा कऽ चलय। और वायु प्रकाश तथा प्राकृतिक दृश्य सॅं अहाँ कैं कोन शत्रुता अछि जे 'ओहार' क खोज मे बिदा भेलहुँ अछि ?

बटुकजी कैं सभटा बात त बूझय मे नहि ऐलन्हि। लाल कैं कहय गेलथिन्ह - गुरुजी ! ओहार त दमाद रोकै छथ। कहै छथ जे साइकिले पर विदागरी होयत।

लालक क्रोधाग्नि मे जेना किरासन तेल पड़ि गेलैन्ह। बजलाह - अंग्रेजी पढ़ि कऽ हुनक बुद्धि भ्रष्ट भऽ गेलैन्ह अछि। तोंहू एहन बूड़ि छह जे ई सभ समाद हमरा कहऽ अबै छह। जाह ! कहुन गऽ जे ई सभ बात एहिठाम नहि चलतैन्ह। एक बेर त पाग खसा देलन्हि , आब कि नाको कटबौताह ?

बटुकजी सी० सी० मिश्र कैं जा कऽ कहलथिन्ह - गुरुजी खिसियाइ छथ जे साइकिल पर चढ़ला से नाक-कान कटा जतैन।

सी० सी० मिश्र कनेक सोचि कऽ कहलथिन्ह - नवसिखुआ कैं नाक-कानक डर रहै छैक। अहाँक बहिन त आब खूब नीक जकाँ सीखि गेली अछि। हँ , दू टा बाइक इन्तिजाम होबक चाही।

बटुकजी अपना गुरुजीक समक्ष जा कऽ निवेदन कैलथिन्ह - लिउ। आब दोसरे ताल लागल। ऊ कहै छथ जे आब दूगो 'बाई' के इन्तिजाम होबे के चाही। लेकिन ई बनारस है कि दू गो भाइ चार गो बाईजी बोलैला से पहुँच जैतन !

लालक धधकैत क्रोधाग्नि मे जेना भरलो बोतल स्पिरिट उझिला गेलैन्ह। बटुकजी पर जोर सॅं खिसियाय लगलथिन्ह - तों गदहा आदमी छह। जाह। भागह एहिठाम सॅं !

बटुकजी भनभनाइत ओहिठाम सॅं बिदा भेलाह - ले बलैया ! देखू धन्धा ! उलटे हमरे डाँटे लगलन ! दामाद के कोह हमरे पर सधवै छथ। एह घर मे आब अजबे हाल सभ देखे मे अबैयऽ। इहाँ हमर पढ़नाइ न उजिया सकैयऽ।

ई कहैत बटुकजी अपन 'शीघ्रबोध'क गत्ता सरियाबऽ लगलाह। 'द्विरागमन' प्रकरणक श्लोक कैं रटब आब व्यर्थ बूझि ओ यत्नपूर्वक पुस्तक कैं बस्ता मे बान्हि चक्का पर राखि देलन्हि।

बटुकजी कैं बिरुझल जकाँ देखि लाल कहलथिन्ह - तोरा दूनू सार-बहनोइ मे जे हँसी-ठठ्ठा होइ छौह से हमरा की कहऽ अबै छह ? बहुत पाठ क्षति भऽ गेल छौह। आवृत्ति त सुनाबह।

आब बटुकजी गोङियाय लगलाह -

'डेवत्युत्तड़ रोहिणी मिडिग मग्धा ....मिडिग मग्धा...ऊँ ऊँ ऊँ मिडिग मग्धा....

एवं प्रकारें 'मघा' 'मघा' करैत करैत बटुकजीक स्मरणशक्ति कैं बघा लागि गेलैन्ह। कतबो मस्तिष्क-मंथन कैने अग्रिम चरणरुपी रत्न नहि बहरा सकलैन्ह। एहने संकटावस्थाक समय बटुकजीक भाग्य सॅं लालक वयोवृद्ध ससुर पं० धर्मानन्द शास्त्री पहुँचि गेलथिन्ह। अत्यन्त धर्मनिष्ठ, आचारी ओ तपस्वी होयबाक कारण ओ 'महात्माजी' कहबैत छलाह। हुनका देखितहि लाल अभ्यर्थना करक हेतु उठि कऽ ठाढ़ भेलथिन्ह। बटुकजी कै उसास भेटि गेलैन्ह। ओ 'मूलानुराधा'क पौकी छोड़बैत फुर्ती सॅं समाद देबक हेतु आङ्गन दौड़लाह।

लालकाकी एतेक दिन पर हरिद्वार सॅं आएल अपन पिता कैं देखबाक हेतु दौड़लीह। आशीर्वाद दैत कहलथिन्ह - हमरा बड़ जोर भूख लागल अछि। पहिने भोजन कराबह। कोनो अडवाल करबाक काज नहि। हमरा आइ अनोना अछि। अछिंजल मे सिंहाड़ाक आँटा सानि कय दस टा सोहारी छानि लय। थोड़ेक हलुआ बना लय। मखानक खीर संग खा लेब। पानि पीबक हेतु केरा-परोरक अनोर तरकारी दऽ दिहऽ। बेशी मन होऔ त कोनो मधुरो बना लिहऽ। विन्यास करबाक कोन काज ? जा, झट द ठाँव-बाट कराबह।'

लालकाकी हड़बड़ा कऽ विदा भेलीह। तखन महात्मा जी हॅंसि कऽ कहलथिन्ह- गै बताहि! हँसि कैलिऔक अछि। एखन हमरा सन्ध्या-तर्पण, पूजा-पाठ मे तीन-चारि घंटा लागत। तखन किछु फलाहार करबौक।

महात्माजी स्पष्टवक्ता तथा विनोदी प्रकृतिक छलाह।

सी० सी० मिश्रक परिचय पाबि ओ पुछलथिन्ह- 'अहाँ अपन वेश-भूषा छोड़ि विलायत पोशाक किऐक पहिरने छी ? विलायतक साहेब त अपना देश सॅं हजारो कोस दूर रहि कऽ अपन पतलून छोडि अहाँक धोती नहि पहिरैत अछि , और अहाँ भारतीय सन्तान भऽ अपन देश मे अपन धोती छोड़ि पतलून पहिरैत छी! अहाँ पाग कै लज्जा तथा टोप कै गौरवक विषय बुझै छी। ई लज्जाक विषय थिक वा गौरवक?

सी० सी० मिश्र चुप्प!

महात्माजी पुनः कहय लगलथिन्ह- 'अहाँ आर्यसभ्यता क सम्पादक छि अथवा व्यापादक ? अहीं सन-सन व्यक्ति आर्यावर्तक 'आचार' कैं विलायती सिरका मे फुला अँचार बना दैत छथि। अपन भाषा-भूषा भोजन-भाव कैं छोड़ि साहेबक नकल पर दौड़ै छथि और ताही मे महत्त्व बुझै छथि। कतौक व्यक्ति स्वयं सिंहचर्मावृत रासभ बनि स्त्रीओ कैं नीलवर्ण श्रृगाली

बनाबक चाहै छथि और स्त्रीओक मुँह सँ मातृभाषाक स्थान मे पातृभाषा सुनक चाहै छथि। ई दासत्व बुद्धिक पराकाष्ठा थिक।

सी० सी० मिश्र चुप्प!

शास्त्रीजी फेरि बजलाह - अहाँ शिक्षिता स्त्री ककरा कहै छिऐक ? यदि भारतीय स्त्रीक हेतु अँगरेजी मे गप्प केनाइ वा अँगरेजी फैशन मे रहनाइ शिक्षिता होयबाक प्रमाण मानल जाय त मेमोक हेतु मिथिला-भाषा मे गप्प केनाइ वा मैथिल नारी जकाँ रहनाइ शिक्षाक मापदण्ड किएक नहि मानल जाय ? और राजभाषा सीखक हेतु जखन एतेक प्रजा मौजूदे छथि त प्रजावतीक नहिए सिखने कोन हानि ?

सी० सी० मिश्र चुप्प।

महात्माजी पुनः बजलाह - हमरा लोकनि गृहिणीक हेतु शिक्षाक अर्थ बुझै छी कर्त्तव्य-शिक्षा जे स्त्री अनुशासनक महत्व बूझय , मर्यादा पालन मे गौरव मानय , कर्त्तव्यक वेदी पर भोगलिप्साक बलिदान करय, वैह यथार्थतः शिक्षिता थिक। सीताजी अपना आदर्श पर सती भेलीह, तैं हम हुनकर पूजा करैत छिऐन्ह। यदि ओ लंकाक बाजब नाचब सीखि कऽ अशोकवाटिका मे टहलितथि त शुर्पणखा सँ बेशी महत्व नहि पबितथि। यथार्थ शिक्षा ओ थिक जे आत्मा मे धर्म-ज्ञानक प्रकाश जगा जीवन कैं पवित्र और उच्च बनाबय। भारत-भूमि मे भारतीय ललनाक सर्वोच्च आदर्श थिकीह मैथिली, जनिका समक्ष समस्त संसारक स्त्री वर्ग नतमस्तक भऽ जाइ छथि। ओहन श्रेष्ठ आदर्श कैं बिसरि अहाँ भारतीय कन्या कैं मेम जकाँ नचाबक चाहै छी ? पाश्चात्य भोगवादक मृगमरीचिका पाछाँ दौड़ैत-दौड़ैत स्त्रीओ कैं दौड़ाबय चाहै छी ? यूरोपक बुद्धिवाद और उपयोगितावाद अन्ततोगत्वा भारतक अध्यात्मवाद मे आबि कऽ शान्ति ढूँढ़त से अहाँ देखि लेब। विलायती काचक चमक-दमक पर लट्टू भऽ अहाँ अपना घरक सोन कैं टलहा बूझि फेंकि रहल छी ! ई केहन भारी व्यामोह थीक ?

सी० सी० मिश्र चुप्प !

महात्माजी - केवल अहीं टाक दोष नहि थिक। एखन प्रकृति-नटी मादक अँगरेजी वेष धारण कय अहाँ सन-सन अनेको पुरुष कैं लट्टू जकाँ नचा रहल छथि। सम्प्रति आदिशक्ति पुरुषक गोष्ठी मे रंगविरंगी वेष-भूषाक छटा देखा, हँसि-हँसि अँगरेजी मे बाजि टेबुल पर छुरी-काँटा सँ पावरोटी कटैत कतेको हृदय कतरि दैत छथि। महामायाक एहि छाया पर अहाँ सन-सन व्यक्ति मोहित भऽ काया पर्यन्त अर्पित करय लागि जाइ छथि। किन्तु ज्ञानी पुरुष शान्त भाव सँ सभ लीला देखि एक बेरि मुस्कुरा दैत छथि ; अहाँ जकाँ नचै छथि नहि। ओ तरह-तरहक नाच कैं निःसार बूझि सृष्टिक मूल तत्व पर ध्यान दऽ प्रजापतिक आदेश पालन करै छथि।

हमरा लोकनि त स्त्रीक योग्यताक अर्थ बुझै छी सत्सन्तानोत्पादनक योग्यता। "पुत्रार्थ क्रियते भार्या।" एहि सिद्धान्त पर अहाँ सन-सन अङ्गरेजिया हँसथु , किन्तु घुरि फिरि कऽ अंत मे फेरि ओही पर आबऽ पड़तैन्ह। नारीक मुख्यकार्य पुत्र-प्रसविनी होयबाक छैन्ह , पुस्तक-प्रसविनी होयबाक नहि। पुरुषक देखाउस कय ओ कोनो-कोनो युग मे लिखनाइ पढ़नाइ सीखि ज्ञान-विज्ञान उपार्जन कऽ लेथु , किन्तु ओ योग्यता विकास-क्रम मे क्षणिक फेन मात्र थिक, असली प्रवाहक श्रोत नहि। कठोर विज्ञानक दुरूह भार वहन करबाक हेतु स्त्रीक कोमल मस्तिष्क नहि बनल छैन्ह। जंगल , पहाड़ और बादशाहक नाम रटा , रेखागणित तथा बीजगणितक सूत्र कंठस्थ करा और विदेशी भाषाक शब्दकोष मुखस्थ करा , हम नारीक ओ बहुमूल्य समय नष्ट नहि करक चाहैत छिऐन्ह जाहि मे ओ सुकन्या , सुपत्नी वा सुमाता होयबाक संस्कार कैं पुष्ट कऽ अपन नारी जीवन कैं सार्थक कऽ सकै छथि। सीताजी गणित वा पदार्थ विज्ञान नहि पढ़ने छलीह। परन्तु के हुनका अशिक्षिता कहबाक धृष्टता कऽ सकै अछि ? भिन्न-भिन्न विज्ञानक संकलन तथा उपयोग सांसारिक जीवन युद्धक हेतु जीवनक अन्तिम ध्येय नहि, किन्तु उपकरण मात्र थिक और तदर्थ पुरुष लोकनि छथिए। कोमलांगी कैं और और कोमल गुणक विकास करऽ दिऔन्ह जाहि सँ माधुर्य प्रदान करतीह। यदि हुनको अपने सन कठोर बना देबैन्ह त जीवनक रस सुखा जाएत। अहाँ अपने खेत जोतू , हुनका फलक आनन्द दिऔन्ह। अपने साइकिल दौड़ाउ , हुनका महफाक आदर दिऔन्ह। ओ सभ सँ पुनीत और महत्वपूर्ण कार्य सम्पादन करै छथि - "मानव-सृष्टि"। हुनकर समुचित आदर करब सीखू तखन पुरुषार्थ। स्त्री सँ पुरुषवत कार्य कराएब स्त्रैणताक लक्षण थिक।

सी० सी० मिश्र सोचय लगलाह।

महात्माजी - महिलाक यथार्थ सम्मान नकली शिष्टाचार सँ नहि होइत छैक। परपुरुष सँ करमर्दन कैं हम सभ्यताक चिह्न नहि , बल्कि असभ्यताक चिह्न बुझै छी। स्त्रीक सहशिक्षा तथा स्वतंत्रताक आंदोलन कैं हम अधिकांशतः पुरुषक उद्दाम लालसाक छद्मवेश मात्र बुझै छी। स्त्रीक वास्तविक शिक्षा घर मे होइ छैक। बाहरी चमक-दमक क शान सिखा , तथा स्वच्छन्दताक मादक नशा पिया हम ओकरा बनबैत नहि , बिगाड़ैत छिऐक। यथार्थ शिक्षा ओ थिक जे भोगवृत्ति कैं उदीप्त नहि कय त्यागवृत्ति कैं प्रोत्साहित करय। अहाँ पहिने स्वतः शिक्षित होउ तखन स्त्री-शिक्षाक असली अर्थ बुझबैक।

महात्माजी उठि कऽ पूजाक आसन पर गेलाह। सी० सी० मिश्र मनहिंमन विवेचना करय लगलाह - आधुनिक प्रगतिशील युगक क्रान्तिकारी विचार और एहि वृद्धक प्राचीन स्सत्वि आदर्श मे कतेक अन्तर अछि ? एक मदिराक समान मनोहर , दोसर जलक समान शीतल। एहि दूनू मे सत्य कोन ?

सी० सी० मिश्र मनहि मन मिस बिजली तथा महात्माजीक व्यक्तित्वक तुलना करय लगलाह। एक चञ्चल निर्झरिणी , दोसर शान्त महासागर। एक रजोगुणक मूर्त्ति , दोसर सत्त्वगुणक अवतार। एक देहाभिमानी सुखाराधिका, दोसर देह और सुख कैं तुच्छ बूझि तपस्यामे निरत। मिश्रजी जतेक अधिक चिन्तन करय लगलाह , ततेक अधिक महात्माजीक प्रति हुनक श्रद्धा बढ़य लगलैन्ह।

बुच्चीदाइ तुलसी चौरा लग माय कै कहैत रहथि- "आङन मे ई तुलसी की रोपने छैं ? दू-चारिटा

'क्रोटन' क गमला मङा ले।

ता सी० सी० मिश्र आङ्गन मे पहुँचलाह। उपयुक्त वाक्य सुनि एक चिन्ता मन मे उत्पन्न भऽ गेलैन्ह। बड़ी काल धरि सोचैत रहलाह। अन्त मे किछु निश्चय कैलन्हि।

बटुकजी क बजा कय कहलथिन्ह-अहाँ जा कऽ महफा ओ कहार लऽ आउ।

बटुकजी आश्चर्य चकित भऽ बजलाह-ले बलैया! देखू धंधा! अपनही रोकियो देलन और आब फेन लाबहू कहै छथ! अहाँ त बोलैत रही जे साइकिले पर जाइ जाएब!

सी० सी० मिश्र कहलथिन्ह-हम त साइकिल पर जाएब , लेकिन अहाँक बहिन विना पर्दाक कोना कऽ जैतीह?

बटुकजी कैं ई नहि बूझि पड़लैन्ह जे बहिनोइ यथार्थ कहै छथि वा हँसी करै छथि। ओ मन मे सोचय लगलाह-ई त अजगूते बात आइ हिनका मुँह से सुनाइ पड़ल। जाने कैसे पच्छिम मे सूरज उग गेलन!

द्विरागमनक वस्तुजात आबि गेल। लालकाकी दुइए टा काज आब करय लगलीह। पौती साँठब और कानब।

नियत दिन मे दरबाजा पर महफा आबि गेलैन्ह। बुच्चीदाइक नैहर आब छूटय लगलैन्ह। करुण क्रन्दन सँ आङ्गन घर प्रतिध्वनित होबय लागल। आब बुच्ची दाइ कैं एक-एक कऽ बाप , माय, भाइ, बहिन सभक गुण मन पड़य लगलैन्ह।

महात्माजी आङ्गन मे आबि लालकाकी कैं चुप करैत बजलाह-सनातन काल सँ एहिना होइत एलैक अछि। तोंहू त एहिना हमरा घर सँ विदा भेल रहह। केओ सर्वदा एकठाम नहि रहि सकै अछि। सभ सँ सभक बिछोह भेनाइ अवश्यंभावी छैक। यैह संसारक नियम थिकैक। यावत धरि लोक एक ठाम रहै अछि, तावत धरि एक दोसराक मोह रहै छैक। किन्तु कालचक्र ककरो बराबरि एक ठाम नहि रहय दऽ सकै छैक। कतेक कनै जैबह?

बुच्चीदाइ कैं आशीर्वाद दैत कहलथिन्ह-सीता समान होइहऽ। एहि सँ उत्तम आशीर्वाद विवाहिता स्त्रीक हेतु नहि भऽ सकै छैक।

बुच्चीदाइ आँचर सँ हुनका पैरक धूलि हँसोथि माथ मे लगा लेलन्हि। आब हुनका माय-पितिआइन गर लगौने महफा मे चढ़ा देलथिन्ह।

सी० सी० मिश्र चलय काल महात्माजीक चरण छूबि प्रणाम कैलथिन्ह। महात्माजी आशीर्वाद देलथिन्ह-माता चंडी अहाँ कैं सी० सी० सँ चंडीचरण बनाबथु।

तावत लाल कहरिया सभक दिशि ताकि कहलथिन्ह- 'आब मुहूर्त्त बीतल जाइ छैक। महफा उठो।

कहार सभ कान्ह लगौलक। बुच्ची दाइ और जोर सँ बाबू , बाबू कहि आक्रोश करय लागि गेलीह। तावत लाल कनैत-कनैत बजलाह-चुप रहह! मँगा लेबौह।

गाइन दल कनैत-कनैत समदाउनिक करुण स्वर उठा देलन्हि-

"बड़ रे जतन सँ सियाजी कैं पोसलहुँ सेहो रघुवर नेने जाय ! "

----===----